

162-
vyakarana

द्ववत्॥हृतीयादौह्रिगद्ववत्॥यतिगद्वस्यपुथमाद्वितीयथाह्रिग
द्ववत्पुक्रिया॥हृतीयादौसखिगद्ववत्बकव्य॥यतिनसमासेनुव
सखिगद्ववद्वकव्य॥ततः४समासान्तस्यनादथाहवन्ति॥प्रजापतिः
ना॥प्रजापतय॥॥॥स्यादि॥द्विगध्वानिर्यद्विवचनान्तः॥द्विओःति
स्मिन्॥स्यदादंष्ट्रन४स्यादौ॥स्यदादंष्ट्रनकात्राहवतिस्यादौपत्र॥स्य
दादीनांदाद्वर्माहवतिस्यादावितिनिषधत्वागम्बोनहवति॥अओओ॥

विभक्त्यात्तदकात्राहवत्कीवकात्रस्तस्मात्स्यादिपत्रत्वंनास्तिदस्यमस्य
होए

तथाप्यति१

॥दो॥दो॥दववत्॥दात्या॥दात्या॥दात्या॥दया॥दया॥ददो॥विभदाः
नित्यं वद्ववचनान् ॥ ४ ॥ विजृम्भन्ति हि ॥ नृणां उसीत्यकात्रकृतेभ्यः
दग॥ ४ ॥ तुय॥ ४ ॥ तुनु॥ ४ ॥ गिरि॥ ४ ॥ गिरि॥ ४ ॥ गुत्रयद॥ ४ ॥ विभद्यस्यायदादल्ल
रुवति नामिपत्र॥ ४ ॥ दिदं तस्य च वक्त॥ ४ ॥ नामीति दीर्घ॥ ४ ॥ शुक्लान्ननक्त
॥ ४ ॥ तुयात्मा॥ ४ ॥ किलात्स॥ ४ ॥ ४ ॥ विष्णु॥ ४ ॥ अतिकाकापियामुथायघाति॥ ४ ॥ अतिवि
त्मा॥ ४ ॥ प्रियगीर्मा॥ ४ ॥ यत्रमनुयात्मा॥ ४ ॥ मित्यनुलोत्वाहावक्तुनायदादग॥ ४ ॥

२८

अगुस्वग्रह न विरुकि स्वरूप नार्थ ॥ २ ॥

त्यादो नायद॥ कतिगद्वानित्यं वद्ववचनान् ॥ ४ ॥ कतिगद्वारुसगभाल्ग
क्तव्य॥ ४ ॥ लुकि न तन्निमित्तं ॥ ४ ॥ लुकि सति तन्निमित्तं कौर्ष्यं न रुवतीत्यर्थ
॥ ४ ॥ कति॥ ४ ॥ कति॥ ४ ॥ कतिरि॥ ४ ॥ कतिरि॥ ४ ॥ कतिरि॥ ४ ॥ कतिरि॥ ४ ॥ कतीनां
॥ ४ ॥ कतिष्णु॥ ४ ॥ विष्णुवायं स्वरूप॥ ४ ॥ ४ ॥ कात्राक्त॥ ४ ॥ पुल्लिङ्ग॥ ४ ॥ सृष्टीगद्व॥ ४ ॥ आर्द्धता
त्रिपूर्वोत्तरा॥ ४ ॥ धात्रीकात्राकात्रयात्रिपूर्वोरुवत॥ ४ ॥ स्वरूपत्र॥ ४ ॥ पुनः स्वरूप
नग्रहर्षस्वरूपकार्यान्तग्रहर्षस्वरूपकार्यान्तग्रहवृत्त्यर्थ॥ ४ ॥ तस्मादम्

गङ्गा तस्य नङ्गमिह्यादि नरुवति ॥ अगुस्वत्रगधनपत्ययस्वत्रनुवगृसुन
 ॥ ॐ ह्यादो नय रुवति ॥ सुग्री ४ ॥ सुग्रीयो ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीयं ॥ सुग्रीयो ॥
 सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीया ॥ सुग्रीया ॥ सुग्रीरि ४ ॥ सुग्रीय ॥ सुग्रीया ॥ सुग्रीय ४ ॥
 सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीया ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीया ४ ॥ सुग्रीया ॥ सुग्रीयि ॥
 सुग्रीया ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥
 सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥ सुग्रीय ४ ॥

नामक तु युथागः॥ अश्वी॥ यद्वी॥ मकी॥ ऊर्ध्वी॥ पुरुषः॥ १

मवकी॥पनिकी॥विक्री॥२

४॥स्वर्यंउवो॥स्वर्यंउव४॥स्वर्यंउवा॥स्वर्यंउह्या॥स्वर्यंरुहिरिनिह्यादि॥
 सनानीगदस्याविमषादसादोस्वरादोरुविमष४॥००कात्रउच्चा
 नलार्थ४॥धार्मिसर्ग४॥सनानी४॥धोवा॥धारात्रवयवसंथाग
 :पूर्वायस्मादीकात्रादूकात्रात्रासिरादकस्यात्रकसंनस्यकात्र स्वर
 ह्याकात्रस्यत्रयकात्रवकात्रोरुवरा४॥स्वत्रयत्र॥वर्षाह्यूनवृक्ष
 यगिरिकारुगदसूधीगदोवर्क्षयिह्यावाग्रहल्लादियंविबद्धा

॥सिना न्यो॥सिना न्य ४॥सिना न्यो॥सिना न्य ४॥सिना न्य
 ॥सिना नीत्या॥सिना नीहि ४॥सिना न्यादीनां वाभा नूजगभा वका
 व ४॥सिना न्या॥सिना नीना॥सफ भवक वचन सिना नीहि ॐ रि
 हिरा॥आम् ४॥आवका दीवका नी १ दा जारु न स्य ४ न मा
 द ॥आ रु व रि॥आम् नियम ॥अति सूरुं स मूदिता॥अन्यथाः
 निम द्यादि कृ रत्ता वी ल स्य ४ न मा रि व का व ॥केवल स्या म
 नी श द्वा दि कृत त्वा विल न्यते

३१

:युध मंथा ग त ४ न मा न गु ढा दि त्रि ति सूरु वि ता॥सिना न्या॥सिना न्या ४॥सिना
 नीषा॥द सिना नी ४॥नियो॥निय ४॥निय मि त्या दि॥लू ४॥लू वी॥लू व ४॥लू व
 ॥ॐ त्या दि॥वर्षा रु ४॥वर्षा त्वा॥वषा त्व ४॥नर्वयू न रू १ द ४॥ग्रम ली भ द्द
 :सिना नी व र ॥वा र य मी ४॥अ मि वा र य मी वि श ॥सि वा र य मी नि ति ॥दो
 पु वा न य मी ॥अ र्ष ग्र म ली स द्द १ मू व र ॥य व ल्वी॥य व ल्व ४॥रु य ल्व ४॥
 ॐ त्या दि॥अ का ना न् ४ य र्हि ४ पि रु १ द्द ४॥सिना॥अ का ना न् य न स्य मी

यवहग्रहसमस्तसुग्राह्यवर्हमानत्वात्प्राप्तपूर्ववात्प्रवृत्तिकारिकावचनाच्चसुग्राह्यलक्षित्यया
यकीत्याशः। उक्तं चतुर्विंशतमान्यभाष्ये गान्धर्वविशेषवत्त्वान्तरुवदितकारिकावचनात्सुग्राह्यं चेत्

[illegible][illegible]

॥ अथिनिविशेषात्तौ ॥ हे कोष्टो ॥ हे कोष्टारौ ॥ हे कोष्टदः ॥ १

[illegible]

आश्रमसंहितियुगः १

गहिचपत्रा॥ग्री॥गमवो॥गम४॥गवा॥गमह्या॥गमहि४॥गवा॥गमह्या॥गम
ह्य४॥दसिहसात्रस्येत्थकात्रलाप४॥गम४॥गमह्या॥गमह्य४॥गम४॥ग
वा४॥गवा॥गवि॥गवा४॥गम४॥दलो॥दगमवो॥दगमव४॥नर्वसुआग
द४॥ओकात्रान्क४॥पुलिङ्ग४॥लोम४॥रस्यदसादावविमिष४॥सत्रा
दावावादम४॥लो४॥गमवो॥गमव४॥गमवो॥गमव४॥गमव४॥गमवा॥
लोह्या॥लोहि४॥गमवो॥लोह्या॥लोह्य४॥गमव४॥लोह्या॥लो

ह्य॥ ह्रस्व॥ ग्ल॥ वा॥ ग्ल॥ वा॥ ग्ल॥ वा॥ ग्ल॥ वि॥ ग्ल॥ वा॥ ग्ल॥ ओ॥ ह्र॥ (ह्र॥ ओ॥ ह्र॥ ग्ल॥
 वो॥ ह्र॥ ग्ल॥ वा॥ ग्ल॥ रि॥ स्त्र॥ वा॥ ना॥ य॥ नि॥ ह्र॥ ॥ ॥ अ॥ थ॥ स्त्र॥ वा॥ ना॥ मि॥
 लि॥ ज्ञा॥ ॥ पु॥ द॥ र्ध॥ ना॥ ग॥ झ॥ ज॥ वा॥ न॥ दी॥ ल॥ क्की॥ श्री॥ मि॥ ध॥ न॥ र्म॥ नि॥ त॥ थ॥ ह्र॥ ॥ य॥
 न॥ र्ह॥ र्व॥ ध॥ र्मा॥ ता॥ स्त्र॥ वा॥ ओ॥ त्रि॥ पि॥ नो॥ मि॥ यी॥ त॥ रा॥ का॥ वा॥ ना॥ र्गि॥ ना॥ ग॥ द्र॥ ॥ आप॥
 ॥ आव॥ ना॥ त्य॥ त्र॥ स्य॥ ह॥ र्त्वा॥ या॥ ह॥ व॥ ति॥ र्गि॥ ना॥ ओ॥ त्रि॥ ॥ आव॥ ना॥ त्य॥ त्रि॥ ओ॥ त्रि॥
 ता॥ त्रि॥ मा॥ य॥ अ॥ ति॥ ॥ अ॥ ॥ ॥ र्गि॥ ना॥ र्गि॥ ना॥ ॥ धि॥ त्रि॥ ॥ आव॥ ना॥ त्य॥ त्रि॥ धि॥ त्रि॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

यामी का ना ना दू का ना ना च प न र्वा णि ता व च ना नाम ग ग मा रु व
 ति ॥ न्ठ र्थ स्त्र ॥ नु नु नु ॥ न थो ॥ न दी ह्या ॥ न दी ह्य ॥ न था ॥ न दी
 ह्या ॥ न दी ह्य ॥ न था ॥ न था ॥ न दी ना ॥ न र्था ॥ न था ॥ न दी ष
 ॥ नु र्व लो गी स न स नी वा क्क ली वे न न नी ल गी त थो हे म व ती कि ला
 री क्क शो द नी प ह न य ॥ नु र्व न व स र्व ॥ सि द्ध नि ॥ ल क्की ग द्द स्य व न त्वा ॥
 ल वा स न्त्रा यि ना सि ॥ ल क्की ॥ ल क्की ॥ ल क्का ॥ ह ल क्कि ॥ ग र्व न
 का

ब्रह्मसूत्र

दी व त्ता ॥ म्नी ग द्द स्य व न त्वा स न्त्रा यि ॥ मि ॥ म्नी क्क वा ॥ म्नी ग द्द स्य व न्त्र
 वो रु व न ॥ स्त्र न प न ॥ म्नी ॥ मि यो ॥ मि य ॥ वा स ग सि ॥ म्नी ग सि च पः
 न म्नी ग द्द स्य क्क ग द्द स्य न य वो रु व न ॥ म्नी ॥ मि र्थो ॥ मि यो ॥ मि य ॥ मिः
 या ॥ म्नी ह्या ॥ म्नी हि ॥ हि ना म त्ता ॥ मि र्थो ॥ म्नी ह्या ॥ म्नी ह्य ॥ मि य ॥ म्नी ह्या
 ॥ म्नी ह्य ॥ मि य ॥ मि य ॥ म्नी ना ॥ मि र्थो ॥ मि य ॥ म्नी ष ॥ ह मि ॥ ह मि
 यो ॥ ह मि य ॥ नु र्व ग्री ग द्द ॥ ग्री ॥ ग्री यो ॥ ग्री य ॥ ग्री र्थो ॥ ग्री य ॥ ग्री य ॥ ग्री य ॥

श्रिया॥ श्रीत्या॥ श्रीहि॥ वैयव॥ यवनास्त्रि यांवरुमानादादितांवचना
नामजगमाहवति। श्रियो॥ श्रिय॥ श्रीत्या॥ श्रीत्य॥ श्रिय॥ श्रिया॥ श्रीत्या
॥ श्रीत्य॥ श्रिय॥ श्रिया॥ श्रिया॥ आदीनांवाभानृपकाय॥ श्रीत्मी॥
श्रिया॥ दत्ताम्॥ आदीनांमूरुतस्यदत्तामूरुवति॥ नृजगमाहवकृतज्ञा
भाष्यराव॥ श्रिया॥ श्रियि॥ श्रिया॥ श्रीष्वा॥ हश्री॥ हश्रियो॥ हश्रिय॥ पुर्व
धीजीप्रहूयाइयूनीवन्ता॥ अवीरकुीतनीलक्ष्मीधीजीत्मीमूदाहर॥

नं१

[illegible]

८४॥ गमीति दीर्घत्वं॥ श्रीलिंगत्वा न त्वाखवा विमेषः॥ स्वसृष्टस्य क
 र्त्तव्यव्यक्रियाः॥ त्रैकानां ४ श्रीलिंगात्रैव ४॥ तस्याः ४ सूत्रैव वः
 व्यक्रियाः॥ गमगद्यस्य पूर्ववत्॥ गमे ४॥ गमो ॥ गमव ४॥ ॐ ह्यादि॥ नो गद्य
 स्य ग्लो गद्यवत्॥ नो ४॥ नावो ॥ नाव ४॥ ॐ ह्यादि॥ लघ्वपूर्ववत्॥ ॐ तिः ४१
 स्वनां ४ श्रीलिंग ४॥ ॐ ॥ अथ स्वनां ४ नपुंसकलिंग ४ पुदल
 र्त्त॥ तत्तु श्रुका नान् ४ कुल ४॥ तस्य पुथमादितीर्थकवचना॥ अतां सु

॥ श्रुका नाना नपुंसकलिंगस्य तथा ४ स्य भागस्य वत्य (धो)॥ अभा
 ग्रह लिलम्बवत्यर्थ॥ अमगभा नस्य तिका नस्य लाप ४॥ कुल
 ॥ ह कुल ॥ ॐ मी॥ नपुंसकलिंगस्य ततो ॐ का नमाप अतां॥ अ
 ॐ गु॥ कुल ॥ अमभा ४ जि ४॥ नपुंसकलिंगस्य तथा ३ सुभा ४
 जिर्ववति॥ गका न ४ सर्वदशमर्थ ४॥ पुत्र जिञ्च सर्वस्य वक्य ४॥
 नमयम ४॥ नपुंसकलिंगस्य नमा गभा र्वति (धो) यत्र॥ यमय

त्याहागानकस्य नरुवति॥ मिदं त्यागस्वनात्यत्रावकाव्य॥ उका
 नउच्चित्रार्थ॥ मकात्रह्मननियमार्थ॥ नापक्षयादीर्घ॥ उ
 नाकस्यायक्षयादीर्घवति॥ ओषिवर्जिभष्यंचसूनामिवाः
 कूलानि॥ पूनत्रपि॥ कूलं॥ कूलं॥ कूलानि॥ अर्षदववरा॥ न
 वीमूलरुलपूष्यपगकृष्टुकुद्रम्बादथाप्यकात्राकाननपूषक
 लिंग॥ ४॥ स्वन्याद॥ अन्यादार्तल्लत्यत्रया॥ ४॥ ह्यमा॥ ४॥ कुर्व

४२

ति॥ उकात्रउच्चित्रार्थ॥ मकात्र॥ सर्वदार्थ॥ अन्यात्॥ अन्या॥ अन्या
 नि॥ २॥ नमदीर्घ॥ ॐ नत्रत्॥ ॐ नत्रा॥ ॐ नत्रालि॥ २॥ अन्यात्रत्॥ अन्या
 त्र॥ अन्यात्रालि॥ २॥ कतत्रत्॥ कतत्रा॥ कतत्रालि॥ २॥ कतमत्रत्॥ कतम
 कतमानि॥ २॥ अर्षपूर्ववत्॥ ॐ कात्राकाश्क्तिगद्व॥ नपूषकात्स्यमा
 ल्क॥ नपूषकलिंगत्यत्रया॥ ४॥ ह्यमा॥ ल्कुरुवति॥ अक्लि॥ ४॥ ॐ काः
 गानकस्य उकात्राकस्य मकात्राकस्य च नपूषक (ओवागुल्लवकाव्य॥ ४॥ ६॥

अस्मि॥ हं अस्मि॥ उक्तं हि॥ संवाधनं हं न सन्निभं पूर्णं सान्नं नथाना नमथा
 पदकं॥ माध्वदिनिर्वह्निगुलीतिगर्जनं पर्यसकं व्याघ्रपदीवनिष्ठं॥ हं उग्नं न॥
 ॥ हं उग्नं न॥ हं उग्नं न॥ गुह्यं निपुनं॥ गगनं न पर्यसकं गुह्यं वद्वि॥ हं वायु॥
 हं वायु॥ मधु॥ हं कर्तुं॥ हं कर्तुं॥ हं त्यादि॥ नामि न॥ स्वयं॥ नाम्यन्तं स्य न
 पर्यसकं स्य न मागमाहवति॥ स्वयं पत्र॥ अग्रेव विरुकि स्वयं गृह्यते॥ न न व
 द्यं तस्यादौ नूम्न॥ ॥ ॥ अस्मिनी॥ नापधया दीर्घं॥ अस्मीनि॥ अस्मीनि॥

४३

जस्मै नो हि॥

टादौ॥ अस्मिनी दीर्घा नान्मागमाहवति॥ कात्रस्य चाकात्राहवति टादौः
 स्वयं पत्र॥ अस्मिनी दीर्घादौ स्वयं नामि न॥ स्वयं निनूम्ना स्यात्॥ अस्मी
 प॥ स्वयं स्वयं युक्ता च सादौ॥ नान्मापधया अकात्रस्य लोपोहवति
 गमादौ स्वयं पत्राद्विगं ॥ पिच्छीकात्रा॥ मकात्रवका नान्मापधया
 रुत्रस्य न रुवति॥ अस्मि॥ अस्मि त्या॥ अस्मि रि॥ अस्मि॥ अस्मि त्या॥ अस्मि
 त्या॥ अस्मि॥ अस्मि त्या॥ अस्मि त्या॥ अस्मि॥ अस्मि॥ अस्मि॥ अस्मि॥ अस्मि॥

नयावार्त्तकात्रस्य लाया रुवति ॥ अस्त्रि ॥ अस्त्रुनि ॥ अस्त्रिनि ॥ अस्त्रु ॥ अ
 स्त्रिषू ॥ नर्वदधिगकि अदिगद्वा ॥ वात्रि ॥ वात्रिणी ॥ वात्रीलि ॥ २ ॥ न
 र्पसकस्य ॥ नर्पसकस्य रुवति ॥ ग्रामलिकुलं ॥ स्वरादोनामिन ॥
 स्वरातिनूमागम ॥ ग्रामः लिनी ॥ ग्रामाणि ॥ २ ॥ यदावृकपूस्कं यवदा ॥ ४४
 ॥ उकपूस्कं नाम्यनं नर्पसकलिङ्गं दादोस्वरापत्रपूवदा रुवति ॥ ग्राम
 ल्या ॥ ग्रामलिनी ॥ ग्रामलित्या ॥ ग्रामलिति ॥ ग्रामलिनी ॥ ग्रामल्या ॥ ग्राम

२३

॥ नर्पसकस्येति कृत्तवं ॥ ४

लिण्या ॥ ग्रामलित्य ॥ ग्रामलिनी ॥ ग्रामल्या ॥ ग्रामलित्या ॥ ग्रामलित्य ॥ ग्राम
 मलिनी ॥ ग्रामल्या ॥ ग्रामल्या ॥ नमनस्यामिदीर्घ ॥ ग्रामलीनी ॥ ग्रामल्या
 ॥ ग्रामलिनी ॥ ग्रामल्या ॥ ग्रामल्या ॥ ग्रामलिषू ॥ यवदा वात्यकनामिन ॥ स्वरा
 तिनुसर्वरा ॥ सामपूकलं ॥ सामपा ॥ सामपानि ॥ २ ॥ अर्षदिववरा ॥ उकात्रा
 कामधूगद्वा ॥ रास्यापिस्वरापत्रनुमागम ॥ मधू ॥ मधूनी ॥ मधूनि ॥ २ ॥ नाः
 मिन ॥ स्वरातिनूमागम ॥ मधूनी ॥ मधूल्या ॥ मधूति ॥ मधूनी ॥ मधूल्या ॥ म

२४

[illegible]

कानुं यर्कलं तदति नूअलं ॥ अति नू ॥ अति नूनी ॥ अति नूनि ॥ २ ॥ अति नूना ॥
 नामिन ४ स्वप्रति नूम् सर्वतु ॥ अति स्वना नानपूस्व कर्हिग ४ ॥ ॐ ॥
 ॥ अथ हसा ना ४ पूर्लिंग ४ पुदग्धर्क ॥ ततुह का नाना अत नूह गद्य ४ ॥ यंच
 खन नूह नूमा गभावेक व्य ४ ॥ मिदं त्यात्य नात्यभावक व्य ४ ॥ सावन नूह ४
 ॥ अत नूह नूह स्योप नूमा गभा रुवति ॥ संथा गन नूह लाप ४ ॥ संथा गन नूह
 स्य लाप रुवति ॥ नक्षप दान व ॥ हसप ४ सल्लाप ॥ अत नूह ॥ अत नूह ॥

अ॒न॒श्र॒ह॒४॥ध॒व॒म॒॥अ॒न॒श्र॒ह॒ग॒द॒स्य॒क्षो॒प॒त्र॒अ॒मा॒ग॒मा॒रु॒व॒ति॥उ॒र्व॒॥हः
 अ॒न॒श्र॒ना॒॥ह॒अ॒न॒श्र॒हो॒॥ह॒अ॒न॒श्र॒ह॒४॥अ॒न॒श्र॒हं॒॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥अ॒न॒श्र॒हो॒
 ॥अ॒न॒श्र॒ह॒४॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥व॒सां॒त्र॒सा॒॥व॒स॒सं॒स॒ध॒सं॒सं॒अ॒न॒श्र॒ह॒॥ह॒॥ह॒॥
 षा॒द॒त्वं॒रु॒व॒ति॥त्र॒स॒प॒त्र॒प॒दा॒न॒क॒वा॒॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥अ॒न॒श्र॒हो॒४॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥
 अ॒न॒श्र॒हो॒॥अ॒न॒श्र॒ह॒४॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥अ॒न॒श्र॒हो॒४॥अ॒न॒श्र॒ह॒४॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥
 ॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥अ॒न॒श्र॒हो॒४॥व॒सां॒त्र॒सा॒॥ख॒स॒व॒पा॒म॒सा॒ना॒मि॒ति॒क

४६

अ॒न॒श्र॒हो॒॥
 ॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥

त्वं॥अ॒न॒श्र॒हो॒॥ग॒द॒ह॒ग॒द॒स्य॒ह॒का॒ना॒न॒त्वं॒पि॒वि॒भ॒ष॒४॥दा॒द॒र्घ॒४॥दा॒द॒
 द्वा॒भि॒रु॒का॒न॒स्य॒द्य॒त्वं॒रु॒व॒ति॥अ॒स॒प॒त्र॒ना॒म॒त्र॒अ॒स॒प॒दा॒न॒क॒वा॒॥ग॒द॒हः
 सि॒न्ति॒स्ति॒ग॒॥आ॒दि॒ऊ॒वा॒नां॒म॒रु॒न॒स्य॒म॒रु॒४॥स्त्र॒४॥ध॒मा॒म॒रु॒न॒स्यः
 दो॒व॒रु॒मां॒नां॒ऊ॒वा॒नां॒म॒रु॒रु॒व॒ति॥स॒का॒त्र॒ध॒ग॒द॒च॒प॒त्र॒ना॒म॒त्र॒अ॒स॒प॒दा
 न॒क॒वा॒॥वा॒व॒सा॒न॒॥अ॒व॒सा॒न॒व॒रु॒मा॒नां॒म॒सा॒नां॒ऊ॒वा॒रु॒व॒ति॒च॒पा॒वा॒॥अ॒थो
 ह॒स॒प॒४॥स॒लो॒प॒४॥प॒श्च॒अ॒वा॒व॒सा॒न॒॥ग॒धू॒॥ग॒धू॒॥ग॒द॒हो॒॥ग॒द॒ह॒४

ना३

॥ गमदूहं ॥ गमदूहो ॥ गमदूहः ॥ गमदूहा ॥ रुका नादो दादघं ॥ गिघत्तकृते
 नादिऊवानामिति दका नस्य सरुधका नचकृते ॥ अरुऊवा ॥ गम
 धूग्या ॥ गमधूगि ॥ गमदूह ॥ गमधूग्या ॥ गमधूग्य ॥ गमदूहः ॥
 गमधूग्या ॥ गमधूग्य ॥ गमदूहः ॥ गमदूहा ॥ गमदूहा ॥ गमदूहा ॥ गमदूहा ॥
 गमदूहा ॥ दादघं ॥ नादिऊवानामिति धका नचकृते ॥ गमधूग्यसू
 गिहिने ॥ खसचपाससानामिति कत्वं ॥ किलात्थ ॥ स ॥ गिघत्तं

४१

॥ कषसंथा गदू ॥ गमधूक ॥ रुगमधूक ॥ रुगमधूग ॥ रुगमदूहो ॥ रु
 गमदूहः ॥ मधूलिह गद्यस्य रुद ॥ हाउ ॥ धमार्दका नस्य रुत्वरुव
 नि ॥ ममपत्रनामन्यत्र मयदा नच ॥ वावसाने ॥ गिठका नस्य रुका
 नचकृते ॥ मधूलिह ॥ मधूलिह ॥ मधूलिहो ॥ मधूलिहः ॥ रुमधूलि
 ह ॥ रुमधूलिह ॥ मधूलिह ॥ मधूलिहो ॥ मधूलिह ॥ मधूलिहो ॥ हा
 उ ॥ अरुऊवा ॥ गिठका नचकृते ॥ मधूलिहो ॥ हाउ ॥ खस

नित्यादि ॥

ले २

हकारस्य २

॥ ४८ ॥

क २

चपासमानामिति टकात्र ४॥ मधूलिष्ट ॥ ॐ स्यादि ॥ इहादीनां घत्व
उत्त्ववा ॥ इहादीनां धातुनां घत्व उत्त्ववा रुवत ४ गमपदान्तः
च ॥ मित्रकृक् ॥ मित्रकृत् ॥ मित्रकृहो ॥ मित्रकृह ४ ॥ मित्रकृह
॥ मित्रकृहो ॥ मित्रकृह ४ ॥ मित्रकृह ॥ रुकात्रादी घत्व उत्त्व
च द्वेता ॥ मरुजवा ४ ॥ रुकात्रादी घत्व उत्त्व
हि ॥ मित्रकृहि ४ ॥ मित्रकृहि ४ ॥ स्वसचपासमानामिति ॥ कः

मित्रकृग ॥ १ मित्रकृह ॥ २

५४

कात्रटकात्रो ॥ मित्रकृद् ॥ मित्रकृष्ट ॥ ॐ स्यादि ॥ शथानत्वमूहा
दय ४ ॥ प्रहान् श्रुत्रगद्धानित्येवद् वचनान् ४ ॥ चतुत्रामभ
च ॥ चतुत्रगद्धानिमागभातवति ॥ पंचसूत्रमभ ॥ मिदं स्याः
त्तनात्यगोवक ४ ॥ उर्व ॥ चत्वात्र ४ ॥ चतुत्र ४ ॥ चतुर्हि ४ ॥ चतुः
४ ॥ चतुर् ४ ॥ न ४ संख्याया ४ ॥ प्रहान् संख्याया ॥ यत्रस्याभान्
गगभातवति ॥ गत्वं द्वित्वं ॥ चतुर् ॥ चतुष्ट ॥ क्षामिति सूत्रं

कृतस्येवग्रहस्यसप्तमीवद्वचनपत्रविसर्गः॥ नान्यस्यतिर्सर्गः॥
नान्यस्यतिवकाव्यं॥ रास्माच्चतुर्ष्वन्तिविसर्गहावः॥ नकागाः
नकागाऊनृगद्वः॥ रास्यनापधयान्तिर्पंचसूदीर्घः॥ नाम्नानात्ता
पञ्च(धो)॥ नाम्नानकात्रस्यानागमऊस्थलापगुरुवति॥ नसपदान्त
चा(धो)॥ गाऊ॥ अनागमऊस्थतिनामान्तस्येवापलक्ष्मी॥ गनय
गान्॥ गाऊनो॥ गाऊनः॥ अक्षवितिवि(ग)धनान्॥ हगाऊनू॥ गाऊन

४२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

लक्ष्मणप्रतिपदा कथाः प्रणिपदा कथाः वगृह्य लक्षणकथीर्क ३

नका नकल नलायति नका नकल नलायति नका नकल नलायति

तं यदि अज्ञानमहं स्त्री किं यत् न दानं यत् न

मलादज्ञापोनास्ति॥यकन॥यकना॥सुधर्मन॥सुधर्मना॥आत्मन॥
 आत्मना॥आत्मन्या॥आत्मरि॥आत्मन॥**॥**त्यादि॥अनुमद्यवन्मयवन्म
 दानापर्यवसूत्राऊनगद्यवत्यक्रिया॥असादोदुविषय॥**अद्वैत॥**
 अद्वैतकानउत्वेप्राप्ति॥असादोस्वयप्रतद्विशिष्टीकात्रय॥शुन॥
 शुना॥अद्या॥अरि॥**॥**त्यादि॥पुननगद्यवकात्रयात्वेकता॥सर्व
दीर्घ॥सह॥यून॥यूना॥यूवत्या॥मित्यादि॥मद्यवन्मद्यवकात्र

५०

स्यात्वेकता॥**उ॥**मद्यान॥मद्याना॥मद्यवत्यामित्यादि॥पथिन्मद्य
 स्यरुद॥**॥**ता॥इत्येवम॥पर्यवसूत्यादिषूपप्रषूपथ्मादीनामिकात्रस्यचा
 कात्रादभ्यरुवति॥**अनू॥**यथ्मादीनाथकात्रस्यनूजगमांरुवति॥पर्य
 वसूत्यादिषूपप्रषू॥पर्यथन्मि॥**॥**ता॥असौ॥यथ्मादीनांठनात्वेरुवति
 सोपत्र॥पर्यथ्मा॥ठनात्वेविधानसामथ्मास्तिलायांरुव॥पन्कानो॥पन्कानः
 ॥पन्काना॥पन्कानो॥पथ्मंठ॥यथ्मादीनांठनात्वेरुवति॥असादोस्वयप्रत

三

[illegible]

४४

न४॥दलुना॥दलुल्यां॥दलुलि४॥ॐत्यादि॥नर्वकलिनूकयालिनूम्
गलिनूदनिनूमालिनूधलिनूग्रहणय४॥नर्ववक्रहा॥वक्रहलो॥
वक्रहल४॥देवक्रहन॥वक्रहलं॥वक्रहलो॥गतादीत्वलाय४॥
॥हनाध्र॥हर्नद्धर्माहकोनस्यपैल्वरुवति॥नकात्रिष्ठितिचपत्रयसूः
यां॥लत्वनिषधार्थ४॥वक्रध्र४॥वक्रध्रा॥वक्रहल्यां॥वक्रहरि४॥व
क्रध्र॥वक्रहल्यां॥वक्रहल्य४॥ॐत्यादि॥नर्वयूषा॥यूषलो॥यूषल४॥

॥पूषली॥पूषलो॥पूष॥पूषा॥पूषत्या॥पूषरि॥००त्यादि॥पूषादोदि
 लापावेतिकेचित्॥उरुयविकल्पननूपनय॥पूषि॥पूषलि॥पूषि॥नर्व
 अर्थमा॥अर्थमलो॥अर्थमली॥अर्थमली॥अर्थमलो॥अर्थमली॥अर्थ
 मली॥अर्थमरि॥००त्यादि॥अर्थमि॥अर्थमलि॥संख्याभर्तृ॥यंचय ३२
 रुतयोवद्वचनानामिष्टरूपा॥यचनउसूतिस्त्रिभा॥असुभा
 सासूक्॥मकात्रनकात्रानसंख्याया॥यत्रयोक्तुसंज्ञासालुवति॥ल ५२

किंनत्रिमिरुं॥लूकिसंतिगनैरुवति॥यंचा॥यंचा॥यंचरि॥यंचरु॥यंचरु
 ॥००॥यकात्रनकात्रानसंख्याया॥यत्रस्यामीनूगगमीरुवति॥नाम्नानाता
 पतलो॥यंचानी॥यंचसु॥नर्वसफननवनदगनपुरुतय॥यत्रमयंचा
 नी॥पिया॥यंचयस्य॥पिययंचा॥पिययंचानो॥पिययंचान॥पियंचा
 न॥पिययंचानो॥गमादोपथीट्रिनिट्रिपि॥स्वत्र००त्यकात्रलाप॥
 स्ता॥श्चरि॥श्चरि॥पिययंच॥पिययंचा॥पिययंचा॥००त्यादि॥पथिन्

श्रीगणेशः॥

[illegible]

५३

ह्यादि॥ यथिन्गद्ववत्॥ यदं ॥ प्रियाष्टा॥ प्रियाष्टो॥ ऊसि॥ प्रियैष्टो॥ प्रियाष्टा॥
 ॥ प्रियाष्टा॥ प्रियाष्टो॥ गसि॥ प्रियाष्टो॥ प्रियाष्टा॥ ॐ ह्यादिहाहागद्ववत्॥ म
 कागान् ॐ दमगद्वस्यरुद॥ ॐ दमगद्वस्यरुद॥ ॐ दमगद्वस्यरुद॥ ॐ दमगद्वस्यरुद॥
 नूयमुरुवति॥ सिसदिरस्य॥ मूर्यं॥ द्विवचनादोरुस्यदादष्टन॥ स्यादावि
 त्यका॥ ॐ दओ॥ ॐ तिष्ठि॥ दस्यम॥ स्यदादीनां दकात्रस्यमत्तं रुवति
 ॥ स्यादोप॥ ओओओ॥ ॐ मी॥ सर्वादीनां ऊसी॥ ॐ मी॥ स्यदादीनां धनराव

58

[illegible]

दादसु कानस्य सत्वं रुवति सोपन ॥ स्य ४ ॥ ल्यो ॥ ल्य ॥ ल्यं ॥ ल्यो ॥ ल्या न् ॥
 ल्यन ॥ ल्या ल्यां ॥ ल्ये ४ ॥ ल्यस्मै ॥ ल्या ल्यां ॥ ल्य ल्य ४ ॥ ल्यस्मात् ॥ ल्या ल्यां ॥ ल्य ल्य ४ ॥ ल्य
 स्या ॥ ल्यथा ४ ॥ ल्यर्षां ॥ ल्यस्मिन् ॥ ल्यथा ४ ॥ ल्यषू ॥ न्वं ॥ न्व ४ ॥ गो ॥ गो ॥ गं ॥ गो गं ता
 न् ॥ गं न ॥ गा ल्यां ॥ गं ४ ॥ ॐ ल्यादि ॥ य ४ ॥ यो ॥ य ॥ न्व ४ ॥ न्वो ॥ न्व ॥ न्व द चाः
 द ॥ द्वितीयादौ भूनादल्ल वावक य ४ ॥ उक्त्वा स्य पून न्व कि न्वा द भ ४ ॥
 न्वर्न ॥ न्वर्न ॥ न्वो ॥ न्वो ॥ न्वान् ॥ न्वान् ॥ न्वन ॥ न्वन ॥ न्वनया ४ ॥ न्व

या॥ ॐ ह्यादि॥ कृ का ना न सु त्व या कृ ग द ४॥ कृ ग ष रा ज द ४ ष ४॥ वा उ
 ४॥ वा व साना॥ र त्व पा ट्॥ र त्व पा श्॥ र त्व पा ञ्॥ र त्व पा कृ ४॥ र त्व पा ट्॥
 द र त्व पा श्॥ र त्व पा ञ्॥ र त्व पा ञ्॥ र त्व पा कृ ४॥ ॐ ह्यादि॥ थ का ना ४
 ना ३ अग्नि म थ ग द ४॥ प्र ह्या दा न मु सं ख्या निय म मु ना स्ती ति व च ना च्छु य थ
 ख ह्ना ना च्छु ट र क पा ज उ द ग वा रु व नि य थ सं ख्यं॥ वा व साना॥ ॐ ति र
 का न द का नो॥ अग्नि म त्॥ अग्नि म द्॥ अग्नि म थो॥ अग्नि म ४॥ ॐ ह्यादि

[illegible][illegible]

॥ तद्विना ॥ त्रिप्रश्नीन ॥ ॐ यि ॥ त्रिप्रश्नी ॥ ॐ कात्रा ॥ त्रिर्यक ॥ त्रिप्रश्नी ॥
 त्रिर्यवि ॥ ॐ ह्यादि ॥ नर्व उदह ॥ उद ह्या ॥ उद ह्या ॥ उद ह्या ॥ उद ह्या ॥ उ
 दीव ॥ उदीवा ॥ वा ॥ ४ क ॥ ४ म ॥ ४ वा ॥ उद ह्या मि ह्यादि ॥ सम्य ॥ सम्य ॥
 ॥ सम्य ॥ ४ ॥ सम्य ॥ ४ ॥ सम्य ॥ ४ ॥ समीच ॥ समीवा ॥ सम्य ह्या मि ह्यादि ॥ नका
 नाका ॥ मत्रुतगद्य ॥ वावसान ॥ मत्रुता ॥ मत्रुद ॥ मत्रुता ॥ मत्रुत ॥ मत्रुत ॥ मत्रुत ॥ म
 त्रुता ॥ मत्रुता ॥ मत्रुत ॥ मत्रुता ॥ मत्रुह्या मि ह्यादि ॥ नर्व अग्निचित्यरुतय ॥

५८

च२

तका नान उका नानर्व ॥ क्षमहृताद्य ॥ विमान्म ॥ उका नानर्व न्वस्यमका
 नानर्व न्वस्य न्मागमारुवतिपुंतिपंचसूयप्रषु ॥ न्माहृता ॥ ४ ॥ दीर्घ ॥
 गोच ॥ नर्ततस्यायुगद्यस्यमहृद्वद्यदीर्घारुवतिपंचसूर्वधिरुतिगो
 चयप्र ॥ स्यागमनस्यलाप ॥ सिलाप ॥ महान् ॥ महनी ॥ महन ॥ म
 हनी ॥ महनी ॥ महन ॥ महता ॥ मरुऊऊवा ॥ मह ह्या ॥ मह हि ॥
 महनी ॥ मह ह्या ॥ मह ह्या ॥ महन ॥ मह ह्या ॥ मह ह्या ॥ महन ॥

ਅਹੁ

ह्ययासक्तस्यतिविवक्षितं॥भनपिलुग्यसतिः॥तिपिलुग्यमक्तिवक्त॥पिलु
य॥पिलुग्यसो॥पिलुग्यस॥॥ह्यादीनदीर्घ॥मकारानूवचस्यरुव
रुगद्यस्यनूमागमनवदीर्घनिरुवति॥रुवन्॥रुवन्को॥रुवन्क॥नर्व
यवन्॥यवन्को॥यवन्क॥रुपवन्॥नर्वयथन्॥यथन्को॥यथन्क॥॥
ह्यादि॥गकारान्ताविग्नगद्य॥क्वगघगजगद॥घ॥घर्त्त॥घा॥वावसा
न॥हस्य॥सर्वाय॥विट्॥विष्॥विष्मो॥विग्न॥हविट्॥हविष्॥वि

श्रीं॥ विलो॥ विग॥ ॐ॥ आदि॥ षका॥ नान॥ ४४॥ षग॥ द्वा॥ नित्यं॥ वद॥ वच॥ नान॥ ४॥
 विष॥ स्व॥ रूप॥ ४॥ ॐ॥ सु॥ ग॥ सा॥ लू॥ क॥ षा॥ ७॥ वा॥ व॥ सा॥ ने॥ ॥ ष॥ द॥ ष॥ ग॥ ष॥ हि॥ ४॥ ष॥ ह्य॥
 ४॥ ष॥ ह्य॥ ४॥ षू॥ ॐ॥ नि॥ नू॥ ग॥ ग॥ मे॥ ४॥ ष॥ न॥ मू॥ ॐ॥ नि॥ हि॥ ग॥ ॥ पू॥ ४॥ स॥ र॥ व्या॥ स॥ व॥ धि॥
 ना॥ ७॥ का॥ त॥ स्य॥ ल॥ त्व॥ र॥ व॥ नि॥ ना॥ मि॥ य॥ न॥ ॥ हू॥ रि॥ ४॥ हू॥ ४॥ ल॥ का॥ त॥ स्य॥ न॥ न॥ स्य॥ म॥ त्व॥ ॥ ५०
 ॥ ष॥ लू॥ ॥ ष॥ दू॥ ॥ क॥ चि॥ द॥ ष॥ द॥ न॥ कि॥ पि॥ द॥ न॥ ना॥ श्र॥ य॥ ती॥ या॥ ४॥ दा॥ र्वा॥ न॥ ४॥ दा॥ ष॥
 स॥ रु॥ ष॥ आ॥ गि॥ ष॥ ह॥ वि॥ ष॥ पु॥ ह॥ नी॥ ना॥ ष॥ का॥ त॥ स्य॥ न॥ ह॥ र॥ व॥ नि॥ न॥ स॥ य॥ द॥ न॥ च॥ ॥ सि॥

ला॥ य॥ ४॥ अ॥ वि॥ स॥ र्ज॥ ४॥ दा॥ ४॥ दा॥ षो॥ दा॥ ष॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ ग॥ सा॥ दो॥ स्व॥ त्र॥ प॥ त्र॥ ना॥ न॥
 ना॥ वा॥ व॥ क॥ व्या॥ ॥ दा॥ ष॥ ४॥ दा॥ षू॥ दा॥ षू॥ दा॥ ह्यो॥ दा॥ हि॥ ४॥ दा॥ षा॥ दा॥ षू॥ दा॥ ह्यो॥ दा॥ ह्यो॥
 ४॥ दा॥ ष॥ ४॥ दा॥ षू॥ दा॥ ह्यो॥ दा॥ ह्यो॥ दा॥ ष॥ ४॥ दा॥ षू॥ दा॥ षा॥ दा॥ षू॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ दा॥
 षि॥ दा॥ षि॥ दा॥ षा॥ दा॥ षू॥ दा॥ षू॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ दा॥ षो॥ दा॥
 प॥ द॥ न॥ च॥ दी॥ षा॥ व॥ क॥ व्या॥ ४॥ स॥ रु॥ ४॥ स॥ रु॥ षो॥ स॥ रु॥ ष॥ स॥ रु॥ षो॥ स॥ रु॥ षो॥ स॥ रु॥ षः
 ॥ स॥ रु॥ षा॥ स॥ रु॥ ह्यो॥ मि॥ त्या॥ दि॥ ॥ स॥ का॥ त॥ न॥ ४॥ प॥ र्श॥ ४॥ प॥ र्श॥ ४॥ प॥ र्श॥ ४॥ प॥ र्श॥ ४॥

पेञ्चसूत्रादलभरुवनि॥ इकात्रा३ न्यादभर्थ४॥ उकात्रान्स्विधनार्थ४॥ विमानः
 मितिनुमागम४॥ मिदंत्यात्स्वरात्यत्रावकाव४॥ स्वत्रम४॥ पूमसंतिस्त्रिभ॥ न
 म्मदना३ (ओदीर्घ४ ओच॥ स्यागमनस्यलाप४॥ पूमान्॥ पूमाभो॥ पूमान्म४॥
 पूमान्म॥ पूमाभो॥ पूस४॥ पूसा॥ स्यागमनस्यलाप४॥ पूर्या॥ पूरि४॥ पूसा॥ पूः
 र्या॥ पूर्य४॥ पूस४॥ पूर्या॥ पूर्य४॥ पूस४॥ पूसा४॥ पूसा॥ पूसि॥ पूसा४॥ नृसंरु
 नृपूस४क ओ॥ नृसंरुवनिवदनेकवयस्यात्मनावकृत्वा संरुवाच्यपूंगद्वयक

[illegible]

नृदसु ४ सप्रो कात्राद (अरुवति ॥ नृसो ॥ दिवचन नृदओ ॥ नृतिहिता ॥ दस्य
 म ४ ॥ नृतिमत्वं ॥ माद ॥ उ ॥ नृदसामकात्रात्यनस्य कृत्स्वस्य दृत्स्व
 कात्रादीर्घस्य दीर्घाकात्राहवति ॥ नृमूओ ॥ नृतिहिता ॥ ओयू ॥ नृमू ॥ वद्वव
 वनसर्वादि त्वंउसी ॥ नृ ॥ नृम ॥ नृतिहिता ॥ नृनीवद्वत्वं ॥ वद्ववचन ४३
 सत्यदसु गद्यस्य न कात्रस्य णीकात्राहवति ॥ नृमी ॥ नृमी ॥ नृमू ॥ नृमून्
 ॥ मत्वं उत्वेचकृते ॥ यनाक्रिया ॥ नृमूना ॥ दिवचन नृहीत्या त्वंयचात्मा ददाः

४ ॥ नृमूत्या ॥ नृमीहि ४ ॥ नृमूषो ॥ नृमूत्या ॥ नृमीत्य ४ ॥ नृमूयात् ॥ नृमूत्या ॥
 नृमीत्य ४ ॥ नृमूषा ॥ असि नृत्वे ३ याद (अ चकृते यश्चात्मा दू ॥ नृमूया ४ ॥ नृमी
 या ॥ नृमूषिन् ॥ नृमूया ४ ॥ नृमीषा ॥ सामान्य नृदसु ४ क ४ स्यादो ॥ सामान्यः
 वाच्य नृदसु गद्यस्य कयत्यथाहवति ॥ स्यादोपत्रा ॥ नृमूक ४ ॥ नृमूको ॥ नृमू
 कं ॥ नृमूकं ॥ नृमूको ॥ नृमूकान् ॥ नृत्यादि ॥ (अर्षं सर्ववर्तु ॥ नृतिहसा का
 ४ पूर्णिग ४ ॥ ॥ नृथरुसा का ४ मीलिरु ४ पदार्थन ॥ तत्तुह कात्रानु ३

वा॥ चरसृणी॥ चरसृणी॥ चरसृणी॥ नर्वनिमु॥ ॥ नरुना गिमुगद॥ ॥ चोर्वि
हस॥ धरा॥ तिकात्रा॥ कात्रयादीर्धरुवतिनेरुवकात्रयाहसपत्रया॥ हसप॥ ॥
शोप॥ धाविमर्ग॥ गी॥ गित्री॥ गित्री॥ हगी॥ गित्री॥ गित्री॥ गित्री॥ गित्री॥
गी॥ हगी॥ गी॥ गित्री॥ गी॥ हगी॥ गित्री॥ गी॥ हगी॥ गी॥ हगी॥ गित्री॥ गित्री॥
त्रा॥ गित्री॥ गित्री॥ गित्री॥ ननात्तुपि॥ नरुद्विदिनसुपियत्ररुस्यविसात्त
नेत्यर्थ॥ गी॥ नर्वपुत्रधुनादय॥ धका॥ ननु॥ समिधुगद॥ वावसान॥

॥ समित्॥ समिद्॥ समित्॥ समिध॥ हसमित्॥ हसमित्॥ समिध॥ समित्॥
समिध॥ समिध॥ समित्॥ मित्यादिरुकात्राने॥ ककुरुगद॥ वावसान॥ ककव
॥ ककपु॥ ककरो॥ ककुरु॥ हककव॥ हककपु॥ ह्यादि॥ दका॥ ननात्तुदा
दय॥ नषात्यदादष्टनिमिष्वगाकात्र॥ आवन॥ मियी॥ नृका॥ नान्नमि॥ मि
यावर्तमानादायुत्यथारुति॥ यका॥ नसिलापार्थ॥ सव॥ लूदीर्घ॥ मीलि॥
सर्वगदवद्वयनय॥ सु॥ स्या॥ त्या॥ त्या॥ त्या॥ त्या॥ स्या॥ ता॥ ता॥ ता॥ ता॥

४॥दिभ४॥दिग्या॥दिग्य४॥दिग४॥दिग४॥दिभि॥दिभि॥दिभि॥४॥दिद्ः
॥हृदिक॥हृदिग्॥हृदिग्या॥दिग४॥आदिगकार्॥नर्वमत्तिक॥दधुक्॥
उष्णिकयेरुनय४॥षकात्रान्४त्विषमद्य४॥षा७४॥वावसानि॥टकोत्र७कोगे
॥त्विट्॥त्विज्॥त्विषो॥त्विष४॥हृत्विट्॥हृत्विज्॥त्विषी॥त्विषो॥त्विष४॥त्विषा॥
त्विष्टामित्यादि॥आगिष्मद्यस्यस्रुष्मद्यवत्वकिया॥दाघनिर्तिषस्यनः
रु४॥स्रुषागिषानस्यदाक्षदीर्घवैक्य४॥आगिष्ठो॥आगिष्ठो॥आगिष्ठ

三

ना२
४॥ ॐ ह्यादि॥ श्रीलिंगस्यादसूगद्यस्यसोनविलष४॥ सोस४॥ सुगो॥ दि
वचदोठनत्वकृता॥ आवत४मियामित्यापदीर्घत्वंविरुक्कार्थवपश्च
न्मादू॥ ॐ तिऊस्वत्वंचदीर्घस्यदीर्घाकात्र४॥ अमू॥ अमू४॥ अमूं॥ अमू॥ अ
मू४॥ श्रीलिंगस्यान्नस्याहंवाविलष४॥ दोसात्र॥ यश्चन्मादू॥ अमूया॥
अमूत्या॥ अमूरि४॥ अमूष्ये॥ अमूत्या॥ अमूत्य४॥ अमूष्या४॥ अमूत्या॥
अमूत्य४॥ अमूष्या४॥ अमूया४॥ अमूषा॥ अमूष्या॥ अमूया४॥ अमूषू॥

॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥

[illegible][illegible]

॥ वक्र नृगदस्य रुद ४ ॥ न लाप ४ ॥ वक्र नृगदस्य नक्षपदान् च न लाप ४ ॥ न
 पूंसकात्स्यमान् लूक् ॥ वक्र ॥ वक्र ली ॥ वक्रालि ॥ पूनत्रयि ॥ वक्र ॥ वक्र ली ॥ व
 क्रालि ॥ नृम्वपूकादिनिविजयत्तादक्षायानास्ति ॥ वक्र ली ॥ वक्र ल्या ॥ वक्र लि
 ४ ॥ वक्र ली ॥ वक्र ल्या ॥ वक्र ल्य ४ ॥ संवृद्धौ वानपूंसकानां न लापा वाच्य ४ ॥ इव वक्र
 न् ॥ इव वक्र ॥ नृत्यादि ॥ नृवं चर्मन् वर्मन् नृगर्मन् पृह नय ४ ॥ नाकाददंताच्च नृ
 तिदिग्धार्वा लाप ४ ॥ वन्दस्त्वादागमजानागमऊया लापा लापो वक्तव्यौ ॥ पत्रमथ्या



मन्॥ सर्वहृत्तानि॥ खदादीनां स्यमा लूकि कृभटनर्त्वनरुवति स्था दा विरिवि
लघल्भत्॥ दिवचना दोगुठनस्थकृता॥ ॐ भो॥ रुतीयादोसर्वगद्यवद्ध्यंभ
यी॥ वावसाने॥ खत्॥ खद्॥ ख्य॥ ख्यानि॥ शा रत्॥ रद्॥ ग॥ तानि॥ शायत्॥
अद्॥ थ॥ यानि॥ श॥ नु रत्॥ नु रद्॥ नु ती॥ नु तानि॥ शार्कि॥ कि॥ कानि॥ २
॥ ॐ दं॥ ॐ भो॥ ॐ मानि॥ श॥ रुतीयादोसर्वगपूर्ववत्यक्रिया॥ चकात्राक्त४
यत्यन्नगद्य४॥ स्यमालूक्॥ चा४ व्४॥ वावसाने॥ प्रत्यक्॥ पुख्यत्॥ न्रष्ट

नलापोदीर्घ्या॥ वीकात्रपत्रा॥ पुगीवी॥ पुह्यवि॥ २॥ पुगीत्रा॥ च॥ ४॥ क॥ ४॥ म
 रुजवा॥ ४॥ पुह्यग्यामिह्यादि॥ उगत्॥ उगद्॥ उगती॥ उगन्ति॥ २॥ उग
 ता॥ उगह्यादि॥ मरुत्॥ मरुद्॥ मरुती॥ संमहात्ता॥ (वीदीर्घ॥ ४॥ लोच
 ॥ महानि॥ २॥ महत्ता॥ महह्यामिह्यादि॥ सकात्रान् ४॥ पयसूमेउसूवच
 सूयुरुत्तय॥ ४॥ स्यभालूक॥ शर्विसर्ज॥ ४॥ पय॥ ४॥ पयसी॥ पयसि॥ २॥ प
 यसा॥ शर्विसर्ज॥ ४॥ ह॥ ४॥ ३३॥ पय्याह्यामिह्यादि॥ त॥ ४॥ तसी॥ तजा

मित्या ४

नि॥ २॥ वच॥ ४॥ वचसी॥ वचसि॥ २॥ नवीहविषगद् ४॥ हवि॥ ४॥ हविषी॥
 हविषि॥ २॥ हविषा॥ हविह्यामिह्यादि॥ अदसगदस्यस्यभालूकिकृत् ॥
 शर्विसर्ज॥ द्विवचनादोठनत्वकृत् विरुकि कार्थचकृत् ॥ मत्वेउत्वेच॥
 अद॥ ४॥ अमू॥ अमूनि॥ २॥ अमूना॥ अमूह्या॥ अमारुत्रिह्यादि॥ ४॥ तिहसा
 कानपूतकलिंग॥ ४॥ ४३॥ ॥ अथयूष्मदस्यदा॥ ४॥ त्वयूष्मनिनूयता॥ तथाश्च
 वाचलिंगत्वादिष्यपिलिंगसूतमाननूय॥ वाचमित्युच्यतेरुयं तस्मिन् रु

ऊनरुयः॥विशेषलक्ष्मणायन्नवाचलिंगः॥सुउच्यते॥त्वमहंतिना॥यूष्म
 दस्मदाः॥सिंहितयाः॥त्वंश्रुदं॥ॐ॥त्यतावाधलोहवतः॥यथासंख्यन॥
 त्वं॥श्रुदं॥युवावोदिवचन॥यूष्मदस्मदादिवचनपत्रयवआवो॥ॐ॥त्यताः
 वाधलोहवतः॥आमी॥यूष्मदस्मदाः॥पत्रो॥आमुवति॥युवा॥आवा॥
 यूयंवर्षऊसा॥ऊसासहितयायूष्मदस्मदायूयंवर्ष॥ॐ॥त्यतावाधलोहव
 तः॥यूयं॥वर्ष॥त्वंनमदकत्वं॥यूष्मदस्मदात्वं॥ॐ॥त्यतावाधलोहवतः॥

११

मन् १

॥नकत्वगम्यमान॥आम्हो॥यूष्मदस्मदादेनात्वंरुवतिश्रुमिसकात्ररिसि
 वपत्रा॥त्वा॥मी॥युवा॥आवा॥त्यदादष्टत्रत्वेकृता॥मसीतिदीर्घत्वं॥गसा
 नावकव्यः॥यूष्मान्॥श्रुमान्॥त्वन्मदादलोहवतः॥कात्रः॥नयद्या
 ॥यूष्मदस्मदाष्टत्रत्वंरुवतिदादि॥ॐ॥त्यतावाधलोहवतः॥पत्रयाः॥नश्रुय॥त्वया॥म
 या॥आदगिवदादगं॥तिन्यायात्॥त्वन्मदादलोहवतः॥युवावोदिव
 वचनसर्वग॥श्रीत्यात्वं॥युवात्या॥आवात्या॥त्यदादष्टत्रः॥आम्हो॥यूष्मा

हि॥ अस्मा हि॥ तुल्यं म अं द वा ॥ दस हि तथा यस्मा दस्म दा मु ल्यं म अं ॥
 त्ये ता वा द लो रु व त ॥ तु ल्यं ॥ म अं ॥ यु वा ल्यो ॥ आ वा ल्यो ॥ य सृ ष्ट म ॥ यु ष्म द
 स्म दा ॥ य न या कृ ष्ट म ॥ म रु व ति ॥ ग का न रु का ना दि त्वं वा च्ये र्थ ॥ ग
 ना णी त्या त्वं न ॥ न सि व दू त्वे ॥ ॐ त्ये त्वं न व ति ॥ यु ष्म ल्यं ॥ अ स्म ल्यं ॥ द सि त्य
 सा ॥ शु ॥ अ र्चं च म्मां द सि त्य सा ॥ शु कृ व ति ॥ ग का न ॥ स र्वा द ग्ग र्थ ॥ उ काः
 न उ च्चा त्र ल्प र्थ ॥ त्व न्म दा द ल्प कृ त त्या द धू त त्वे च कृ त ॥ त्व न् ॥ म न् ॥ यु वा ल्यो

१२

॥ आ वा ल्यो ॥ यु ष्म न् ॥ अ स्म न् ॥ त व म म द सा ॥ द सा स हि तथा यु ष्म द स्म दां रु वः
 म म ॥ ॐ त्ये ता वा द लो रु व त ॥ त व ॥ म म ॥ यु वा द ल्प अ सी त्ये त्वे च कृ त ॥ न अ य
 ॥ यु व या ॥ आ व या ॥ स र्वा दि त्वा त्सा द् ॥ सा मा क म् ॥ यु ष्म द स्म दा ॥ य न
 या ॥ सा म् अ र्कं रु व ति ॥ यु ष्म र्कं ॥ अ स्म र्कं ॥ त्व न्म दा द ल्प कृ त नु ठ ण
 ॥ त्व यि ॥ म यि ॥ यु व या ॥ आ व या ॥ यु स्मा स ॥ अ स्मा स ॥ ॐ ति यु ष्म
 द स्म दा ॥ सा मा न्यं नू पं ॥ ॐ ॥ अ ध न या ना द ग वि ण ष वि धि र्निः

नृपरा। यथा दसदा ४ घटी चतुर्थी द्वितीया हरिस्तमवा नो वल्लो ॥ यथा दस
 दार्यथा संखनामी आदगा रुवनि ॥ कीदगा या ४ घटी चतुर्थी द्वितीया सहिः
 तथा ४॥ तरेक वचन सह गमरु वत ४॥ द्विवचने वा नो रुवत ४॥ वद्वव
 वनन वसन सो रुवत ४॥ कचिरुत्वयामयैत्यसिन्नार्थगमरु वत ४॥ स्वा
 मीतैस समायात ४ स्वामी भैसा म्युर्गगत ४॥ नमस्तैरुगव नूयो ददिमैमा द
 मवय्य ॥ स्वामी वीसज दासा वैद द्वा नो दानया चनी ॥ राजा वीदास्यत दानं

तव २ युवथा ४१ मम २ आवथा ४१ उर्य २ युवाही १ मय २

१३

स्तानेनामधूसूदन ४॥ दवा वीमवता विष्णु नैका नो उ नार्दन ४॥ स्वामी वीव
 लवान् राजा स्वामी नो इतो उ नार्दन ४॥ नमो वीव द्वा विष्णु त्या स्तानेना दी
 यगा धने। सान दाने ४ यपय्य म ४ यय्यमाने ४ सूद ४ खिन ४॥ स्वामा मा
 ॥ अमा सहितया यथा दसदा स्वामा ४॥ त्या ता वादलो रुवत ४॥ यय्यमि
 त्या मदा लीदं यय्यमा मद रुदकं ॥ नवैपुत्र सुव ॥ पुत्रा मम ॥ पुत्र सु ॥ पुत्र
 म ॥ पुत्र मुख्य ॥ पुत्रा मय ॥ पुत्र सु ॥ पुत्रा म ॥ पुत्र ह्य ॥ पुत्रा म ॥ पुत्र ह्य या

आवथा १ अस्माव २ युवा १

यथा २ आव १

युवाक १ अस्मा २

॥ ननुषादग दै नकि म् अता ॥ पाद ग दै न व न विहा यत्तै क थं यादा दो वरु मानया नन ॥
॥ नदाह ॥ पाद ह्यर्थ समापि वीरि यावृत्त्य वायुनः ॥ मातृक स्य वृत्तु र्जागः पाद ॥

यु ॥ पूना मा यातु ॥ ग्रम यवया ॥ ग्रमा आवया ॥ ग्रमा वी ॥ ग्रमा नी ॥ रुडा
यूवा ॥ रुडा वा वी ॥ यूना यष्मा कं ॥ यूना इस्मा कं ॥ यूना व ॥ यूना न ॥ यूना य
ष्म ह्यं ॥ यूना इस्म ह्यं ॥ यूना व ॥ यूना न ॥ यूना यष्मा न ॥ यूना इस्मा न ॥ यूना
व ॥ यूना न ॥ ना दो ॥ पादा दो वरु मानया रूष्मा दस्मा दो नैर न्ना दगा रु वः
ति ॥ त वं य ग व वा ना ऊ न्म म न य ति ग व ॥ ग व मि गु लि या नि स्य म म
मि गु लि ता न्य पि ॥ नूदा वि ल्य थ ना द वा य ष्मा कं क ल द व ता । स न व र गः

॥ अत्र क म ल क थं नि दर्शः क र न्ति व त्तु स्यं य मि कु म नि र्द स्यु क वि द न्य ग्रा य्या द ग म र्थः ॥

॥ ननुषादग वृत्तु यो द्वितीया हि निरुक्त म म
नम वा कं न वृत्तु का थ ॥ इ य ॥ इ य क न वि नि र्द

॥ ननुषादग वृत्तु यो द्वितीया हि निरुक्त म म
नम वा कं न वृत्तु का थ ॥ इ य ॥ इ य क न वि नि र्द

॥ १४ ॥

॥ अत्र क म ल क थं नि दर्शः क र न्ति व त्तु स्यं य मि कु म नि र्द स्यु क वि द न्य ग्रा य्या द ग म र्थः ॥

वान्नाथ ॥ इस्मा कं पाय ना ग क ॥ पादा दा वि ति किं ॥ या नु वा न त र्ति ह स्य न
स्व लो ग ल का ट य ॥ दि न ल्प क सि या र्ब द्द ॥ द ग्रा ह क र्द मा न् ॥ ॥ सै वा ध
न प दा द य न रु व नि व सा द य ॥ द ग्रा म र व दा सा ॥ इ स्मिं रा म रु ह्यं न मा न म
॥ वा दि रि थ ॥ वा दि रि त पि थ ॥ ग नै र न्ना द ग म रु वं ति ॥ वा दि नि या न
॥ वा दि त व य थ नि पा र सं ङ्गा रु व ति ॥ च वा रु म् रु ह् ॥ न व ॥ न वी ॥ नूनं
॥ पृथक् ॥ वि ना ॥ ना ना ॥ स्व स्ति ॥ अ स्ति ॥ दा षा ॥ न कं ॥ मृ षा ॥ मि थ्वा ॥ मि

[illegible]

॥यस्मिन् काले यदा॥ नृकस्मिन् काले नृकदा॥ कस्मिन् काले कदा॥ न
नयुकात्रे लतथा॥ यनयुकात्रे लयथा॥ केनयुकात्रे लकथं॥ अन्न
युकात्रे ल० त्कं॥ रस्मादिति रत०॥ यस्मादिति यत०॥ कस्मादिति
क० त०॥ अस्मादिति अत०॥ अस्मादिति ० त०॥ साव्विरुकि षूत
सित्यर्क॥ सर्वस्मादिति सर्वत०॥ पूर्वस्मिन्निति पूनस्तारु॥ अध०
स्मिन्निति अध० स्तारु॥ यत्रस्मिन्निति यत्रस्तारु॥ यत्रस्मिन्निति यत्र

६॥ अहिचदूग॥ द्वा (र्थ) वाच्य अहियुत्यथा रुवति॥ दक्षिणहिः
चसन्निवा लुला॥ किम॥ सामान्यविदादि॥ किम॥ सामान्य (र्थ) वित्तिनपुः
स्यथारुवति॥ कश्चित्॥ कोचित्॥ कचित्॥ केचित्॥ कचित्॥ कस्मैचित्॥ कस्माच्चित्
॥ कश्चन॥ कोचन॥ किंचित्॥ कोचित्॥ अस्मि॥ तदधीनकास्ते यस्मिंसात्॥ तस्मात्॥ अधी
नं तस्मात्॥ तस्मै न॥ अधीनं तस्मात्॥ उर्युत्तर्यगीकत्र (त्वा॥) उनीकृत्या॥ उनी
नीकृत्या॥ स्यादिकालनिघात्यता॥ सद्य॥ अद्य॥ सद्यदि॥ अधूना॥ अदानीं॥ सां

[illegible]

वति॥कृयनक॥रुका॥स्तत्वाकपयलम्यविहाय॥रुमूक॥दारु॥
 लम्॥दानेहात्रेकारंकारं॥वि॥खेलीकृत्यावत्यस्ययानम्॥घटवत्
 ॥घटवत्॥आम्॥कनस्तनाम्॥गम्॥वद्गम्॥नवमन्यापित्कादिः॥
 न्यययादिरुर्कल्लुक्॥न्यययात्यत्रस्यविरुर्कल्लुक्वति॥नग्ननिर्द्विग
 न्यययानानवर्तिगेदिनियमः॥उर्कदि॥सदृग्गतिषुलिङ्गसुसुर्वसुच
 विरुकिषु।वचनषुचसुर्वषुचनन्यतिरदवययं॥उक्तानिलिङ्गन्ययया

॥१॥

न्यधूनानिलिङ्गविषयविजिह्वययिषयाम्नीपुल्ययाऽपुल्लयन्॥आवतऽभिर्या
 ॥नृकात्रानाम्नाम्नऽभिर्याविरुमानादायुल्ययारुवति॥यस्यलायः॥जाया
 ॥माया॥भम्भा॥गद्वा॥धया॥माला॥ॐत्यादि॥नृजादश्चपुवकावः॥नृजा
 ॥नृका॥काकिला॥वाता॥गद्वा॥गतिका॥ध्रुवका॥वत्सा॥गिरुला॥ॐ
 त्यादि॥काप्यतः॥कापि॥ॐनृतः॥मिर्याकापियत्रपूर्वस्याकात्रस्य॥काना
 दश्चरुवति॥कन्यकाद्योनरुवति॥कात्रिका॥यात्रिका॥पठिका॥कन्यकादा

विरिक्किं॥कन्यका॥वरुपत्रिवाङ्का॥वहिरुगुत्रिप्रज्ञायमवाथात्रूपस
 र्ज्या॥आपत्रेवदसाक्तानायथावाचानिभदिभ॥श्रवणश्री॥वगभ
 श्री॥अपिधन॥पिधनी॥श्रवणस॥स॥रुखावा॥मिर्याकापिपत्र
 तनाक्षेचपूर्वस्यरुखावारुवति॥वालिका॥वलीका॥नदिका॥नदीका
 ॥श्रयसितरा॥श्रयसीतरा॥मिररा॥श्रीतरा॥विदूषितमा॥विदूषी
 तमा॥विद्वरुमा॥विदूषितरा॥विदूषीतरा॥विद्वरुमा॥रुवतितरा॥

१८

रुवतीरा॥रुवरुमा॥रुखादि॥वागुरुलक्ष्मीकाक्षोनरुवति॥नूकाना॥
 वागुरुलक्ष्मदवनिश्रयननिपतनूनदध्वर्थधितिनिपागानामनका
 र्थत्वात्॥रुखादी॥नकात्राक्तादकात्राक्तादननाचमियासीयुत्यथा
 रुवति॥दंतिनी॥दन्तिनी॥कात्रिणी॥माहिनी॥रुपिनाक्ष्मइलोयाव
 कव्य॥नाक्ष्मी॥नुवमन्यगुपि॥द्विदाम्नी॥रुदाम्नी॥रुखादीश्रुलोयाः
 क्षारव्य॥श्रुदद्वउम्॥शुनी॥मधानी॥अकात्राक्तात्वात्॥ककु॥रु

रु॥ अन्ननात् ॥ ओयगची ॥ अका ना ना नामपि माह पितृ श्रमादन्नरु
 वति ॥ यस्य लाघ ॥ ॐ श्रु श्रु श्रु य ॥ रस्य लाघा रुवति स्वयं कात्रय
 ॥ विरुकि स्य नवर्कि गह्वरा ॥ यप्रहयवित्रदिनय कात्र ॐ तिला य ॥
 द्विरु ॥ षकात्रठकात्रउकात्रसकात्रानूवन्ध रमि यामी पुत्यथारुवति
 ॥ षवरा की ॥ ठकूचन ॥ उल्लमती ॥ मय ० की ॥ रुवनी ॥ यचनी ख्यादि ॥
 ॥ नदाद ॥ नदादर्जल्लि यामी पुथारुवति ॥ नदी ॥ लोत्री ॥ लोत्रमी ॥

१२

पञ्चमी ॥ चतुर्थी ॥ द्वादशी ॥ शर्वत्री ॥ ॐ द्वादशी ॥ ॐ द्वादर्जल्लि यामी
 माली पुत्यथारुवति ॥ ॐ द्वाली ॥ रुवानी ॥ शर्वली ॥ त्रुदली ॥ मातुलाया
 आयाख्याविला लीपुद्वि यार्यादा ॥ मातुलानी ॥ मातुली ॥ उपाध्यायी
 ॥ उपाध्यायी ॥ द्वि याली ॥ द्वि यी ॥ आचार्याली ॥ आचार्या ॥ ॐ प्रसमादात्र
 तुल्य ॥ तुया लीवदानासमादात्र ॥ तुयी ॥ पृथालव ॥ गूडपूत्रपुसंथा
 लविवदिन ॥ ली पुत्यथारुवति ॥ गूडी ॥ गूडावा ॥ गलकी ॥ गलकावा ॥ चः

लेखा का

कात्रादीर्घां लिङ्गो न रुवति॥ जातत्रयापधत्॥ जातिवाचिना इयकात्राप
धदकात्रा नास्ति याम। अथ अरुवति॥ मिषी॥ महिषी॥ शूकरी॥ हंसी
। कूकूटी॥ वाङ्मली॥ अयकात्रापधत्॥ द्वित्रिया विष्म॥ प्रथमवया वावि
ना इतल्लीपवकाद्य॥ कुमारी॥ किष्मिनी॥ कलहरीपुहृताय॥ प्रथमः
ग्रहभात्॥ वृद्धास्थवित्रा॥ अत्राग्रहभात्तमिषु॥ ॥ स्वप्नदा॥ स्वाङ्गवा
चिना वाप्ति यामी अथ अरुवति॥ मृमूखी॥ मृगश्री॥ निर्मलतृन्वी॥

मन्त्र

वाग्दत्तः॥ पञ्चवदना॥ कमलनयना॥ कल्याणका॥ किमलयकः
ना॥ मृत्पल्लवः॥ मृत्पल्लवः॥ मृत्पल्लवः॥ मृत्पल्लवः॥ मृत्पल्लवः॥
नीपवावकः॥ नीपवावकः॥ नीपवावकः॥ नीपवावकः॥ नीपवावकः॥
प्रितिविगमः॥ प्रितिविगमः॥ प्रितिविगमः॥ प्रितिविगमः॥ प्रितिविगमः॥
पुत्र्यथारुवति॥ पुत्र्यथारुवति॥ पुत्र्यथारुवति॥ पुत्र्यथारुवति॥ पुत्र्यथारुवति॥
मनू॥ मन्मथः॥ मन्मथः॥ मन्मथः॥ मन्मथः॥ मन्मथः॥

शानिपात्यर्क॥पत्नी॥शूनर्वती॥सखी॥शूर्द्धजत्रती॥यूवती॥शुभिद्वी॥पात्री
 त्यादयः॥गद्वानिपात्यर्क॥पुत्री॥उदीची॥पात्री॥शूवाची॥श्रीपुत्रनिपात्य
 र्क॥पानिगृहीती॥जनी॥पितामही॥मातामही॥ह्माली॥कृत्तु॥गिनी॥ह्मली
 ॥कदली॥लम्कली॥कामूकी॥॥त्यादि॥दात्र॥गद्वानित्यं वद्वववर्नन॥य
 स्त्रि॥॥दात्रा॥दात्रान्॥दात्रे॥दात्रस्य॥दात्रस्य॥दात्रासी॥दात्रेषू॥वी
 रु॥॥उका॥नाका॥हु॥वाचिना॥वाश्रियामी॥पुत्यया॥रुवति॥पद॥पद्मी॥

८९

मुद्र॥मृद्वी॥तनू॥तची॥मरु॥मखी॥मरु॥मकी॥लघू॥लघ्वी॥पात्रु
 त्रित्यादीन॥उगु॥उका॥नाका॥वाश्रियामी॥पुत्यया॥रुवति॥पंगु॥पंगू
 ॥वामात्र॥वामात्र॥कत्रल॥कत्रल॥यूनसि॥यूवन्गद्वाः
 हि॥पुत्यया॥रुवति॥यूवति॥नुत्यानामत्वात्त्यादयः॥श्रवनादाप्नोति
 तिलाप॥॥वीवनाद्वस्य॥सर्वाप॥पूर्ववद्वपंनयं॥॥तिन्नीपुत्यय
 ॥॥॥॥॥अथविरुक्तार्थानि॥तिन्नीपुत्यय॥॥धरुपुत्यया॥॥

तित्रिकमर्थवच्चदृष्टं हि तस्यैवार्थसन्मागुपथमाविरुक्तिर्कुरुवति ॥ का
 नकाहृदशयितुं दहिति त्रायः ४ पुत्रीयगसहितार्थः ४ ॥ लिङ्गद्वयपिपथमा
 र्थः ४ ॥ त्रिकविना ॥ गत्सद्वक्त्र ॥ नविनिवराजगताजात्रावात्कमात्रीत्रात्रयगावांशु
 यत्रैवैवैरूपात् ४ यागमस्तानामहं ॥ सन्निस्तन ४ कियन ४ ॥ कमात्रा ४
 लत्रगत्तैत्रं त्रात्रयनवनानका ४ ॥ अगीयनचगीतका ४ मसियन नूजाजिताः
 ॥ नामनु ॥ व ॥ ग्रामनु ॥ लमाहिमुखीकन ॥ १ ॥ र्थः ४ ॥ पिपथमाविरुक्तिर्कुरुवति ॥

मउपलयादिचदिकसंज्ञांति ॥ १ ॥

मसिमुहत्रणविचपसीदपत्रमथवा कमात्रोत्तेत्रमासाथं कसमर्थराहपसि
 न ४ ॥ लाम ४ ॥ लसूरु ॥ गत्सुत्रासुं ॥ लतगद्वानिपात्यनधिविषय ॥ कससु
 लादत्रात्राधरुणमुर्त्यनमा ३ ॥ मुत्रा ॥ त्रधीषरुमहाया ३ ॥ घातयाधा ४ ॥ स्वयः
 स्मत्रा ॥ लषा ४ ॥ कार्यकुरुसाधनया ३ ॥ नपागुवि ॥ लषाव ॥ लो ॥ सुम्वच ॥ आधन
 लवया ४ ॥ लषाविरुक्तया ३ ॥ द्वितीया ३ ॥ अनुषर्थ ॥ लवनि ॥ कर्तृक ॥ मचक
 वत्सं ॥ पदानेन ॥ लयेवच ॥ लषादानाधिक ॥ लमिखा ३ ॥ कात्रकानिषट् ॥ का

र्थकर्मकात्रक उत्थाय आश्रमं स्कार्थविविक्तार्थद्वितीयाविरुक्तिर्भवति ॥
 यदहंत्वाहंविनदूत्यायंयत्सिद्धमवयाप्यतदायं। यद्युत्थानं नानाधनमला
 पकर्मवाक्यचरितसंस्कार्य ॥ यत्पूर्ववत्कायनिह्यालनञ्चवत्कान्तप्रयापि ॥
 तद्विकार्य ॥ कटंकत्रातिकात्रक ४ उत्थाय ४ त्रिभूयं पञ्चति वाङ्मय ४। त्र्यं
 पात्रातिधर्मिषसामं सूनारि सामया ४। अहिसर्वतसा ४ कायाधियुपर्यः
 विषुष्टिषु। द्वितीयाभूतिनाक्तचूताननः। गुपिदश्रमा। अहिनाग्रमं नदिवद

८३

नि ॥ सर्वभाग्रमं तत्रवा दृश्यते ॥ प्रियदवदहं ॥ उपर्युपातपूत्राहितीयायका
 ४ पतनि ॥ अक्षः (अग्रमं निधि ४। अक्षधियमं तीर्थ अक्षधिव्याधंगच्चुनिमृ
 त ४ ॥ समयाग्रममगुरुहृत ४ ॥ निकषाग्रमंकुरुलंपाफं ॥ युतिग्रमं यज्ञान
 ४ ॥ कालाधनान्नैतन्नर्थः ३ पि ॥ मासमधीतकार्गपर्वत ४ ॥ अन्यगुमासस्य
 यत्रधीतकार्गस्यनुकदलपर्वत ४ ॥ कुरुनियुधनक्रियाग्रसाधनव
 ॥ क्रियासिद्धूपकात्रककत्र (१३) र्थरुनीयाविरुक्तिर्भवति ॥ क्रियाग्रयत्वं

कर्म दीनामपि संवति ॥ क्रिया सिद्धयुक्तानां साधनं ॥ हि न्न ४ गत्र लत्राम
 लत्रावत् ॥ लाकत्रावत् ४ कत्रागि लविदी ॥ लूपि वानत्रैर्युक्तं पुनः ॥ दान
 पात्रं संपुदानकात्रकं चतुर्थी विरुक्तिं कुरुवति ॥ वाक्कलत्राय वदविद्वद्गददाः
 ति ॥ क्कात्राय कन्नाददाति ॥ त्राक्षादलुं ददाति ॥ त्रऊकस्य वर्ममुददाति ॥ ॐ ह्य
 दो संपुदानकात्रकत्वात् लावा न्नचतुर्थी विरुक्तिं कुरुवति ॥ ननु दानस्य
 किल कर्त्तव्यं ॥ तदवाह ॥ स्वस्त्वनित्रमनं पत्रसत्त्वात्त्यादन्नदानं ॥

४४

त्रऊकस्य वर्ममुददाति स्वस्त्वनित्रमनं पत्रसत्त्वात्त्यादन्नदानं संपुदानकात्रकत्वा
 लावा न्नचतुर्थी ॥ ननु त्राक्षादलुं ददातीत्युपपन्नत्वात्त्यादन्नदानं वत्यव
 कथं न चतुर्थी ॥ तत्राह ॥ ददाति दलुं पुत्रेषामही पत्रं च वातिरुक्ति
 र्न्नदानं काम्यया ॥ यदीयं वा सनया सूया र्त्तदानं पात्रं कथिगं
 मूनी श्रेष्ठं ॥ तथा चार्कं ॥ संपुदानं तदवस्था नूपूजा नृगृह काम्यया ॥
 दायमानं संपुदानं तस्मात्स्वामित्वं लरुतं हि यत् ॥ विष्णुवाव (धोपच

मी॥विष्णुविहगस्तुयथावधिश्चलतयाञ्चलतयावाविचक्षितस्तुगुण
 दानयन्त्रमी॥आवताइश्वरदयतता॥रुहमाइवतनतिगंगा॥सर्वधर्ममी॥
 माह॥सपूज्याः॥यः॥पिताभतत्पुत्रपूजनागुत्रुर्भावचनयर्थकवीनानि
 सवद्वचः॥आध्यात्मसफमी॥आध्यात्मिकतत्त्वतयद्विधा॥ओषध्
 धिकं सामीयकं नृहिव्यायकं वैषयिकं नैमिदिकं ओषचात्रिकं चति॥
 ततोपध्मिकं शिविधी॥यद्गृह्णति॥व्यामवृत्तिः॥चकदगवृत्तिः॥या

८५

सिगच्छनिपक्षित॥व्यामवृत्तिः॥उल्लोद्धावति यद्गृह्णति॥वन्तया
 धुस्तिष्ठति॥चकदगवृत्तिः॥कटलगतकमात्राः॥सोवटगव॥सूत्रगत
 ।तिलेषुविद्यमतेलं ददिवक्तामृतेपत्रं॥युद्धसन्नकतधीनाः॥इह ल्य (य
 कत्रिल्लं गतं॥राव॥कियालद्वलं तगापिसफमी॥यसिद्धि कियया नृप
 सिद्धकिया ननंलक्ष्मणतत्त्वियालद्वलं वाधनं राव॥वर्षतिदध्वोत्र
 आयात॥परस्यं शुभालिनिपतिताः॥नानि॥कालं शयिसफमी॥वसन्त

काकिलाः स्वर्गं कर्षन्ति ॥ सत्रदिपूष्यवन्ति सफक्कदा ॥ विनासदनः
 मसमभनिर्द्धात्रलस्वम्यादिरिथ्या ॥ नमोत्रपियागद्वितीयायाषद्विरुः
 कायाहवन्ति ॥ विनापायं सर्वरुलति ॥ अन्नत्रल्लाद्वितीकिंजीविन
 ॥ अन्ननात्वामाद्विनित्रियादिपदाहु ॥ सद्सद्गर्माकं सार्द्धं समंथा
 गहतीया ॥ सद्गमिष्यल्लगतागुत्रु ॥ सद्गमल्लेगुमेरुला ॥ सार्कं नय
 नात्वात्तल्लद्वलादक्ता ॥ सार्द्धं धनिहिरुत ॥ समंचद्वलादितागुत्रु ॥

८६

नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा इलं वषट्थागचतुर्थी ॥ नमो नारायणाय ॥ स्वस्ति
 नमः ॥ सोमाय स्वाहा ॥ पिरुत्य ॥ स्वधा ॥ अलं मल्लामल्लाय ॥ वषट्ठि द्याया
 ॥ मरथागयंचमी ॥ मरुत्ताना नमस्कि ॥ अन्थाय हाद्विहाय ॥ निर्द्धात्रल
 षष्ठी ॥ निर्द्धात्रलं क्रियागुल्लजातिरि ॥ समदायात्पृथक्कत्रलं नरुषष्ठी
 सफभ्योत्रर्थकुररुदनास्ति ॥ क्रियायत्रालं रुगवदात्राधक ॥ अष्ट ॥ क्रि
 यायत्रषुवा ॥ गवां कृष्णलो ॥ संपन्नकीत्रालषुवा ॥ नमोषाद्विगिय ॥ अन्नतः

म४ नृनषूवा॥ स्वाग्नादिया (गषष्ठीसूफमीच॥ गवांसामी॥ गषूस्वामी॥ गवाम
धियति४॥ गषष्ठधियति४॥ नृवदायादसाक्षियुतिरूपसूत्रेया (गसफमीचः
षष्ठीचरुथो॥ गवादायाद४॥ गषूदायाद४॥ गवांसाक्षी॥ गषूसाक्षी॥ ग
वांसूत४॥ गषूसूत४॥ कुरुकार्यथा नकादो वाकृतिषष्ठी॥ कुरुनिः
कार्यचषष्ठीरुवत्यकादि वर्जिते कदने गद्ययूयमाने॥ व्याप्तनकृते ॥
व्याप्तस्यकृति॥ रात्रनंशवली॥ रात्रनस्यशवली॥ स्मननोचकार्यषष्ठी॥ स्मन

तोषतोषयूष्मानकार्यवष्टीविरुक्तिर्भवति॥चकात्राद्वितीया॥मातुः४स्रज
 ति॥मातरं स्रजति॥दत्तोहृतीयार्थचमीचवकाव्या॥कृन्नित्य४गच्छ४॥कृत
 कत्वेन॥कृतकत्वात्॥रुयदत्तोपंचमी॥रुयस्यदत्तु४कात्रली॥योनाद्विरुति॥
 व्याध्यादुस्रति॥विश्रुताताच्चकिं४॥षष्ठीदत्तुयथा॥ग॥कस्यदत्तात्रियंकन्या
 ॥ॐ॥हंरावहृतीया॥अन्यतुअन्यतापचात्र४॥कंवित्स्यकात्रमापन्नमित्कः
 राव४॥शिष्यपुरुषायश्चति॥संसात्रमसात्रलयश्चति॥यनाङ्गविकात्र४॥

यनभ्रूज्जनर्गिनाङ्गविकात्रालग्नभनगपिरुनीयाविरुकिर्हवति॥ भ्रू
 क्काकान॥ पादनखैउ॥ कर्तूनवधिन॥ विगषलव॥ मुखनगिलावन
 ॥ वपूषाचतुबुउ॥ अनिकर्तु॥ कृति॥ आयमानस्य कार्यभ्रायादानसंद्
 हवति॥ गगापादानयंचमी॥ यस्मात्तु जा॥ य जा॥ य न॥ गदुक्रमि॥ आदि
 यागवर्षचवी॥ आयाटलियूगादृष्टादव॥ चकावादन्यगपिरुवति॥ गद
 र्थचतुर्थीवक व्या॥ सयमायय र्थधरुनत्राधर्मयसं॥ धर्मभाकायत्तम

८८

धातीधनंदानायतुकाया॥ कृद्वादिथागच॥ कृनायकृद्वाति॥ मिनायद
 क्रति॥ गुलवभभ्रूयति॥ कषलापचर्पचमीचवक व्या॥ हर्म्यस्थुक्तः
 गहर्ममात्रुयप्रदभंरुत्यर्थ॥ आसनात्यदभ॥ आसनमात्रुयप्रद
 भंरुत्यर्थ॥ निमिक्कातात्कर्मसंथागसफमीचवक व्या॥ चर्मलिदीः
 पिनंदनिदनयाहनिर्कंउनी॥ बालष्वमनीहनिस्त्रिपूषलकाह
 त॥ विषयचसफमी॥ गर्कचतुत्र॥ षष्ठीसफमीचानादत्र॥ वदनाका

लतांगतल्लो न ॥ वदूषसाधूषवदस्त्वपि स्वयमार्थायाति साधूमा (र्ज
 ला वदूषसाधूषनिवात्रयस्त्वपि स्वयमनार्थायात्यसाधूमा (र्जला ॥ मा
 तापिगानूदता ४ पुवउति पूतु ४ ॥ अन्धाकपुथमा ॥ यदीदं कार्यमन्य
 नाख्याभनकृतावाचारं रुवति ॥ तदापुथमापुथाका वा ॥ घट ४ क्रियत
 ॥ पट ४ कार्य ४ ॥ कृच्छसिस्मादि ४ सर्वतु ॥ दधशुहाति ॥ पुनरुवकृत्वा
 ति ४ ॥ वउतीर्विनेरु ४ ॥ ॐ निकात्रकपुक्रिया ॥ ॐ ॥ अथार्थद्विरु

८८

किंविमिश्रणीपदानां समासनि नूपाता ॥ समासश्च नान्ता ॥ नाम्ना
 मन्वयथा गत्वसति समासो रुवति ॥ चमद्यारुद्धिगपिरुवति ॥ तता ला
 र्थापूत्रषस्यत्यादौ न रुवति ॥ ॐ त्यादौ विपत्रीतान्वपसमासनास्ति ॥ सच
 षद्विध ४ ॥ अथयीरावसूत्यनूषाद्व्यावदूवीहि ४ ॥ कर्मधनं यदि गु
 ल्यति ॥ तत्र पूर्वपदयुधना इवयीराव ४ ॥ द्विगुतत्यनूषोयत्रयदयुधनो ॥
 द्वन्द्वकर्मधनयोवाहयपदयुधनो ॥ वदूवीहिरन्यपदयुधन ४ ॥ तत्र

त्रया ३

क्रियासि संवंधात् ॥ उरुययदपुष्पभाविधिर्वल्वान् ॥ नेकपयमेकस्यः
 यमिकविरुक्ति केत्वं च समासप्रयाजनं ॥ अधिष्ठाति स्थितिः ॥ फीशः
 आदि तायेकवचनम् ॥ मियमधिकृत्य रुवतीति विग्रहः ॥ विग्रहग
 दनकिमुच्यते ॥ अत्रयथागमार्थसमर्पकः ४ पदसमूदाया विग्रहावाक्य
 मितियावत् ॥ कृतसमास इव यस्य पूर्वनिपातावकाशः ॥ पूर्व इव य इव
 यी लाव ॥ अवयवपूर्वपदसंनिधा इव य ४ भा इव यी लाव संस्कृत ४ समास

२०

रुवति ॥ तिमास संज्ञायां ॥ ॥ समासप्रत्ययथा ॥ समासवर्तमानाया
 विरुक्त ४ प्रत्ययचपत्ररुवति ॥ उक्तार्थनामप्रयोगः ॥ यायस्यलिंग
 स्यरुगपूर्वपदति ४ सातस्यापादीयता ॥ नामसंज्ञायां स्यादिविरुक्तिः ॥
 अधिष्ठाति स्थितिः ॥ सनयसकम् ॥ सा इव यी लावानयसकलिंग
 रुवति ॥ नयसकत्वाद्बुद्धत्वं ॥ अवयवी लाव ॥ अवयवी लावत्यनस्यावि
 रुक्तं लृग्वति ॥ अधिष्ठाति गृहकार्यं ॥ नायमतिक्रान्तमतिविकल्पना

वमनिकान्तमतिनूतलं॥ दुस्वादलसंश्रद्धाग्रीमिकात्राकात्रोवका
 यो॥ यथासादृश्या॥ यथागच्छसादृश्यावर्तमानसमस्यता॥ गतिकमन
 निकम्यकत्रातीतियथागति॥ पूर्ववत्समाप्तकार्यकृता॥ अनामनत॥ अ
 कात्रात्तादव्ययीहावात्यत्रस्थविरुक्तं नमुवति॥ अर्तवर्क्यित्वा॥ पंच
 मीवर्क्यित्वस्यर्थः॥ कृमृस्यसमीपमूपकृमृवर्तन॥ उपकृमृपः
 ॥ वाटाद्याः॥ तादृशं स्यात्तर्वात्रमृवति॥ उपकृमृनकृती॥ उपकृ

८९

मृवृतां॥ उपकृमृदहि॥ अननरंतिविमेषत्वात्पंचम्यां नमूनरवः
 ति॥ उपकृमृदानया॥ उपकृमृदग॥ उपकृमृनिधेहि॥ उपकृमृ
 निधेहि॥ अवधनत्वात्थयावतिच॥ अवधनत्वात्थयत्रिमासेनिधय
 यावतिगच्छपुयूक्तमानेइव्ययीहावसमाप्ताहवति॥ यावत्समन्ता
 लितावर्क्यावाक्कृत्वा नामनुयस्यति॥ यावदमनुमामंनुयस्य॥ अहः
 वानिनुस्त्वक॥ मरुिकानामहावावर्तनंतिनिर्मदिकंवर्तन

॥समासप्रत्ययानिषिद्धीलापः॥समादिर्विरुक्तिः॥अनाश्मपूर्ववत्
 ॥अनावाश्मयीलावः॥अतिवायालावः॥ ॥अमादोनस्यनृषः॥द्वितीः
 यायर्कपूर्वपदसुतिनस्यनृषसंज्ञकः॥समाहारुवति॥ग्रामं प्राप्ताग्रामया
 फः॥दातुलक्षिर्नंदातुलक्षिर्नं॥ययायदान्॥यपदान्॥वृकस्थारुयं॥वृ
 कुरुयं॥गङ्गा॥पृनृषः॥गङ्गापृनृषः॥अङ्कषूष्मोष्मः॥अङ्कषूष्मोष्मः॥क
 चिदमायनस्यपनत्वं॥अङ्गोमादिर्गं॥अङ्गिताग्निः॥पूर्वहृतः॥हृतयूः

८२

वृषः॥अङ्कः॥सायं॥सयाङ्कः॥दत्तानां गङ्गा॥गङ्गादत्तः॥समासकचिदेकः
 पञ्चलत्वंदुः॥अनात्वंदुः॥अनात्वंदुः॥अनात्वंदुः॥अनात्वंदुः॥अनात्वंदुः॥
 लयनानां॥विलयनः॥यानस्यवा॥सूत्रायाः॥पाटी॥सूत्रापाटी॥सूत्रापाटी
 ॥नुवंलोकिकप्रथागवभर्तृयं॥नश्चि॥नश्चिपूर्वपदसुतिनस्यनृषः
 रुवति॥समाससुतिनस्यनृषः॥कादादत्तः॥नवाङ्कः॥अङ्कः
 लः॥अङ्कः॥समाससुतिनस्यनृषः॥अङ्कः॥कादादत्तः॥नवाङ्कः॥अङ्कः

द्विद्वन्द्वदहावपूनस्त्ववर्तुता॥ तत्तादिनाकादिवर्क॥ अश्वदन्थाइनय॥ ध
 र्मविद्व॥ अश्वर्मा॥ ग्रहलहावाइग्रहलमिति॥ तदन्यतद्विद्वन्दहाव
 वूनस्त्ववर्तुता॥ तत्तादिनाकादिवर्क॥ नश्वर्क॥ नाक॥ नश्वर्ग॥ नागः
 ॥ नयसर्क॥ नकुलं॥ ॐ ह्यादय॥ गद्यानाकादोदृष्ट्या॥ तस्मादन्यस्तद
 न्य॥ तन्नविद्वस्तद्विद्व॥ तस्यश्वरावस्तदहाव॥ चार्थद्वन्द्व॥ स
 मृचयाचाचयतनेतनेया॥ तस्मादाश्वार्थ॥ तत्तुश्वर्नगुर्नवर्तु

२३

ह्यति॥ प्रत्येकभक्तिक्रियारिपर्वं विस्मयसमाशानास्ति॥ यत्रस्यत्रनि
 तयद्वयाप्रत्येकभक्तिक्रियारिपर्वच॥ समृचय॥ वराहिकामः
 टागंवा नयति कुभक्तिक्रियाद्वयसर्वच॥ न्नाचयपि समाशानास्ति॥
 ॥ द्वन्द्वइत्यत्रपुष्पनकात्राकात्राकानापूर्वनिपातावकाव॥
 पुष्पनापुष्पनस्यपुष्पनयाकपुष्पाग॥ पदश्वगुफश्वपदगु
 फी॥ उक्तार्थनामप्रयाग॥ अग्निश्वमात्रश्व॥ अग्नीमात्रश्व॥

हा काश्च हा अश्च हा कू हा (अ) ॥ श्री अष्टपुत्रा ॥ श्री पुत्रो ॥ धवश्च
 खदित्रश्च ॥ धवखदित्रो ॥ धवताद्वद्वपूर्वपदस्य चादीर्थावकव्य ॥ स
 मासा ना विधित्रनित्य ॥ अग्नीषामो ॥ ॐ द्वावृहस्यती ॥ अग्नाद ॥ सा
 मादीनां वत्वं वकव्यं ॥ आदिगदात् ॥ अग्निष्माम ॥ अग्निष्म ॥ ॐ तत्र
 तत्रया (ग) दिववनी ॥ नु कव हा वा वा समादात्रावकव्य ॥ गगनश्चकृग
 श्यपलागश्च ॥ गगकृगपलाग ॥ गगकृगपलाग ॥ वायुहगत्कवि

२४

दित्रत्रतया (ग) इपि नु कव हा व ॥ अन्त्यादीनां विरुक्ति लापपूर्वपदस्य
 सगगमावकव्य ॥ अन्त्या इत्या पत्रस्यत्र ॥ नु कव दिगुद्वे ॥ नु कव
 वर्तमानो दिगुद्वे नयं स कति (झे) रुवत ॥ संख्यापूर्वादिगु ॥ सं
 ख्यापूर्व ॥ समासा दिगुत्रिगघरा ॥ समादात्र अतः ॥ गीषदिगु ॥ समादा
 त्रार्थदिगु ॥ समासा रुवति तता इका ना ना दीप्पुत्य यश्च रुवति ॥ यस्य
 लाप ॥ दगमनां यमा नां समादात्रादगमामो ॥ यं वाग्नय ॥ समादः

[illegible]

वयपूवपदपि अन्वपदार्थशायाधन्यवद्वीदिनवतिहूपनार्थानुन
नशूननरङ्गवहिनरङ्गउच्चैरूपासककर्मकादयानिर्लीताशायास्यप
धनस्यैकदमविमेषनरायायगुह्ययगसुगङ्गलसंविज्ञानशा। ल
श्लोक। (लोयस्यसलम्बकलू॥ नगुक। (लूलम्बति॥ वद्वीहोविमेष
नस्यस्यनया॥ पूर्वमिपातावकव्य॥ विगामवापस्यसचिगुगु
॥ गृहधर्मायस्यसगृहधर्म॥ लाललाचनयस्यसलाललाचन॥

उवनकीर्तिर्यस्य सुउवनकीर्तिः॥ चक्रपात्नयो न॥ चक्रपात्ने
 यस्य स चक्रपालिः॥ ननु पालिचक्रः॥ गत्रुधुः॥ यद्गनाः॥ य
 जामधया नसूक्त॥ सचक्रिणः॥ सुसूक्तजयस्य सुसूक्तजः॥ सुसूक्तः॥
 दूर्ध्वधः॥ नृसूक्तत्वादत्तः॥ सावित्रिदीर्घः॥ धर्मादन्॥ वदूवीहो
 धर्मादन्पुत्र्यथारुवति॥ नायधया दीर्घः॥ हस्यः॥ सलोपः॥ सुधर्मा
 ॥ नृपवतिरार्था यस्य स नृपवहार्यः॥ अन्यार्थः॥ मीतिरन्यार्थ

तु

वर्तमानस्य कृत्वारुवति॥ पूर्वदा॥ समाप्तिरिति समा नाधिकत्र (अपूर्व
 स्य मीगदस्य पूर्वदा रुवति॥ पूर्वदावादीषानिवृत्तिः॥ आपाधि॥ त्रक
 लभस्यादी॥ नाम संज्ञायस्यादि॥ मरुतवा॥ नृपवहार्यः॥ वाग्र
 हन्तकल्यालीपियः॥ ह्यादी नरुवति॥ आदिगद्वाभा नृपार्या॥
 गोत्रीरार्था॥ मनाः॥ मरुग॥ दूरुग॥ श्रुता॥ चपला॥ वामा॥ वाम
 ना॥ वाक्कलीदका॥ नसिका॥ मेथिली॥ ह्यादयः॥ गद्वा॥ कल्यात्म

विन्नरुवनि॥उपधलापय्यरुवनि॥अक्रामधममध्मक॥अपुह्यय
 ॥टिलायाहावात॥उपधलाप॥स्वतदीनीप्रार्थिसर्ग॥मध्म
 क॥सुदिनाहं॥अनुटिलाप॥कवीनांराजाकविनाउ॥उप
 ह्यय॥उकागानुवन्धनीवर्थ॥क्षित॥कविनाजी॥अतास्म
 सर्वत॥नासीय॥नाऊयूरी॥वाक्कमनश्चवाह्ननसी॥अपुह्यय
 ॥दक्षिणध्मादिगिर्यथ॥दक्षिणपथ॥अपुह्यय॥नावति

८८

टिलाप॥अहमरात्रिअहमरातु॥अहमरातु॥वापूति॥अपुह्यय
 ॥टिलाप॥अक्रम॥प्रार्थिसर्ग॥हवा॥अ॥दीचतयश्चदि
 रा॥पंचचषट्पापंचषा॥असु॥अपुह्यय॥वहवागानायस्यांन
 गर्जसावदूनाजानगरी॥तिहाटिलाप॥आवर॥मियामित्याप
 ॥वहव॥कर्त्तनायस्यसुवदूकर्त्तकायाग॥पनवधूक॥रुलित
 ऊवक॥नदीपिरुक॥बूनेटीनस्क॥अह्यादीकपुह्यय॥कर्म

क्षत्रयः सुल्यार्थः ॥ यदद्वयमुल्यार्थं नुकार्थं निष्ठस्वसगिकर्मक्षत्रय
 ॥ समासारुवति ॥ नीलं च तदुल्यलं चति नीलात्यलं ॥ मत्रश्रुसोदलु
 धत्रश्रुतिमनूदलुधत्र ॥ ३॥ ॥ प्रकाचासोलता चति प्रकलता
 ॥ यमांश्रुसोकाकिलश्रुतिर्युक्काकिल ॥ ४॥ ॥ यूसु ॥ खयसंथागभाया
 वकाय ॥ ५॥ ॥ यूसुगदस्यसंथागखययत्रश्रुकात्रस्यलाया रुवति ॥
 नाम्नश्रुतासमास ॥ ६॥ ॥ प्रादत्रयसर्गस्य नाम्नश्रुदन्तनसहसः

८२

मासस्त्यत्रधारुवति ॥ प्रकर्षलवदतीति प्रवाद ॥ १॥ ॥ कर्मकातीति
 कर्मकात्र ॥ २॥ ॥ गंददातीति गंद ॥ ३॥ ॥ सहाद ॥ सादि ॥ ४॥ ॥ समाससति
 हादीनां सादि र्हुवति ॥ ५॥ ॥ सहयुगलवर्तनं ॥ ६॥ ॥ सयिलु ॥ ७॥
 सत्रय ॥ ८॥ ॥ सहस्रनित्रसांसधिसमितित्रय ॥ ९॥ ॥ सध्व ॥ १०॥ ॥ निर्यद ॥ ११॥
 क्षिभषदर्थः ॥ कास्त्यत्रषकदादय ॥ १२॥ ॥ कस्तिगार्थश्रुनैकदन्ती ॥ १३॥ ॥
 दर्थकदस्ती ॥ १४॥ ॥ क ॥ १५॥ ॥ कगदस्यकतकवकात्रादगारुवति ॥ १६॥ ॥ कद

॥ १७॥ ॥

ष्याकवाष्यामचाष्यापूनःकृत्तिता॥ कालवर्त्त॥ पूत्रषवा॥ कापूत्रष॥ कृ
 पूत्रष॥ षषदगनूतिहिता॥ षषउत्वा॥ दहदगधसूयत्रषउरुपदा
 दहृत्वरुवति॥ नाम्नाभालापग(षोसिलाय॥ षा७॥ संख्यायाःय
 कात्रेका॥ पूर्ववत्॥ षा७॥ षदनायस्यतिविग्रह॥ दहआदगारु
 वति॥ दहयस्ययविगानूम्॥ मिदंस्यात्सनायत्रावकव्य॥ अकात्रा
 नूर्वधर्थ॥ संख्यागनस्यलाय॥ दहप॥ संज्ञाय॥ षा७॥ वृहस्य

१००

ति॥ मदनष्टया॥ मरुत्तगद्यस्यठत्राकात्रादल्लरुवति॥ मरुत्तयत्र॥ दि
 वायावा॥ समाप्तकृत्तस्रिओगद्यस्ययावाद्य॥ द्यावाहमी॥ आकृ
 तिगलेयी॥ दंपती॥ याजायती॥ मायायती॥ अल्लकचित्॥ कचित्स
 माप्तकृदन्तद्विभक्तयिविरुक्तत्रल्लरुवति॥ कृष्णान्मूक॥ क्षाका
 न्मूक॥ अयूयानिग्रस्यस्ययूयानि॥ उग्रसिला॥ ददिस्युतीति
 । ददिस्युक्॥ दिगमिति कर्त्त॥ क(लु)काल॥ वायायुकि॥ दिगद

१२

८७॥ यश्च भो ह नः ॥ ॐ ह्यादि ॥ समाप्त समा नाधिक न ल सा क पार्थि
 वादी नाम अथ द ला पा व क व ॥ ॐ क पि य ४ पार्थि वि ४ ॥ ॐ क पार्थि
 व ॥ ४ व यू ऊ का वा झ ल ॥ ४ व वा झ ल ॥ ४ का र्थि नि ष्ठ स्त स त्थ क ॥
 वि रु क्त नै य द वा च्य त्वे सा मा ना धि क न ली ॥ ना द श्च द द ॥ द द समा
 स क चि दा दि प द स्य ला पा रु व रि ॥ व का ना द्वि क त्थ ॐ ति क्त चि त् ॥
 मा ता च पि ता पि त त्री ॥ श्च श्च श्च श्च श्च श्च श्च श्च ॥ दू हि ता च यू श्च

पूजो॥ अगाधं च॥ द्दं स मासि पूर्वपदस्य अकारान्नस्य भ्रातृत्वं हवति
॥ माता च यिता च मातायितृ प्रो॥ दहिता च पूतृश्च दहिता पूतृ॥ वायु
हस्तात् मातृप्रयितृ प्रो॥ इति निपात्यते॥ द्दं सर्वदिक्त्वं च॥ असा॥ व
र्षश्च ग्रास्यसाश्च॥ नृपश्च॥ वल्गुश्च भृशना॥ वल्गुश्च भृशना॥ हिना
र्थनिष्ठत्वं सति हिन्ना विरुक्ता नैपदवाचित्वं वैयधिकत्रल्यं॥ वैय
धिकत्रल्यवद्वाहो मध्यपदलोपश्च वक्तव्यं॥ उपपदगंधादिः

कात्रावकव्य॥ गन्धस्यगन्धिरादगन्धवकव्य॥ कसूदस्यगन्धं
 वगन्धायस्यसुकसूदगन्धि॥ हंसस्यगमनमिवगमनंयस्या॥
 हंसगमना॥ दिक्पंखापंखाया॥ दिक्पंखापंखीपंखायाविष
 ययत्रयदुल्यार्थसमस्यनतस्यपूषारुवति॥ अविग्रहानिरु
 समास॥ अन्यस्तस्ययदविग्रहाऽपि॥ दक्षिणमि॥ सफग्रमा
 ॥ इति समासप्रक्रिया॥ ॥ अथतद्विभानिपूषता॥ तर्थापूर्वा

१०२

कानापूर्वानां नामयनां अथानत्रयुगिपादनहितं इति तद्विभ॥ अ
 यथामूल॥ नाभ्याऽयथार्थमूलपुत्रयथारुवति॥ उपगमत्रयर्थं
 तिवाक्य॥ उपगमऽमूलं इति स्मिन्॥ समासयस्ययथात्रिनिषः
 श्रीलाय॥ लकात्रावृद्धार्थ॥ आदिस्वनस्यज्जितिववृद्धि॥ स्वनाः
 लमध्ययआदिस्वनस्तस्यवृद्धिर्कृवति॥ इति तिलिचतद्विभय
 नत॥ अत्रेओवृद्धि॥ उकोनस्यओकात्रावृद्धि॥ वाऽयस्यनवकान

॥ उकारस्य अकारस्य च मृगवृत्तिर्यकारस्य च यत्र ॥ नाम संज्ञायां स्याः
 दि ॥ ओपगवः ॥ वसिष्ठस्य यत्नमिति वाक् ॥ यस्य लापः ॥ वासिष्ठः ॥ अ
 तमस्यायस्यं लोभमः ॥ यस्य गगः ॥ हानुः ॥ अत्रुपस्य या हावस्व नत्वा द
 वृनरुवति ॥ मउत्रनि ॥ माह गद्यस्य मकारस्य उत्रुवति नि यत्र ॥ व
 ल्मीमाह लामपस्यं षा लामात्रुः ॥ द्वेमात्रुलः ॥ षषा लामात्रि ॥ षष
 गद्यस्य षकारस्य लत्वं रुवति ॥ मात्रि यत्र ॥ यद्वाक् क्वचित् अस्तानां ॥

१०३

मानस्य ॥ मृगवृत्तिर्यकारस्य च यत्र ॥ अकारान्ता च मृगवृत्तिर्यकारस्य च यत्र ॥
 यस्य लापः ॥ वासिष्ठः ॥ अत्रुपस्य या हावस्व नत्वा द
 वृनरुवति ॥ मउत्रनि ॥ माह गद्यस्य मकारस्य उत्रुवति नि यत्र ॥ व
 ल्मीमाह लामपस्यं षा लामात्रुः ॥ द्वेमात्रुलः ॥ षषा लामात्रि ॥ षष
 गद्यस्य षकारस्य लत्वं रुवति ॥ मात्रि यत्र ॥ यद्वाक् क्वचित् अस्तानां ॥

ॐ स्वर्गपुत्र्या रुवनि अयस्य ॥ गर्गस्यापत्यं गर्ग ॥ वात्स्य ॥ य
 स्य लोप ॥ अन्ननत्वात्वात्तुम्भिर्या वात्स्यागर्ग ॥ चकात्रादीपगर्ग
 ॥ नत्स्यापत्यं नाजयन ॥ चत्रस्यापत्यं चात्रायन ॥ पुनर्लानन ॥
 अन्ननत्वात्तुम्भिर्या नाजयनी ॥ चाजयनी ॥ आमुष्यायन ॥ अत्र
 पत्यं अत्रय ॥ कर्पत्रय ॥ कायय ॥ आदित्यत्रय ॥ अन्ननत्वा
 दीप्त्रायनी ॥ यस्य लोप ॥ सर्व ॥ चकात्रात्सर्वस्य पित्रहणी ॥ गर्ग

१०४

यापत्यं गंगय ॥ मस्त्रा अयस्य मादय ॥ पितृष्वस्य पत्यं पितृष्वप्रीय
 ॥ माहृष्वप्रीय ॥ अययनपूर्वस्य लाया इकड् ॥ अकड् त्रितिकिं का
 डवेय ॥ तन्नमृक ॥ अत्रयस्य मार्क ॥ अय ॥ कचित्पुत्रीति गमदक्षपितो
 म ॥ लुब्धकत्वे क्वचित् ॥ अयस्य इत्युत्पन्नस्य पुत्र्यस्य वदत्वे सति
 क्वचिद्विषयत्वं भवति ॥ गर्गस्यापत्यानि गर्ग ॥ वात्स्या ॥ अत्र
 य ॥ विहृदा ॥ गर्गस्यैकविदादिरुग्बुक्त्वा गिवावसिष्ठमतमद

गुरुत्वात्कृतिः पत्रस्य वक्रत्वे लुग्वतीति क्वचिद्वदन्तु या ॥
 दवतदमर्थ ॥ दवतार्थं दमर्थं चाकापुत्ययारुवन्ति ॥ द्वा दव
 नाञ्जस्यति नु चैह वि ॥ अक्षपुत्यय ॥ सोमो दवताञ्जस्यति सोम्यी ॥
 क्षपुत्यय ॥ उरुययस्य लाप ॥ नदादित्वा सोम्यी ॥ दवदलार्थ १०५
 मिदं वक्तुं देवदलं वक्तुं ॥ उकार्थं नाम प्रयाग ॥ नाम सर्वज्ञाया स्या
 दि ॥ सर्वज्ञा भूताम् ॥ क्वचिद्वया ॥ क्वचित्पूर्वोक्तं न यदा आवृद्धि

र्ववति ॥ आग्नीमात्रं कर्म ॥ सोहार्द सोहाग्यं ॥ अगुरुवन्तु
 वक्तव्य ॥ गमुत्सं समूह ॥ गमुं ॥ लितावा ॥ उकार्थं पुत्ययाः
 विषयान्तरं यिनितावारुवन्ति ॥ अङ्गान्ते र्यस्य सा ३ अगु ४ गिव
 ४ गस्य धनूना ऊगव ॥ अऊगव वा ॥ वा ३ व्यस्वने ॥ कृमूदस्य गन्ध
 वगन्धायस्य गिकृमूदगन्धि ॥ उयपदगन्धदिना वक्तव्य
 ॥ गन्धगन्धस्य वृका गन्धोदग ॥ सध्वपदलोप ॥ गस्यापत्य

श्रीचरितकोमूदगन्धः॥ अल्पस्ययः॥ आवतः॥ अशुभस्य
 रंशुभयग्रिमः॥ अल्पस्ययः॥ विष्णुत्रिदं वैष्णवं॥ अशुभत्रिदं
 मूर्त्तं॥ अल्पस्ययः॥ वाऽवयवस्वतः॥ अत्रिदंगव्यं॥ कचित्स्वतः
 वयकात्रः॥ कूलं वकुलं॥ अल्पस्ययानलितः॥ त्वन्मः
 दादलाकृतयुष्मदस्मदाः॥ लीयस्ययानलितः॥ तव हृदं त्व
 दीपं॥ मम हृदं मदीयं॥ कचित्स्वदाकृताप्रपत्नीया हृत्स्वकास्वतः॥

१०६

चपात्रवज्रवा हृतिदकात्रः॥ तथा तस्य हृदं दीयं॥ यस्य हृदं दीयं॥
 नृगस्य हृदं नृनदीयं॥ अल्पलीयस्ययानलितः॥ अत्राऽम्॥ चतुर्नश्लायः
 ॥ चतुर्नश्लायचलायारुवर्गिः अल्पस्ययलीयस्ययचपत्रं॥ नलितः॥ गुर्य
 ॥ गुरीयः॥ अन्यस्यदकः॥ अन्यदीयं॥ अर्द्धजत्रनीयं॥ अत्रापिनलितः॥
 कानकानक्रियायुक्तं॥ कानकादयुक्तायुक्तारुवर्गिक्रियायुक्तं कर्तु
 निकर्मलिचरिधयः॥ कृकृभननकं वरुं को कर्म॥ अल्पस्ययः॥ ३

कार्थानामयथाग॥ मथूनायाग्गागतामाथून॥ लिवाहृदि॥ ग्रमरुवागमा
॥ ल्धप्रत्यय॥ धूर्नंदतीति॥ क्षेत्रय॥ धूर्य॥ नलित्॥ कनप्रका॥
॥ कंलीनं॥ यं॥ कं॥ त्यतपत्ययारुवनि॥ रुवाद्यर्थेषूलित्वं चै
षावेकस्त्येन॥ कल्फटिरुव॥ काल्फटक॥ कल्फटक॥ ग्रमादा
गताननुजागीवाग्रामीन॥ ग्राम्य॥ णीन्प्रत्यय॥ ल्धश्च॥ धूर्त्रा
ल्लनक्त॥ सधौचिन॥ समीचीन॥ गितञ्जीन॥ णीन्प्रत्यय॥ य

श्रीरत्नसायादीर्घम् ॥ श्रीरत्नकान्तसायाहवम् ॥ पूर्वसायदीर्घसायादीर्घम् ॥

लोपश्च॥ अन्तस्य यका नस्य लोपारुवति यप्रत्ययं न प्रत्ययचपत्रं
॥ चकानाधिका नात्कचिदलियप्रपियकानस्य लोपारुवति ॥ कन्या
यारुव ४ कानीन ४ ॥ पृथनयूकापोर्लूमासीपोषीरतुरुव ४ पोषीन ४ ॥
यावा ॥ कुरुगदस्य ॥ यावारुवति ॥ द्रुगिय ४ ॥ कुरु ४ ॥ शुक्रियी ॥ द्रियं
॥ अक्षोर्दीव्यतीति ॥ आदिक ॥ गद्वं कत्राति ॥ गद्विक ४ ॥ व्यदवर्षं वन्धिप्रकि
या ॥ वैदिकी ॥ नदाद ॥ ॥ गीय ॥ तर्कक ४ ॥ गल ४ ॥ तार्किक ४ ॥ कप्रत्यः

१०१ नमः

यः॥यस्यलोपः॥त्यतनो॥किमादत्रयादर्हवायर्थस्युगनोयस्ययोरुवत
 ॥कुरुवः॥कुरुत्यः॥कुरुआगतः॥कुरुह्यः॥नरुवः॥नरुत्यः॥
 नरआगतः॥नरह्यः॥अयवः॥अयनः॥आरुवः॥अरुनः॥
 रुवः॥रुनः॥सदातनः॥प्रातनः॥चित्रतनः॥सायंतनः॥कि
 मादत्रिति॥आदिगद्यात्॥नृषः॥श्वः॥सद्यागृक्षकः॥रननृषह्यः
 ॥अह्यः॥श्वह्यः॥त्ययिरुयः॥चकारात्तनयस्यथापि॥स्वार्थश्चि

१०८

॥उक्ताः॥यस्ययाः॥स्वार्थपिरुवन्ति॥दवदरुनुवदेवदरुवः॥अगुस्वा
 र्थकः॥लितः॥चत्वात्रनुववर्षुश्चतुर्वर्षः॥स्वार्थल्यः॥लित्वाहृद्विः॥चान
 नुवचोत्रः॥सर्वश्रुत्यस्यलोपः॥नलीनयायूष्मदस्मदास्मावकादिः॥अ
 लीनयाः॥यस्ययाः॥यत्रयार्यूष्मदस्मदास्मावकमामकादिनादगुरुवः
 नि॥तावर्कः॥मामर्कः॥तावकीनः॥मामकीनः॥लीनः॥अनाम् ॥
 यवयात्रावयार्यूष्माकआदगुरुवति॥योष्माकः॥आस्माकः॥अ

लाथोष्माकीनः। आस्माकीनः। ञ्जीनः। वहल्यः। गुल्यासादृष्ट्यर्थ
 वेत्यस्यथारुवति॥ चक्षुषसदृगं चक्षुवन्मुखं॥ घटवत् उदरं। पतवत्
 कमलं॥ रावतत्त्वयलः॥ गदस्ययवृत्तिनिमित्तं रावस्तस्मिन्नावेत
 त्वयलः॥ खगपुत्यथारुवति॥ वाक्कलस्यरावावाक्कलता॥ तानस्य
 नित्यं श्रीतिंगत्वादाय॥ रावनयसकत्वं॥ वाक्कल्यं॥ वक्कल्यं॥ समनसा
 पूषात्संरावः॥ सोमनस्योसोराग्यं॥ वेदस्य॥ सर्वत्रयस्यलायः॥ स

१०८

माहात्रगाचयुलः॥ समाहात्रवाच्यतायुत्यथारुवतिगुल्यः॥ गुयात्सं
 समाहात्रः। शिता॥ आयः॥ चकानातृग्रमता॥ ऊनरा॥ वधूता॥ सुहा
 यता॥ वात्सक (धनकदास्तककोदकः॥ ख्यादोश्रुकपुत्ययः॥ यो
 वतमित्यादावल्॥ गार्हिल्यः॥ गालिकमित्यादोल्हः॥ कावचिकं
 । केदारिकं॥ ख्यादो॥ कपुत्ययः॥ कर्मल्यपियलवकाव्यः॥
 वाक्कलस्य॥ दं कर्मवाक्कल्यं॥ नाहः॥ दं कर्मनाहः॥ नाऊन्य

॥ नावतिटिलापः॥ वागदात्॥ साधधर्माद्यः॥ कर्मलिखाधुःक
 र्मल्यः॥ सहायीसाधुः॥ सत्यः॥ यगसहितैयगस्य॥ गगनकीः
 र्गः॥ सत्यः॥ ॐ स्वादीपुयागवसात्तु यै॥ **अथ यन्त्रपुस्तकं** नति
 त्वं॥ लाहिनादतिदिमन्त॥ लाहिनादतिदिमन्त॥ लावेथे ॐ मन्त्रपुस्तक ११०
 यारुवति॥ सचति॥ तित्वादि लापः॥ लाहितस्य लावा लाहि ति
 मा॥ अथ लावे अलिमां॥ नापक्षयादीर्घः॥ दसपक्षस्य लापः॥ ना

म्नाना लापः॥ पक्ष लाहितता॥ अन्ता॥ लाहितत्वं॥ अन्ता॥ ला
 हित्यं॥ लघिमा॥ लघुता॥ लाघवी॥ लघुत्वं॥ **अथ ॐ मन्त्रि**॥ सवर्गस्य
 रुवति ॐ मन्त्रियत्र॥ सचति॥ दसादलधः॥ सका नस्यति स्मरव्या
 ॥ गनमजिमा॥ कृकषिमा॥ पृथक् लावे ४ युधिमा॥ मृदा लावा मुदि
 मा॥ कृगद्यस्य लाव ४ कषिमा॥ रुगद्यस्य लाव मुषिमा॥ ॐ स्वादि ॥
 वहा लापा रुग् वहा ४॥ वहा नृन् नषामि मनामिका नस्य लापा रुवति

॥ वहाह्मनरुध्मदग ॥ आदिगद्वात् च कात्रस्य वक्तृत्वादिष्ठयसाः
 र्ग्रहली ॥ रुं मन् र्तिहिभा ॥ रुं कात्रलाप ॥ रुमा ॥ नुभं गज नुभ
 दवत् ॥ अस्मृत् (थमरु ॥ नाम्ना अस्मृत् (थमरु ॥ पुत्यथा रुवति ॥ अस्मा
 स्मिन्वा स्तीत्येति स्मिन्नर्थ ॥ उकात्रानुस्मिन्नार्थ ॥ विता नुम् ॥ अत्र
 ॥ साविति दीर्घ ॥ गमवा विद्यते इत्यति (गममान् ॥ (गममनी ॥ (गममन
 ॥ श्रीविद्यते इत्यति श्रीमान् ॥ यीति तस्या स्तीति यीतिमान् ॥ प्रलम्बा

१११

धीतस्या स्तीति धीमान् ॥ उकात्रानुवन्धत्वा दीप् ॥ धित ॥ (गममनी ॥ श्री
 मनी ॥ यीति मनी ॥ धीमनी ॥ नदीवदुप्य ॥ अं को मत्वर्थ ॥ नाम्ना
 मत्वर्थ अं को पुत्यथो रुवत् ॥ वेजयनी पताका ॥ अस्मिन्नः
 स्तीति ॥ वेजयन ॥ माया स्या स्तीति ॥ मायिक ॥ यस्य लापः ॥ इ
 कचिदपुत्यथालिदपि ॥ पुलास्या स्तीति या ॥ अडास्या स्तीति अडा ॥
 अर्च ॥ वार्ह ॥ माना पक्षद्विभो ॥ मकात्रानाम्नाकात्रापक्षदका

११२

गदस्य किं नादल्लारुवति॥ वकात्रात् वतुप्रस्ययस्य वकात्रस्य यकात्रा
वति॥ कियान्॥ आञ्चयेतदावा॥ नुनदक्षत्रात् वरुवति षडञ्च नाः
दल्लारुवति॥ वतार्चकात्रस्य चयकात्र४ आञ्चरुवति॥ चकात्रादका
त्रस्य यकात्र४॥ नुनाचान्॥ ञ्चान्॥ तुंदादनिल४॥ तुंदादर्जल्लदिलः
प्रस्ययारुवति॥ तुंदिल४॥ उदनिल४॥ पिक्किल४॥ रुनिल४॥ ओन्नस्य दन्नाद
४॥ ओन्नस्य दन्नादगद्गादप्रस्ययारुवति॥ दन्नु४॥ यस्य लाप४॥ अद्गाद

गालु॥ कृपालु॥ श्रुदालु॥ निदालु॥ दयालु॥ गीतालु॥ भक्तालु॥
 ॥ मायालु॥ कामालु॥ अस्मायामेधाय (गुह्य) इत्यर्थे विनूवक व्य॥
 गयस्वी॥ मायावी॥ भिक्षावी॥ शुग्नी॥ वाचाग्निनि॥ वाग्मी॥ गमनूवन्ध
 र्थ॥ चपाश्रुवज्जवा॥ आलाटोक्तस्मिन्नराविलि॥ वाचालु॥ वाचाट
 ॥ ण्वदपनिप्रमाफोक्तल्यदधगीया॥ ण्वदपनिप्रमाफः स
 र्वरू॥ सर्वरूक्तल्य॥ यद्दध॥ यद्दगीय॥ कविदध॥ कविद

११३

गीय॥ प्रसंख्यारूप॥ यमस्तावेयाकत्र (आवेमाकत्रलरूप॥ पा
 ग॥ कृत्सायी॥ वेयाकत्रलपाग॥ हनपूर्वत्य॥ वनट्॥ पूर्वदृष्ट॥ दृष्ट
 चन॥ दृष्टचनी॥ द्वि॥ टकान् ण्वर्थ॥ याचूर्यविकानपाधन्यादिषू
 यद्। अन्नं प्रचनमस्मिन् अन्नमयायरू॥ मृदाविकान॥ मृन्मयाघट
 ॥ मृदीयधनमस्य मृदीमया जाल्म॥ अमृन्मयश्चन्द्र॥ ल॥ ४॥ पूत्रीर्ष ॥
 टकान् ण्वर्थ॥ अन्नमयीकाली॥ नृवमन्यगुपि॥ तदधीभवेदवत्यः

गुणवक्ता ॥ व्याकृतमधीतवदवतिवेयाकृत ॥ अरुना ॥ १५४ ॥
 स्वयं ॥ १५५ ॥ वदति सा वल् ॥ न सन्धिधायूट ॥ सन्धिओवोरोसंधिओरथा
 ॥ सन्धिअथार्यकावकायथा ॥ संधिन ॥ स्वनस्यवृद्धिर्नरुवति किनुन
 थार्युजागमारुवति ॥ ॐ ॥ उट् ॥ ॐ ॥ यतावागमारुवत ॥ वलूवि ॥ ॐ ॥ वृ
 त्ताकिनुयुजागमारुवति ॥ यकोनात्यूर्वमिका ॥ वकातात्यूर्वमूका ॥
 ॥ यथादादित्वनस्यवज्जितिववृद्धि ॥ व्याकृत ॥ अल ॥ स्वयं ॥ अल

[illegible]

॥ मापियसी ॥ लघिष्ठ ४ ॥ पापिष्ठ ४ ॥ गुर्वादिनिष्ठमनीयस्तु गनादिहिला
 यम् ॥ गुर्वादिनिष्ठमनीयस्तु गनादिहिला यम् ॥ ॐ ॥ मनीयस्तु गनादिहिला यम् ॥
 ति ॥ अतिशयनगुत् ४ ॥ गनीयान् ॥ गतिष्ठ ४ ॥ गुनाकाव ४ ॥ गतिमा ॥
 यियगद्यस्यप्रादग ४ ॥ प्रमा ॥ प्रिष्ठ ४ ॥ प्रयान् ॥ स्तुविष्ठ ४ ॥ स्तुवि या
 न् ॥ पूर्ववत् ॥ ॐ ॥ लायाकागदादीयस ४ ॥ कागदात्यनस्य ॐ ॥ यमस ४
 ॐ ॥ कात्रस्यलापारुवति ॥ कायान् ॥ अष्ठ ४ ॥ दीर्घस्यदाद्यप्रादग ४ ॥

११५

अतिशयनदीर्घादादीयान् ॥ दाधिष्ठ ४ ॥ अतिशयनपुगस्य ४ ॥ प्रयान् ॥ प्र
 ष्ठ ४ ॥ वहानिष्ठयिष्ठ ४ ॥ वहुगद्यस्य ॐ ॥ यययपत्र ॐ ॥ कात्रस्ययिक्रवति
 ॥ वहास्तानिष्ठयिष्ठ ४ ॥ रुयिष्ठ ४ ॥ वहुवहालापारुश्चादगति ॐ ॥ ला
 य ४ ॥ किमावयादास्वाताञ्चतत्रतमथातामागमावकाव ४ ॥ किंनरां
 ॥ किंनरां ॥ कृतस्तनां ॥ कृतस्तमां यत्रमा ॥ वं ४ ॥ कृतस्तमां रघामा नम्
 कर्त्तुं ॥ उच्चैस्तनां गायति ॥ उच्चैस्तमां ॥ यत्रतिरनां ॥ यचतिरनां ॥ यति

तत्रां॥ य० तितमां॥ यत्रिमा॥ लदद्यादय॥ जानू र्द्युजलं॥ मानमातुट्॥
 पूनूषमातुं॥ मित्राद्वयसं॥ दयावर्द्धनं चैकस्य निज्ञानं॥ किमदिह्याउ
 तुतमोवक॥ क० तत्रा॥ रुवशा॥ का० व॥ क० तत्रा॥ रुवशां॥ ता० त्रिक॥
 ॥ रुवशा॥ र्यत० त्रका० कि० क० त० त० उ० क० ता० तु॥ संख्याय वि० ल० वा० व० क्ष० त० ल०
 द्वि० त्रि० त्रि० ती० य॥ द० य॥ ४ पू० न० ल॥ द्वि० त्रि० य॥ तु० या० ल० पू० न० ल॥ ४ तु० ४ सं० पु० सा
 न० ल॥ रु० ती० य॥ ४ षट्० चतु० त्र० त्र० ४ ४ ष० ४ चतु० लू० पू० न० ल० अ० तु० र्थ॥ का० सं

११४

य० य० त्रि० क० ति॥ क० ति० क० ति० य० या० त्रि० य॥ क० ति० य॥ क० ति० य० य० य॥
 पंचा० द० म० ४ पंचा० ना० पू० न० ल॥ ४ पंच० म॥ स० य० म॥ अ० य० म॥ न० व० म॥
 ॥ द० ग० म॥ द० व० ग० द० व० त॥ न० का० द० ग० द० र्थ॥ ति० त्रि० त्रि० त्रि० ला० य॥ न० क॥
 द्वि० त्रि० त्रि० ना० न० का० दा० तु० या० ४ ॥ न० का० द० ग॥ दा० द० ग॥ तु० या० द० ग॥ ॥
 अ० य० द० ग॥ विं० ग० त्रि० द० व० त्रि० म० ॥ विं० ग० त्रि० त्रि० म॥ विं० ग॥ विं० ग० ल० म॥
 ॥ विं० ग॥ ग० ता० द० त्रि० त्रि० ॥ ग० त० त्रि० म॥ संख्याया॥ ४ पु० का० त्रि० य॥ द्वि०

द्विगिगद्यास्यापत्रतडयपदसुतिः प्रत्ययाहवगिनकयलंद्विगिगद्यमागुसः प्रत्ययः गिगविद्वयपदसह्यपिनतिकचिदु
२

॥ गिधा। चतुर्द्धा॥ गुलवृद्धिः॥ द्विधा। गिधा। द्विधा। गिधा॥ क्रियायात्रावृ
लोकत्वम्॥ पंचवागालिति पंचकृत्वः॥ षट्कृत्वः॥ द्विगिरित्यासुः॥
॥ द्विगुरकं। गिगुरकं॥ द्विः पठितं। गिग्यठितं। वक्रादः॥ वक्र
वागालिति वक्रः॥ रुजिगः॥ कनिगः॥ गलगः॥ मूल्यगः॥ १११
स्तोकगः॥ मूलकगः॥ पादगः॥ तथायथो संख्यायां॥ द्वितयं।
त्रितयं। मूर्तिचतुः। द्वितयी। त्रितयी। द्वयं। त्रयं॥ यस्य लाघः॥ टिडु

त्वात्तुंरीया॥ द्वयी। त्रयी॥ ऊं घागद्याद्यतिऊवेन लादयावकव्यः॥ ऊं घा
लः॥ ऊं घिकः॥ ऊं घाकत्रिकः॥ मूर्तिपूर्यानि द्वास्त्रलो॥ मूर्तिनीयोत्तं॥
गघानियात्याः॥ कतिपयादयः॥ का संख्यायथेतिकति॥ सा संख्यायथा
गति॥ या संख्यायथापति॥ नृतिरद्वितयक्रिया॥ ॥ ६६३॥ नृथारख्यातय
क्रियानिरूप्य॥ क्षताः॥ वक्रामानाः॥ प्रत्ययाक्षताः॥ रूपाः॥ रू
सूक्त्यामित्यादिगद्याक्षतुसंज्ञारुवति॥ क्षतुत्वालिवादयः॥ सूचति

विधः॥ आत्मनोपदीपनस्यैष्यदुच्यते॥ आदन्नुदाहृतिः॥ अनुदाः
 हृतादिगच्छता आत्मनोपदीपयति॥ हित्वनिर्गतः॥ हितः स्वनिर्गतः
 गच्छता नृत् आत्मनोपदीपयति॥ आत्मगमिचरु लमात्स
 नोपदी॥ यत्र गमिचरु लोपनस्यैष्यदुच्यते॥ आत्मपदगच्छ ११८
 आनर्थनगमात्॥ आत्मनोपदीपयति॥ नृत्पदसंज्ञातस्या अनुगतार्थ
 ॥ आत्मार्थपदार्थपाका इति नृत्पदगच्छादित्यर्थः॥ आत्मार्थवत्। यत्र

र्थपचति॥ हृत्पादिवत्॥ यत्र गच्छता इत्यर्थः॥ पूर्वोक्तनिमित्तविधूतादहिता
 दन्यस्माद्वाताः॥ यत्र स्यैष्यदुच्यते॥ नवोपनस्यैष्यदुच्यते॥ निवादीनामः
 हृत्पादगच्छता नामाशानिनववचनानि यत्र स्यैष्यदुच्यते॥ हृत्पादगच्छता
 ॥ यत्र स्यैष्यदुच्यते॥ यत्रातिनववचनानि आत्मनोपदीपयति॥ हृत्पादगच्छता
 रुच्यते॥ वर्तमानः॥ तिप्पुतसूत्रम्॥ तिप्पुतसूत्रम्॥ तिप्पुतसूत्रम्॥ तिप्पुतसूत्रम्
 अर्कः॥ तिप्पुतसूत्रम्॥ तिप्पुतसूत्रम्॥ तिप्पुतसूत्रम्॥ तिप्पुतसूत्रम्॥ तिप्पुतसूत्रम्

अवर्तमानस्तस्मिन्वर्तमानेनृति (अथतिवादयः प्रत्यया रुवन्ति ॥
 नृस्यतिवादः यानि नीयानां लुति संज्ञा ॥ नाम्नि च येषां दिवास्मदि च रु
 तेऽप्यथ मम मध्यमा रु मा ॥ नामादिषूपपदेषु सत्सु लिहिकृति नृपः
 ह्यया रुवन्ति ॥ नाम्नि येषु माने च गद्वा दयेषु मानेऽपि प्रथमः
 पूनृषा रुवन्ति ॥ येषां दिमध्यमस्तथेवास्मद्वरु म ॥ कर्तृनिर्णयः ॥ यं
 पत्रमेपदं कर्तृनिरुवन्ति ॥ चका नादात्मनो दमपि ॥ गतुहूँ ह्यनस्मा

११८

त्यत्रमेपदिनाऽविक्रमत्वातिवादयाथा च न ॥ तत्रैकत्वविवक्षायां प्र
 थमेकवचने ह्यतिपुंति ह्नि न ॥ यकात्रापि कार्यार्थः ॥ त्रयकर्तृनि
 ॥ धनात्रयप्रत्यया रुवन्ति कर्तृनि विहितेषु तिवादिषु चतुर्षु दिषु पर्य
 नृषु पत्रे ॥ यकात्राऽविक्रमत्वात् रुदस्माय नार्थः ॥ गुणः ॥ धनात्रे
 ह्यरुतस्य नामिना गु (त्वा रुवन्ति पितृपत्र ॥ अवादः ॥ रुवन्ति ॥
 द्वित्वविवक्षायां रुतसुंति ह्नि न ॥ अयि लादि द्वित्वा ॥ यकात्रे तं तादिकं

विचहायन्नयप्रत्ययादित्संज्ञारुवति॥ किदित्यद्युसि॥ कितिदिति
वयप्रधारागुलानरुवति॥ द्युसंवर्क्यित्वाकृतदिव्वचनादसिपत्रु
गुलानरुवति॥ तगादित्वाहसिगुलपुतिषधेयिन्नूपप्रत्ययनिमित्ताः
गुलानरुवत्यवाश्राविसर्गः॥ रुवतः॥ वद्वत्त्वविवक्षायां रुवन्निर् १२०
तिह्निता॥ अद॥ अकारस्यलापारुवति॥ अकारानुकारचयत्र॥ रुव
नि॥ रुवसि॥ रुवथ॥ रुवथ॥ वसात्रा॥ अकारस्यवकारमकारचय

प्रभात्वरुवति॥ रुवामि॥ रुवावः॥ रुवामः॥ सत्राजाधर्मिकारुवति॥
त्वंसाधूरुवसि॥ अहमात्मविद्वामि॥ ल्यादियथाकव्यं॥ अद्यवधना
चयत्रषविषमाह॥ साधूः॥ सचत्वंचरुवथ॥ विधिसंज्ञावन
याः॥ यात्र॥ यातां॥ यूसू॥ यासू॥ यातम॥ यात॥ याम॥ याव॥ ३
याम॥ लीते॥ लीयाती॥ लीनने॥ लीथेस॥ लीयाथे॥ लीध्वी॥
लीय॥ लीवहि॥ लीमहि॥ विविधकर्तृयाथपदम॥ सहा

वनं कल्पनामूलविचार्य ॥ ततुयादादय ४ पु ह्यया रुवन्ति ॥
 नृषां लिङ्गि ति संज्ञायाति नीयानां ॥ या ॥ अका नात्यत्राया र्णी रुव
 ति ॥ गुत्रुत्वात्सर्वदश ॥ अ० ॥ रुवन्त ॥ रुवन्ता ॥ यस्मिन् ॥ अ
 का नात्यत्रस्य यस्मिन् अगमी रुवति ॥ रुवय ॥ आद्वि स र्ज ॥
 रुव ॥ रुवन्त ॥ रुवन्त ॥ यामियम ॥ अका नात्यत्रस्य यामि ० यं
 रुवति ॥ रुवय ॥ रुवन्त ॥ रुवन्त ॥ अथिष्ठा गुत्रुयुयुषका रुवदिः

१२१

तिविधिः ॥ रुवदसो वाक् (सर्वदयात्रगत्वादिति सं रुवन्त ॥ विरुक्ति यका नः
 स्वायस्य लायान रुवति विरुक्ति स्वरत्वाच्च ॥ अगी ४ यत्र लया ॥ गुप्ता गाम् ।
 अन्तु ॥ हिता गीत ॥ अनिष्ठा नाम यानां ॥ अगाम् ॥ अन्ता ॥ स्वा ॥ अर्थी ॥ धी ॥ जेप ।
 आवहेय ॥ अमहेय ॥ अयाफ पार्थ नामा गी ४ यत्र स्य सार्थ गीत नवा ॥
 प्रनर्ल यवर्तनी ॥ ततुतु वादय ४ पु ह्यया रुवन्ति ॥ नृषां लिङ्गि ति सं
 याति नीयानां ॥ गुक्ता स्ताव दानि विवावका य ॥ दि त्वे गुल्ल श रु वा

यना न्यादिभय ४॥ रुवतु ॥ रुवता द्वा ॥ रुवती ॥ रुवन्तु ॥ अमाह ४॥ अका
नादरुनस्य हलरुवति ॥ रुवा ॥ रुवातात् ॥ रुवतं ॥ रुवत ॥ रुवानि ॥
रुवाव ॥ रुवाम ॥ आयुष्मान् रुवतु रुवान् ॥ भूष्य यनाथा यतारुवसे
म्या ॥ अन्न अतन्न इतीत् ॥ दिप् ॥ ताम् ॥ अन्ते ॥ सिप् ॥ तम् ॥ त ॥ वाय ॥ तन्
॥ आती ॥ अन्त ॥ थस् ॥ आथ ॥ ध्वं ॥ ङीवेहि ॥ महि ॥ अतीताया नानुर्थाम
दया दर्घा कया ववागमिन्वा ४ पुथमयामदर्यसा यतन ४॥ अश्चरुव ४॥

अथरतन॥नअथरतन॥नअथरतन॥तस्मिन्ननअथरतन॥इतीरकात्तुः
दिवाद्यय॥पुह्यथारुवन्नि॥प्रषांसंस्तुलुपातिनीयानां॥दितिनि॥
ॐह्यतषामिकात्रउच्चात्रत्तार्थ॥तनानकात्रॐनतन्यकर्त्तृतीति॥
विलिखत्तार्थ॥वावसाने॥दकात्रस्यतकात्र॥दिवादावट्॥दिवा
दीपनक्षतानजगमीरुवति॥अरुवत॥अरुवतां॥अरुवेन॥अ
दा॥अरुव॥अरुवतं॥अरुवत॥अरुवे॥वमीया॥अरुवाव॥अ

हवामा॥ आरुवत्स्युग॥ ॐ ह्यादि॥ नुधवृद्धो॥ अकार आत्मनपदा
र्थ॥ रत॥ यत्रातिनववचनानिपूर्ववदचादिप्रयोग॥ नुधर्ग
नाथ॥ अकारात्प्रत्ययान्तरात्प्रथमं वन्धिन॥ अकारात्प्रत्ययं
कारुवति॥ अ॥ नुधर्ग॥ अ॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥
॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥ नुधर्ग॥
दि॥ विधिर्गुणवन्थात्रीतादीनिनववचनानिथाक्कानि॥ नुधर्ग॥ नु

१२३

(धयातां॥नधनन्॥नधथा॥नधयार्थं॥नधध्वं॥नधया॥नध
वहि॥नधमहि॥॥धर्मत॥साधून्धन॥श्री॥युननया॥सामादः
शारवणि॥नधतामा॥नधतामा॥नधकाम्॥नधस्व॥नधथाम्॥नध
धम्॥नधो॥नधवहे॥नधमहे॥ननयननतीनदिननवावःयेयस्य
शारवणि॥सत्राद॥सत्रादधर्मादितीया॥अगमा॥रुवनिदिवादीय
नर॥श्रु॥न॥नेने॥विरुकि॥स्वननदिनत्वाददनस्यात्॥नधत॥

जेधती॥जेधना॥जेधथा॥जेधथी॥जेधधी॥जेधो॥जेधवहि॥जेधः
 महि॥ॐ क द र्भ नी क द य ॥ अकात्रात्मनयदार्थ॥ॐ क र ॥
 ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥
 हा॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥
 याथी॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥
 क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥ॐ क र ॥

128

॥अनयत॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥
 क ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥
 र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥
 कात्र॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥
 द ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥
 म ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥जेक र ॥

पचम॥पचतु॥पचताडा॥पचती॥पचतु॥पच॥पचतात॥पचतै॥प
 चत॥पचानि॥पचाव॥पचाम॥अपचत्॥अपचती॥अपचन॥अप
 च॥अपचती॥अपचत॥अपच॥अपचाव॥अपचाम॥आत्मनोपच
 यि॥पचती॥पचत॥पचन॥पचस॥पचथ॥पचध॥पच॥पचाव
 ह॥पचामह॥पचत॥पचयाती॥पचतन॥पचथा॥पचयाथी॥पच
 धी॥पचय॥पचवहि॥पचमहि॥पचती॥पचती॥पचनी॥पचस॥

१२५

पचथी॥पचधी॥पचे॥पचावहे॥पचामहे॥अपचत॥अपचती॥अ
 पचन॥अपचथा॥अपचथी॥अपचधी॥अपच॥अपचावहि॥अ
 पचामहि॥गह्नतो॥हकात्रात्मनोपदार्थ॥आकात्रानुवन्धार्थ॥
 गती॥गत॥गन॥गत॥गती॥अगत॥गती॥गुल॥अयति॥
 अयत्॥अयतु॥अयत्॥दिकथ॥कयति॥कयत्॥कयतु॥अक
 यत्॥अकयति॥अकयत्॥अकयतु॥नस्यात्॥अकयतु॥नकय

तिनिपात्यतञ्जयत्॥ कृञ्भवे॥ कवति॥ कवत्॥ कवतु॥ अकवत्॥
 उहञ्भवे॥ अवति॥ अवत्॥ अवतु॥ आवत्॥ पूङ्ग्वभवे॥ पवति॥ प
 वत्॥ पवतु॥ अपवत्॥ ढकात्र आत्मनपदार्थः॥ सुवृत्ति॥ रुतत्र (ला॥ त
 त्रति॥ तत्रत्॥ तत्रतु॥ अत्रत्॥ नृनय॥ नत्रति॥ नत्रत्॥ नत्रतु॥ अत्र
 त्रत्॥ षट्पात्तन॥ ढकात्र आत्मनपदार्थः॥ दयत्॥ दयत्॥ दयत्॥
 अदयत्॥ धट्पात्तन॥ धयति॥ धयत्॥ धयतु॥ अधयत्॥ केलेत्रेभवे॥

१२६

नेत्राय॥ कायति॥ कायत्॥ कायतु॥ अकायत्॥ गमयति॥ गमयत्॥ गाय
 तु॥ अगमयत्॥ त्रायति॥ त्रायत्॥ त्रायतु॥ अत्रायत्॥ (हेतुर्षद्वयः॥ गमयति
 ॥ गमयत्॥ गमयतु॥ अगमयत्॥ स्नेहर्षद्वयः॥ म्नायति॥ म्नायतु॥ अम्नाः
 यत्॥ षट्पात्तन॥ त्रायति॥ त्रायत्॥ त्रायतु॥ अत्रायत्॥ धेष्वाभवे॥
 ॥ दायति॥ दायत्॥ दायतु॥ अदायत्॥ देह्यप्॥ दायति॥ दायत्॥ दाय
 तु॥ अदायत्॥ कञ्हासा॥ कृञ् आदात्र॥ नखमखसूर्य (ला॥ अ

७

पदार्थः॥ श्रीः॥ सर्वतु श्रीः॥ हरवति किं प्रत्ययपत्रयुः॥ नरु
वति किं संजीतिः॥ अतः॥ अयाताः॥ श्रीः॥ नारुः॥ श्रीः॥ पत्रस्या
नरुः॥ अतस्या नरुः॥ अगमा रुवति॥ अतः॥ नारुः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥
पत्रस्या नरुः॥ अतस्या रुवति॥ अतः॥ नारुः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥
नारुः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥
॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥ अतः॥

१२८

[illegible]

नादोपिनिपत्रश्रुवा दोविषयगुल्लावादलो॥ अयुकरुमि॥ अया
 लक॥ ववीमि॥ वुर॥ ४॥ अर्धमात्रियुवोस्वप्रमोवतिवर्तमान॥
 नृधमा॥ ४॥ विकनलस्यनाधमाप्यवर्तुवर्तुयात्रियुवोरुवर॥
 ॥ स्वप्रपत्र॥ अन्नकस्वप्रस्यसंथागपूर्वतुशोरुवर॥ ४॥ नानथा १२८
 व॥ ४॥ अन्नपिविषयउवर्तुस्यवत्तन्नरुवति॥ किन्तुउवादलो
 रुवति॥ रुद्रवरुत्रियादो अन्नपित्तिग्रहर्षरुक्षामप्रवश्रुदि

षयरुद्रनीति॥ वुरनि॥ ववीमि॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ ववीमि॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥
 आत्मनयदपि॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥
 ॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥
 ॥ अरुसुउसथप् अथुसुल्लथमआदमरुवनि॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥
 वनि॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥
 वीरुकात्रस्यनकात्ररुवति॥ अरु॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥ वुर॥ ४॥

॥ वृमशा विधि संलवनया ॥ वृयात् ॥ वृयाताम् ॥ वृयू ॥ वृया ॥ वृया
 तं ॥ वृयात् ॥ वृयां ॥ वृयाव ॥ वृयाम् ॥ वृवीत् ॥ वृवीयाताम् ॥ वृवीतन् ॥
 वृवी ॥ वृवीयाथाम् ॥ वृवीध् ॥ वृवीय ॥ वृवीवहि ॥ वृवीमहि ॥ वृ
 वाद्योयथमयुलस्तर्णीकात् ॥ वृवीत् ॥ वृतात् ॥ वृतां ॥ उवाच ॥ १३०
 वृवन्तु ॥ वृहि ॥ वृतात् ॥ वृतं ॥ वृत् ॥ वृवानि ॥ वृवाव ॥ वृवावे ॥ वृवाम् ॥ वृ
 ती ॥ वृवाताम् ॥ वृवतां ॥ उवा ॥ आता ॥ काद नर ॥ वृथ ॥ वृवाथी ॥ वृध् ॥

वृवे ॥ वृवावहे ॥ वृवामहे ॥ युल ॥ दिवा दावत् ॥ अ वृवीत् ॥ अ वृताम् ॥
 अ वृवन् ॥ णीकात् ॥ अ वृवा ॥ अ वृतं ॥ अ वृत् ॥ अ वृवं ॥ अ वृवा ॥ अ वृ
 म ॥ आत्मनेपद ॥ अ वृत् ॥ अ वृवाती ॥ उवा ॥ आता ॥ काद नर ॥ अ वृव
 त ॥ अ वृथ ॥ अ वृवाथाम् ॥ अ वृध् ॥ अ वृवि ॥ अ वृवहि ॥ अ वृमहि ॥ उ
 वमन् ॥ इयित् ॥ ग्विकत् ॥ ल ड वृथा ॥ ख्याय कथन ॥ यावायन ॥ डास्वप्र ॥
 स्फारु क ॥ वागतिर्वधनया ॥ प्रायूत् ॥ ल दीको ॥ मामान ॥ लाग्रह

॥ नाना ॥ स्त्रालोच ॥ ॐ ह्या दया ॥ भूपिषा तु पाभदवगन्तव्या ॥ ॥ ॐ
 दानी लुग्निकतना ॥ स्यापि रुद्राद्यादिगलस्य विगलष ॥ दूदानादन
 या ॥ द्वादद्विष्ट ॥ दू ॐ ह्या दार्तना दूत्यन्नस्यापा लुग्नवतिरस्मिन्नस
 तिक्कभार्दिर्वचनम् ॥ सस्वनादिर्द्वित्रिदि ॥ सस्वनाद्या ॥ वयवा ॥ द्वित्रिक्का १३१
 द्विर्द्विवति ॥ कूलम् ॥ पूर्वसंवन्धिना ॥ कवार्जह का तथा श्रुत्वं रुवति ॥ व
 र्गचतुर्थस्य हस्यसर्व ॥ मपानां ऊवचया ॥ पूर्वसंवन्धीनां ॥ मपा
 सस्वनाद्या ॥ वयवस्य स्या यथा ॥ वयवस्य स्येव द्वित्वं न तु यथा
 वयवस्य द्वित्वं ॥ उदाहरणं तु ऊगा गात्र ॥ ३

नीजवाशपाहवनि॥सधटघहानीजदउगवारुवनि॥खरुक्क०थ
नीवतठकपाहवनि॥रुहाति॥रुद्रा८॥द्व८॥द्वित्रकादूहप्रस्यानी
रुह्यतस्यारुवनि॥रुद्वति॥गुल८॥किलात्व८स८॥रुहाषि॥रुद्रथ
८॥रुद्रथ॥रुहामि॥अर्धमार्वालाप८॥प्रत्यथसंवन्धिनउक्ताप्रत्यवः
मा८पत्रयार्वालापाहवनि॥कविदन्त्यगपि॥रुद्र८॥रुद्रव८॥रुद्र८
॥रुद्रम८॥रुद्रयात॥रुद्रयाताम्॥रुद्रयू८॥रुद्रया८॥रुद्रयान॥

रुद्रयात॥ रुद्रयां॥ रुद्रयाव॥ रुद्रयाम॥ रुद्रसिति वादिर्विष्णो वाः
 वका वा॥ अग्निहातुं॥ रुद्राति॥ पालिनीयानां संज्ञात्तात्॥ रुद्रादो ॥
 गुल॥ रुद्रातु॥ दित्वा न्नगुल॥ रुद्रतात्॥ रुद्रतां॥ रुद्रित्यतु॥
 रुद्रतु॥ रुद्राद्वा दूतस्य रुद्रिर्वक वा॥ रुद्रधि॥ रुद्रतात्॥ रुद्र
 री॥ रुद्रत॥ पित्वा तूगुल॥ रुद्रवानि॥ रुद्रवाव॥ रुद्रवाम॥ दि
 वादावत्॥ गुल॥ अरुद्रातु॥ दित्वा न्नगुल॥ अरुद्रतात्॥ रुद्र॥

१३२

द्वित्रकादूतस्य न उत सूरुवति॥ कृतद्विर्वचनादसिधप्रगुरुवति
 त्युक्तत्वात् गुल॥ अरुद्रवृ॥ गुल॥ प्रार्षिस्तर्ज॥ अरुद्रा॥ अ
 रुद्ररी॥ अरुद्रत॥ अरुद्रवं॥ क्वचिदन्यगुपीत्युक्तत्वात् धमा न
 युक्ता गलोप॥ अरुद्र॥ अरुद्रव॥ अरुद्र॥ अरुद्रम॥ अरुद्र
 दूगता॥ रुद्रात् अस्मन्नपदार्थ॥ अकात्रात्वाद्यादितरन्ति वि
 लम्बनार्थ॥ रुद्रात् अन्ति हि ग॥ क्वायद्विष्यति द्वित्वं॥ अयकरुति

॥ अद्मालूक् ॥ ऊस्व ॥ पूर्वसंवन्धिना दीर्घस्य ऊस्वरुवति ॥ ह्रस्व
लूकि ॥ गृहृषधत्रलपाषनया ४३ हादुगतो ॥ मांमान ॥ नृगेषां
पूर्वस्या कात्रस्य कात्रादल्लारुवति ॥ लूकि सति ॥ द्वस्तो ॥ लायाः
नूवल्गन्नीकात्रयद्विभूक्ता धातो नाकात्रस्य लाया रुवति ढितिस्व
त्रयत्रन्नीकात्रयद्विहितस्य यत्र ॥ जिहीता ॥ जिहाता ॥ जिहता ॥
जिहीषा ॥ जिहाथ ॥ जिहीध्व ॥ जिहा ॥ जिहीवह ॥ जिहीमह ॥ वि

१३३

(को ॥ जिहीता ॥ जिहीयाताम् ॥ जिहीतन् ॥ जिहीथा ४ ॥ जिहीयाथी ॥
जिहीधी ॥ जिहीय ॥ जिहीवेहि ॥ जिहीमहि ॥ आगी ॥ जिहीतां ॥ णिः
हातां ॥ जिहतां ॥ जिहीषा ॥ जिहाथी ॥ जिहीधी ॥ जिहो ॥ जिहावहे
॥ जिहामहे ॥ अजिहीता ॥ अजिहातां ॥ अजिहता ॥ अजिहीथा ४
॥ अजिहाथाम् ॥ अजिहीधी ॥ अजिहि ॥ अजिहीवेहि ॥ अजिही
महि ॥ गृहृषधत्रलपाषनया ४ ॥ पूर्वसंवन्धिना जकात्रस्या

कायादभिरुवति॥सयानां ऊवचपांतिवकात्र॥रुआंलुकि
 ण्तिपूर्वभूयण्॥गुण॥विरुहि॥विरुत॥विभुति॥वि
 रुषि॥विरुथ॥विरुथ॥विरुम्भि॥विरुव॥विरुम॥विष्म
 ॥विरुयात॥विरुयातां॥विरुयू॥विरुया॥विरुयात॥
 विरुयात॥विरुयां॥विरुयाव॥विरुयाम॥आभी॥विरुर्गु
 ॥विरुतात॥विरुतां॥विभुतु॥विरुहि॥विरुतात॥विरुत॥

१३४

विरुत॥विरुताति॥विरुताव॥विरुताम॥अनयतन॥दिश्याहसा
 त॥दमादुरुत्रयादिषसिपण्थयतयालपिरुवति॥अविरु॥अ
 विरुतां॥अविरुत॥अविरु॥अविरुत॥अविरुत॥अविरुत॥
 अविरुव॥अविरुम॥मादमानि॥दकात्रआत्मनयदार्थ॥सा
 धनीकापूर्ववत॥मिमाता॥मिमीता॥मिमीतां॥अमिमीत॥अ
 ॥त्यागअहाकुत्याग॥काददिश्या॥दस॥अयू॥अयालुक्॥कदायू॥

॥ मया नी अवचया ॥ उदाति ॥ अहमहमिका विरू ॥ ४ ॥ दित्वा हावा न
 नीकाय ॥ उदीत ॥ अविद्यत ॥ आलाप ॥ उदति ॥ उदीथ ॥ उः
 दीथ ॥ उहमि ॥ उदीव ॥ उदीम ॥ उहमर्थादादावा लायावकाय
 ॥ उकात ॥ उकाता ॥ उका ॥ उका ॥ उका ॥ उका ॥ उका ॥ उका ॥ उ
 काव ॥ उकाम ॥ उहउ ॥ दित्वा दीय ॥ उदीतादा ॥ उदीता ॥ उहउ ॥ दि
 त्ति ॥ अउ ॥ नी वीहो ॥ ॐ श्रु ॐ श्रु ॐ ॥ उहमहोयप्रवा ॥ का न ॐ

१३५

का न श्रु हवति ॥ उदिदि ॥ उदीदि ॥ उदादि ॥ उदीतादा ॥ उदीत ॥
 उदीता ॥ उहानि ॥ उदावा ॥ उहाम ॥ अउहात ॥ अउदीता ॥ अउ
 उह ॥ उहला ॥ उहियत्र आका न स्या लाया हवति ॥ अउरू ॥
 ॥ अउहा ॥ अउदीत ॥ अउदीता ॥ दित्वा हावा न आका न लाय ॥
 अउदी ॥ अउदीव ॥ अउदीम ॥ अनपूदा ॥ अनपूका नापित
 मिम ॥ का अर्थ ॥ ॥ का न उरु हय नार्थ ॥ कादर्थि ॥ अय्वाह

नि॥ श्रुत्वा तु॥ अस्व॥ ददाति॥ गर्भं विप्राय य ऊ मान॥ दाद॥ द्वि
नूक्लस्य दादत्रा कात्रस्य लाया रुवति दितियत्र॥ द्दक्ता वित्यस्या यः
वाद॥ स्वप्नवया मसाना॥ दह॥ द्वित्रिति॥ ददाति॥ ददासि॥ द
ह॥ दह॥ ददामि॥ दद्व॥ दद्व॥ ॥ या दादो सर्वगु कात्रलाय॥
॥ दद्यात्॥ दद्यात्ता॥ दद्यु॥ दद्या॥ दद्यातं॥ दद्यात॥ दद्यां॥ दद्याव
॥ दद्यामो॥ गुवायो॥ ददातु॥ ददाद्वा॥ स्वप्नवपतिर॥ दहो॥ दद

उ॥ दाहो॥ दादीनां होयत्र पूर्वस्य लाया रुवति॥ क्षमा नाकात्रस्य व
 नुकात्र॥ दहि॥ दला द्वा॥ दलं॥ दलु॥ ददनि॥ ददावा॥ ददाम
 ॥ दिवा द्यो॥ अददात्॥ अदली॥ अनउरा॥ उखा लाय॥ अददू
 ॥ अददा॥ अदलं॥ अदलु॥ अददां॥ अदद्व॥ अदद्व॥ दद
 ना लाय॥ आत्मनय दधि॥ पूर्ववदा कात्र लाय॥ दलु॥ ददा
 ता॥ ददमा॥ ददु॥ ददाथे॥ दद्व॥ दद्वहा॥ दद्वह॥ दद्वो॥ द

दीता॥ददीयातां॥ददीनन्॥ददीथा॥ददीयाथां॥ददीधी॥ददीः
या॥ददीवहि॥ददीमहि॥दुवादो॥दली॥ददातां॥ददतां॥दत्स्व॥
ददाथां॥ददुधी॥ददो॥ददावहे॥ददामहे॥अदल॥अददातां॥
अददता॥अददथा॥अददाथां॥अददु॥अददि॥अददहि॥अ
दमहि॥रूपारूपात्रलपाधथा॥पूर्ववह्नूगदि॥उहययदी॥
दादर्हिअ॥मयानांऊवयया॥मवानांदचया॥दक्षति॥खपू

रुल्लिपलि॥ पूर्वपदस्य दिति सप्तमि॥ मरुतस्य धमा॥ पूर्व
 पदकात्रस्य धकात्रादन्त्यरुवति दिति सप्तम्यत्र दादत्रित्या का
 त्रलाय॥ धल॥ दधति॥ दधसि॥ धत्तु॥ धत्तु॥ दधमि॥
 दध्यादध्ना॥ यादावालाय॥ दध्नात्॥ दध्नाम्॥ दधु॥ दध्या॥ द
 ध्नाम्॥ दध्नात्॥ दध्नाम्॥ दध्नाव॥ दध्नाम्॥ दध्नाम्॥ दध्नाम्॥
 ॥ धत्ता॥ दधु॥ धत्ति॥ धत्ता॥ धत्ता॥ धत्ता॥ दधनि॥ दधव॥ दध

मा॥दिवाद्यो॥अदधत्॥अधत्तां॥अदधू॥अनउत्तु॥उत्तात्ताप
 ॥अदध॥अधत्तां॥अधत्ता॥अदधत्तां॥अदधत्ता॥अदधत्ता॥आत्मन
 पद॥धत्ता॥दधत्ता॥दधत्ता॥धत्ता॥दधत्ता॥धत्ता॥दधत्ता॥
 दधत्ता॥पादाद्यो॥दधीत्ता॥दधीयात्ता॥दधीयत्ता॥दधीयात्ता॥दधी १३८
 यात्ता॥दधीयात्ता॥दधीयात्ता॥दधीयात्ता॥दधीयात्ता॥दधीयात्ता॥
 दधत्ता॥दधत्ता॥धत्ता॥दधत्ता॥दधत्ता॥दधत्ता॥दधत्ता॥दधत्ता॥

॥दिवाद्यो॥अधत्ता॥अदधत्तां॥अदधत्ता॥अदधत्ता॥अदधत्ता॥
 अधत्ता॥अदधत्ता॥अदधत्ता॥अदधत्ता॥अदधत्ता॥अदधत्ता॥
 ह॥दिवृत्ता॥विजिगीषाव्यवहारात्तुतिरुतिमदमादकानिग
 तिषू॥दिवृत्तिपूवृत्तिरुति॥दिवाद्यो॥दिवाद्यो॥दिवाद्यो॥
 हवृत्तिचतुर्ष्वपत्रेषू॥अधत्ता॥अधत्ता॥अधत्ता॥अधत्ता॥अधत्ता॥
 र्यत्तात्तात्ता॥दीवृत्ति॥दीवृत्ति॥दीवृत्ति॥अधत्ता॥दीवृत्ति॥दी

व्यथ॥ दीव्य॥ वमी॥ दीव्यामि॥ दीव्यावं॥ दीव्यामः॥ यावृति
 ॥ दीव्यत्॥ दीव्यतां॥ यस्वृत्॥ दीव्यय॥ दीव्य॥ दीव्यतां॥ दी
 व्यत॥ यामि॥ दीव्ययं॥ दीव्यवा॥ दीव्यम॥ दीव्यतु॥ दीव्यतादा
 ॥ दीव्यतां॥ दीव्यतु॥ दीव्य॥ दीव्यतादा॥ दीव्यतां॥ दीव्यत॥ दीव्या १३८
 नि॥ दीव्या॥ दीव्याम॥ मृदीव्यत्॥ मृदाव्यतां॥ मृदाव्यन्तः
 मृदीव्य॥ मृदीव्यतां॥ मृदीव्यत॥ मृदीव्यं॥ मृदीव्यावा॥ मृदी

व्याम॥ ॥ चर्वसिवृत्तुसक्तानदिवादय॥ सीव्यति॥ सीव्यत्॥
 सीव्यतु॥ मृसीव्यत्॥ ॥ नृतिगविक्रय॥ नृन्नुवन्ध॥ दिवा
 दय॥ नृत्यति॥ नृत्यत्॥ नृत्यतु॥ मृनृत्यत्॥ ॥ नृसीउद्वेग॥ नृ
 त्यति॥ नृत्यत्॥ नृत्यतु॥ मृनृत्यत्॥ ॥ नृदीर्घदन्त॥ नृद्यति॥
 नृद्यत्॥ नृद्यतु॥ मृनृद्यत्॥ ॥ नाधसाधसंसिद्धो॥ नाधति॥
 नाधत्॥ नाधतु॥ मृनाधत्॥ ॥ पूषय॥ पूषति॥ पूषत्॥

पृष्यतु॥ अ० पृष्यतु॥ ॥ शिष्य आतिंगन॥ शिष्यति॥ शिष्यतु॥
 शिष्यतु॥ अ० शिष्यतु॥ ॥ मूह वैचिह्न॥ मूहति॥ मूहतु॥ मूह
 तु॥ अ० मूहति॥ ॥ नम्र अदक्षि॥ नम्रति॥ नम्रतु॥ नम्रतु॥
 नम्रति॥ ॥ शिष्यप्रउपकायालधार्युगन्तिगुलनस्योतु॥ हयपु
 लन॥ हयति॥ हयतु॥ हयतु॥ अ० हयति॥ नुर्वद्वयति॥ नुर्वद्वय
 तति॥ अ० नुर्वद्वयति॥ अ० नुर्वद्वयति॥ अ० नुर्वद्वयति॥ अ० नुर्वद्वयति॥

उत्पत्ति १

कात्रलकात्रथा॥४॥सुकात्रनकात्रोहवत॥४॥स्वाधर्नू॥स्वादगर्जल
नूयुत्यथारुवति॥चतुष्पत्र॥यागहियथाग॥यादधतधमोसू
नमाय॥यादत्रूपसर्गत्यत्रर्षास्वादीनान्नमादीनाश्चक्षुर्नासुकात्र
नकात्रथास्तोपूर्वराविनाववषकात्रलकात्रोहवत॥४॥गथगथव
निमिरुषसत्सु॥नूय॥विकत्रलस्यनूयुत्यस्यउयुत्यस्यचतु
ल्लरुवतिथितियत्र॥श्रुतिषूल्नगिहामिहामयाजी॥सूत्र॥४॥सू

चकि॥सुभाषि॥सुनथ॥सुनथा॥सुनामि॥अर्चमा र्चलाय॥सुच
 ॥सुनव॥सुन्म॥सुनम॥सुन्यात्॥सुन्यातां॥सुनय॥सुनः
 या॥सुन्यातां॥सुन्याता॥सुन्यां॥सुन्याव॥सुन्याम॥सुन
 याम॥**पुत्ययस्यदित्वा नगु ॥**सुनागु॥सुनगात्॥सुनतां॥सु
 न्वलु॥**अर्चद॥**पुत्यसर्वमि नउका मादरुत्रस्यरुर्गुवति॥वा
 ग्रहन्संथागदरु नस्यतदूत्तदूतनूकन(॥०॥स्यस्यत्तदूहीत्य

१४१

पुनरुवति॥सुन॥सुनगाद्वा॥सुनतां॥सुनता॥सुनवानि॥सुनवा
 वा॥सुनवाम॥**असुनात्॥असुनतां॥असुन्वन्॥असुभा॥असु**
नतां॥असुनता॥असुनवां॥अर्चमा र्चलाय॥असुन्वा॥असुनव
॥असुन्म॥असुनम॥॥पितृपत्रसर्वतुनूप०तिगु ॥**अस**
नपदपि॥सुनतां॥सुन्वातां॥आता मादनम॥सुन्वता॥सुन
ष॥सुन्वात्थ॥सुन्व॥सुन्व॥सुन्वद॥सुन्मद॥सुनवद॥सुनम

ह॥ सूचीत॥ सूचीयातां॥ सूचीतन्॥ सूचीथा॥ सूचीयाथां॥ सू
चीर्था॥ सूचीया॥ सूचीवहि॥ सूचीमहि॥ सूनुतां॥ सूचातां॥
सूचतां॥ आतातादनत॥ सूनुव॥ सूचाथां॥ सूनुर्धं॥ सून
वे॥ सूनवावहे॥ सूनवामहे॥ असूनत॥ असूचातां॥ असूचता॥
असूनुथा॥ असूचाथां॥ असूनुर्धं॥ असून्चि॥ असूचहि॥
असूनुवहि॥ असून्महि॥ असूनुमहि॥ ॥ त्रुधितत्रावनला॥

[illegible]

[illegible]

षष्ठ्यैकवचनसिधिरूपधकात्रस्यविकल्पनदकात्रकृते॥८३॥
 स४॥दकात्रस्यसकात्रारुवतिसिधिविषय॥सस्यविस्तर्ज४॥
 अत्रूल४॥अत्रूलत्॥अत्रूँ॥अत्रूँ॥अत्रूलषी॥अत्रूँ॥अत्रूँ॥
 ॥॥आत्मनेपद॥गत्थ४॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥
 दनत४॥स्वसचयासहाना॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥
 द॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥त्रूँ॥

॥ त्रुंधीध्या ॥ त्रुंधीया ॥ त्रुंधीवहि ॥ त्रुंधीमहि ॥ त्रुंडी ॥ त्रुंधता ॥ त्रुंधता ॥
 त्रुत्वा ॥ त्रुंधाथा ॥ त्रुद्धा ॥ त्रुलधे ॥ त्रुलधवहे ॥ त्रुलधमहे ॥ त्रु
 त्रुद्ध ॥ त्रुत्रुंधता ॥ त्रुत्रुंधता ॥ त्रुत्रुद्धा ॥ त्रुत्रुंधाथा ॥ त्रुत्रुद्ध ॥ त्रुत्रुंधि ॥
 त्रुत्रुंधहि ॥ त्रुत्रुंधहि ॥ ॥ सुवंच्छिदित्रुंधीकनला ॥ च्छिनलि ॥ १४४
 च्छिंयात् ॥ च्छिनतु ॥ त्रुच्छिनतु ॥ च्छिंरु ॥ च्छिंदनि ॥ च्छिनत्ति ॥
 च्छित् ॥ च्छित् ॥ च्छिनमि ॥ च्छिंद ॥ च्छिंम ॥ च्छिंयात् ॥ च्छिंयात् ॥

च्छिंयु ॥ च्छिंया ॥ च्छिंयात् ॥ च्छिंया ॥ च्छिंयाव ॥ च्छिंयाम ॥ च्छिनडु ॥ च्छित्
 र् ॥ च्छिंली ॥ च्छिंदनु ॥ च्छिंदि ॥ च्छिंलात् ॥ च्छिंलं ॥ च्छिंल ॥ च्छिनदानि ॥ च्छि
 नदाव ॥ च्छिनदाम ॥ त्रुच्छिनतु ॥ त्रुच्छिंली ॥ त्रुच्छिंदनु ॥ त्रुच्छिन ॥ त्रु
 च्छिंलं ॥ त्रुच्छिंल ॥ त्रुच्छिनदं ॥ त्रुच्छिंद ॥ त्रुच्छिंम ॥ ॥ निविषिषविण
 ष ॥ विपूर्व ॥ नमसूहि ॥ च्छिं ॥ विमिनत्रि ॥ विमिंरु ॥ विमिषनि
 ॥ विमिनदि ॥ विमिंरु ॥ विमिंरु ॥ विमिनषि ॥ विमिंरु ॥ विमिं

अ॥ विजिष्वात्॥ विजिष्वातां॥ विजिष्वा॥ विजिनदू॥ विजिष्वात्॥
 विजिष्वा॥ विजिष्वात्॥ विजिनदू॥ विजिनदू॥ विजिष्वा॥ विजिष्वा
 न॥ वल्यकात्रलाप॥ लघ्वन्त्रद्विवत्॥ हिंसिहिसाया॥ दिनस्ति
 ॥ हिंस्यात्॥ दिनस्तु॥ अदिन॥ ॥ अत्रयकिमुक्तकानि १४५
 गतिषु॥ नालाप॥ धातात्रयधरुतस्यनकात्रस्यलापोरुवति
 ॥ अनूस्वात्ररुतनकात्रलाप॥ अनकि॥ अंक॥ अऊरुनि ॥

अंक्रात्॥ अंक्रातां॥ अंशू॥ अनकु॥ अंक्रात्॥ अंक्रां॥ अंऊरुत्॥
 अनकु॥ अनकु॥ अंक्रां॥ अंऊरुत्॥ अंक्रादयात्रुधदिगल्लः
 धाताधनुयाधदवगनया॥ ॥ तनूविस्तार॥ तनाधनुया॥ तना
 दर्भलद्वयस्यथारुवतिचतुर्ष्ववत्॥ यकात्रयिस्कार्यार्थ॥ त्रु
 यल्लुगिगुल॥ तनाति॥ स्वयुल्लनुवध॥ दिस्वाननुगुल॥ तनूरु॥
 ॥ तन्वकि॥ तनाधि॥ तनूध॥ तनूथा॥ तनामि॥ तनूवा॥ तनूम॥

[illegible][illegible]

दीर्घस्य गुणस्यात्॥ कृ श्यात्॥ कृ श्यातां॥ कृ यूः॥ कृ य्याः॥ कृ य्यातं
॥ कृ य्याता॥ कृ य्याी॥ कृ य्याव॥ कृ य्याम॥ क प्रोगु॥ कृ त्रुता द्वा॥ कृ
त्रुती॥ कृ र्वन्तु॥ अ व्हिहः॥ कृ त्रु॥ कृ त्रुता द्वा॥ कृ त्रुतं॥ कृ त्रुत
॥ क प्रवालित्वा॥ क प्रवाव॥ क प्रवाम॥ अक प्रात्॥ अकृ त्रुतां॥
अकृ र्वन्तु॥ अक प्राः॥ अकृ त्रुतं॥ अकृ त्रुत॥ अक प्रवं॥ अकृ र्व
॥ अकृ र्म्मा॥ ॥ आ सनयद इ पित्वा॥ कृ त्रुतं॥ कृ र्विता॥ कृ र्वित॥

981

कृत्रुषः॥ कृर्वीत्थः॥ कृत्रुधः॥ कृर्वः॥ कृर्मः॥ कृर्वः॥ अनित्यं वमात्रुताः
यावकावः॥ कृर्वहः॥ कृर्महः॥ कृर्वीतः॥ कृर्वीयातः॥ कृर्वीतनः
॥ कृर्वीथः॥ कृर्वीथः॥ कृर्वीयाथः॥ कृर्वीधः॥ कृर्वीयः॥ कृर्वी
वहिः॥ कृर्वीमहिः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः
॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥
॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥ कृर्वीगाः॥

١٨٥

[illegible]

कात्रह्यलोहवतिदितिह्यत्रपत्र॥कीलनि॥कीलमि॥कीलीथ
 ४॥कीलीथा॥कीलमि॥कीलीव४॥कीलीम४॥कीलीयातू॥कीः
 लीयातां॥कीलीयू४॥कीलया४॥कीलीयातां॥कीलीयात॥कीलीः
 यां॥कीलीयाव॥कीलीयाम॥कीलभु॥कीलीतादा॥कीलती॥की १४८
 लकु॥कीलीहि॥कीलीतादा॥कीलीतां॥कीलीता॥कीलनि॥कील
 वाकीलम॥शुकीलतू॥शुकीलीतां॥शुकीलनू॥शुकील४॥शु

कीलीतां॥शुकीलीता॥शुकीली॥शुकीलीवा॥शुकीलीम॥॥शुल
 नयदा॥कीलीता॥कालता॥कीलता॥शुता॥कादनत४॥शीह
 हा॥नार४॥कीलीष॥कीलथ॥कीलीध॥कील॥कीलीवह॥
 कीलीमह॥कीलीता॥कालीयातां॥कीलीनू॥कीलीथ४॥की
 लीयाथी॥कीलीधी॥कीलीया॥कीलीवहि॥कीलीमहि॥कीलीतां॥कील
 तां॥कीलतां॥कीलीया॥कीलथी॥कीलीधी॥कीलो॥कीलवह॥कीलम

हे॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥
४॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥शुकीलीत॥
यहउपादान॥यहकिडितिव॥यहकावैरुद्र॥यहकावैरुद्र॥यहकावैरुद्र॥यहकावैरुद्र॥
बुकीदीनाकिडितिवपत्रसंयुक्तानलरवति॥॥यहसमकात्र॥यहका
नाधिकानात्रुविहितियत्रपिसंयुक्तानलरवति॥गृहीत॥गृहीत॥गृहीत॥
कि॥गृहीत॥गृहीत॥गृहीत॥गृहीत॥गृहीत॥गृहीत॥गृहीत॥

यागु॥ गृहीयाता॥ गृहीयू॥ गृहीया॥ गृहीयाने॥ गृहीयात॥ गृही
या॥ गृहीयाव॥ गृहीयाम॥ गृहीयु॥ गृहीदा॥ गृहीता॥ गृहीतु॥ हसा
दानहो॥ हसादानहो॥ हसान्नातुकादगर्ज॥ दानपुण्यारुवतिदोष
प्र॥ नना॥ अनाद्वितिरिहर्षाया रुवति॥ एत्वं॥ गृहीता॥ गृहीतादा॥
गृहीते॥ गृहीत॥ गृहीनि॥ गृहीव॥ गृहीम॥ अगृहीता॥ अगृहीता
॥ अगृहीत॥ अगृही॥ अगृहीते॥ अगृहीत॥ अगृही॥ अगृहीव॥ अ

गृहीम॥ ॐत्यादि॥ ॥ अर्वयषयषो॥ यष्मति॥ यष्मायात्॥ यष्मातु॥ य
 षात्॥ अयष्मात्॥ मूषक्षय॥ मूष्मति॥ मूष्मायात्॥ मूष्मातु॥ मूषात्॥ अ
 मूष्मात्॥ ॐ अर्ववाधन॥ जाऊनी ॐ॥ ऊनीयादूर्हवर्ह ॐ अर्ववाधन
 अनया ऊद ॐ रुवति॥ जानाति॥ जानीत॥ जानीता॥ जाननि॥ जा १५१
 नीयात्॥ जानातु॥ जानीहि॥ अजानात्॥ अजाननेयपयि॥ जानीत॥
 जानात॥ जानता॥ जानता॥ जानीत॥ जानीता॥ अजानीत॥ ॥ लृ

छदन॥ घादकृत् ॐ॥ घादकृताकृत् रुवति॥ लृनाति॥ लृनीत॥
 लृननि॥ लृनीयात्॥ लृनातु॥ अलृनात्॥ लृनीत॥ लृनात॥ लृनता॥ लृ
 नीता॥ लृनीता॥ अलृनीत॥ सर्वतु कर्ह त्रियु क्रियादृष्ट्या॥ अतच्च
 विरुक्ति चतुष्टयं सार्धं धतु कर्हं यत्र सार्धं धतु कर्हं रुवति याः
 निनीयानां॥ ॐ तिकर्ह त्रियु क्रिया॥ ॐ००३०॥ अथ राव कर्म ॐ
 र्यकि यु क्रिया निरूप्यं॥ अथ गदा श्विका नार्थ॥ आहु वि कर्म

नि॥ अकर्मकं तथा धातुं तथा तु विराजं स कर्मकं तस्यैव कर्मलिङ्गात्मा
न पदं रुवति॥ न विद्यते कर्म यथा॥ १ अकर्मका॥ यच्च कर्म निग्रह
दी क्रियामादौ स अकर्मकाः॥ तन्मधुमासगीद्वयुहृतः॥ लङ्का
सहास्तिति जागर्तुं वृद्धिद्वय रुय जीवितमर्तुं॥ अयनकीर्णत्र
विदीप्यर्थं धातुगर्तुं तम कर्मकमादौ॥ स स्मार्तुं रावर्लिङ्ग स्या
दस्युर्ध्वयच्च कावर्के॥ धात्वर्थः॥ केवर्लं शुद्धा रावर्ध्वयविधीय

गायत्र्युर्ध्वं॥ धर्मार्कवर्कर्मलिचयकपुत्र्यथारुवगिचतुर्ध्वपूर्वार्कना
 ष्यत्रतः॥ ककारोगुणयतिषधार्थः॥ रुवस्येकत्वादकवचनम
 वरुवतियथमपूत्र्यस्य॥ रुयतरुवता॥ अक्षरक्षमिर्कै॥ आस
 उयवर्गिन॥ आस्येतसहि॥ अकारात्माननयदार्थः॥ अयतेश्च
 डल॥ अयदयकिदिति॥ गीळयळादलारुवति॥ सर्वतुगीडागु
 लारुवति॥ अकर्मकापिकदाचित्सकर्मकतामनूरुवति॥ न

धाचार्क॥ धात्वर्थवाधर्गकश्चित्कश्चित्कमनूवर्तते॥ विजिनश्चिन्तमवा
 र्थसूयसृजामिधामता॥ उपसृजलधात्वर्थवत्तादन्यतुनीयत॥
 विहनाहानसंहानयतिहानयुहानवत्॥ ण्तिवचनात्॥ सूखमनूह
 यतस्वामिना॥ यचकर्मसायकाक्रियामाहूस्तुवकर्मका॥ क
 ट॥ क्रियतकात्रकल॥ त्वदृ॥ स्वीक्रियसृजालेवित्राले॥ सूख्यदं
 क्रिय॥ अयक्रिह॥ अकात्रसृजिददल्लहवत्यकात्रयत्यययकि

१५३

चपत्र॥ दकात्रादीर्यप्रतिषेधार्थ॥ व्यवधालार्थ॥ क्रियता॥ क्रियत॥
 क्रियन्त॥ क्रियता॥ क्रियता॥ अक्रियत॥ ण्त्वादीयन्तिमृगुलनदी
 र्थ॥ मृदुपातल्याग॥ म्रियत॥ म्रियत॥ म्रियन्त॥ म्रियता॥ अम्रियत
 ॥ अर्वदृद् आदत्र॥ दानमादियत॥ आदियत॥ आदियता॥ आदि
 यत॥ द॥ दत्र॥ क्रियतधर्नचोत्रला॥ क्रियत॥ क्रियता॥ अक्रिय
 त॥ य॥ यकात्रपूर्वस्यदीर्घारुवति॥ चि॥ चयन॥ चीयत॥ ण्त्वा

शीयन्त॥ वीयन्त॥ वीयन्ता॥ अचियन्त॥ दूदातादनथा॥ दूयन्त॥ दूयन्ता॥
 वक्रोवाक्कल॥ दूयन्त॥ दूयन्ता॥ अदूयन्त॥ दूदा॥ दूदान॥ दादन्ति॥
 दादन्ताकाग्रस्यकात्रादल्लरुवन्ति॥ दूयन्त॥ दीयन्त॥ दीयन्ता॥
 ता॥ अदीयन्त॥ विपूर्वाक्षकत्रात्यर्थमृहियूर्वमुत्ताषलामलनवाः
 पिसंयूर्वनिपूर्व॥ ह्यायन्त॥ अह्यायन्त॥ अह्यायन्ता॥ अह्यायन्ता॥
 धीयन्ता॥ अह्यायन्ता॥ अह्यायन्ता॥ अह्यायन्ता॥ अह्यायन्ता॥

१५४

॥ मादूमान॥ मीयन्त॥ मीयन्ता॥ अमीयन्त॥ केलेप्रेषद्व॥ संधद्रनात्
 मा॥ संधद्रनात्संधानूनामात्वंरुवत्यनपिविषय॥ दादन्ति॥ यदी
 दन्ति॥ केलेप्रेषद्व॥ कीयन्त॥ कीयन्ता॥ अकीयन्त॥ केलेप्रेषद्व॥ गीय
 त्ता॥ गीयन्त॥ गीयन्ता॥ अगीयन्त॥ केलेप्रेषद्व॥ ग्रीयन्त॥ ग्रीयन्ता॥ ग्रीयन्ता॥
 ॥ अग्रीयन्त॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥
 यन्ता॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥ अग्रीयन्ता॥

[illegible][illegible]

वृत्तयमिव ॥ नादं काष्ठं हि नमि ॥ लू ~~लू~~ लू दम ॥ लू यत कं दान ॥ लू यम
 वनादं लू नामि ॥ लू यत ॥ लू यत ॥ लू यत ॥ अलू यत ॥ द्विकर्मकस्या दा
 दनली ॥ दृष्ट्या चित्रधियुक्तिरिद्विचि ॥ अमूपयागनिमिरुमः पूर्व वि
 लो कु विभा निगु ॥ न च यस्तु चरत दकीर्ण तमा च त्रितं कविना ॥ १५६
 ली ॥ ह्या यन ॥ का त उर य प दार्थत्वात् ॥ आ द ॥ पू ॥ स ॥ नगनं
 नीयत नाग ॥ नी के व न च न ॥ नी यत ॥ नी या ॥ अनी यत ॥ त्रिके व

ने च त ॥ १५७ ॥ रू या वृ या अया ॥ रा ऊ नं या चरत य ऊ माना या च क न ॥ या
 चरती ॥ या चरत ॥ या चरती ॥ अया चरत ॥ ल्वा द या ॥ अ च न नि क र्म ग ल
 र्थ मू ख्य क र्म नि ॥ प र्य य या ति या चा दि लो ल त्वे न य थ अ त्र चि ॥ प
 च्छी या या ॥ ग ल वि दि ति न सं पु सा न ली ॥ पृ च्छा त ॥ पृ च्छा त ॥ पृ च्छा
 ता ॥ अपृ च्छा त ॥ पं थ न प थि क न पा नू ॥ मि थ ल आ चार्य सु त्वं पृ
 च्छा त ॥ न्ति लो व क र्म य क्रि या ॥ ॥ ॥ पु न क रू त्रि यु धी यती ॥ प

वउवथू॥वहव॥वहवा॥वहविवा॥वहविम॥चकथा॥ससथा॥व
 र्थ॥दूडाथा॥गूलाथा॥मुक्ताथ॥ह्यादीना॥वलिबलवाना॥वहव॥
 ॥इयचषपाका॥रूकात्रवत्रोन्नवधकार्यात्था॥द्विष्टातिद्विर्त्त॥
 पूर्वस्यहसादिगण॥पूर्वस्यज्जदिहस॥मिष्टातन्नूभालुष्टाती॥ज्
 नउपधया॥धनात्रयधया॥रूकात्रस्यवृद्धिरुवति॥इतिलितिचयत्य
 ययत्रत॥ययाच॥लादि॥कि॥लादित्रमिकि॥रुवति॥लाय॥प॥च॥
 त्

१५८

किथचास्या॥यचादीनामनादगादीनांकिति॥अदोसुतिपूर्वस्यलाया
 रुवति॥धनात्रकात्रस्ययेकरुसम्येकात्रादगा॥रुवति॥अचरु॥थाय
 वृ॥उकरुसा॥रुवयथाययुक्तरु॥अनादगा॥दिखा॥रावे॥क॥रा
 थ्रिनि॥कृत्वा॥द॥अ॥उ॥ग॥द॥रु॥॥चा॥का॥ना॥द॥रु॥नि॥मि॥ला॥रा॥वे॥पि॥
 रु॥ल॥रु॥उ॥उ॥या॥दी॥ना॥पूर्व॥अ॥ला॥या॥रु॥वति॥रु॥ल॥रु॥॥वि॥ठ॥थ॥य॥॥
 अ॥नि॥ता॥॥अ॥रु॥ना॥थ॥या॥वा॥रु॥रु॥वति॥सि॥रु॥कि॥र्त्त॥वा॥व॥का॥वे॥॥कि

त्वादत्तपूर्वलापो॥यचिथ॥ययचिथ॥ययक्का॥यचथू॥यच॥ल
 वृलभावानिट् वका व्य॥तताविकल्यनवृद्धि॥यपात्रा॥ययचा॥
 यचिव॥यचिम॥आत्ममयद॥लायादिपूर्ववत्॥यथा॥यचार्त॥
 यचित्र॥यचिषा॥यचात्था॥यचिध्या॥यच॥यचिवेद॥यचिमद॥
 पूकृ॥कृत्र॥ला॥द्वि॥श्रुतिद्वि॥कृ॥कृ॥ल॥प॥नृ॥ति॥हि॥न॥॥का॥त्रा॥शि
 त॥मि॥म॥क॥का॥र्या॥र्थ॥॥का॥त्र॥उ॥रु॥य॥प॥दा॥र्थ॥॥पूर्व॥र्त॥व॥चि॥ना॥अ॥का

॥१४॥१

तस्याकात्राद॥आ॥रु॥व॥ति॥॥कृ॥ल॥यू॥॥च॥कृ॥नृ॥नृ॥ति॥हि॥न॥॥ध॥ता॥नृ॥
 मि॥न॥॥ध॥ता॥त्र॥नृ॥रु॥र॥स्य॥ना॥मि॥ना॥वृ॥द्धि॥रु॥व॥ति॥॥श्रि॥ति॥लि॥ति॥च
 प॥त्र॥॥च॥का॥त्र॥॥लि॥त्वा॥रा॥वा॥नृ॥वृ॥द्धि॥॥कि॥त्वा॥नृ॥गु॥ल॥॥अ॥नृ॥॥च॥कृ॥
 रु॥॥॥च॥कृ॥॥॥नृ॥या॥दा॥नि॥ट्॥॥च॥कृ॥थू॥॥च॥कृ॥॥ल॥वृ॥ल॥मा॥लि॥द्व॥क॥व्य
 ॥॥च॥का॥त्र॥॥च॥कृ॥न॥॥च॥कृ॥व॥॥च॥कृ॥म॥॥ना॥मा॥ना॥रु॥च॥का॥त्र॥॥आ
 त्म॥न॥य॥द॥॥च॥कृ॥॥च॥का॥त्र॥॥च॥कि॥त्र॥॥कि॥ला॥त्य॥॥॥च॥कृ॥षा॥॥च॥का

चकृर्थ३

॥ **नामिना चतुर्ध्वं** ॥ नामनाडागात्रु नस्यधकात्रस्यरुतं
 वतिरिवादीनां चतुर्ध्वं संवन्निनां नरुवति ॥ चक्रुः ॥ चक्रुः ॥ चक्रुः
 ह ॥ चक्रुः मदा ॥ अस्तु वि ॥ अकात्र उच्चात्रार्थ ॥ लवादीद्वि
 तिद्विर्त्वा ॥ अस्तु अस्तु तिहिर्त्वा ॥ **आह्वानादी** ॥ अस्तु उपकार्यवृद्धिः
 ॥ अस्तु सवर्त्तु दीर्घ ॥ आस ॥ अस्तु ॥ आसु ॥ आसिथ ॥ आसु ॥
 आसिथ ॥ आस ॥ आसिवा ॥ आसिम ॥ **कासादियत्ययादाम्कसुख्य**

१५०

॥ **कासादङ्गति** ॥ यत्यया नाञ्जलवादीयत्राम्पुत्यथारुवति ॥ सचक्रुः
 रुयत्र ॥ यथाकव्य ॥ **कासुगदकृत्यायां** ॥ अकात्रित्कार्यार्थ ॥ आ
 म्पुत्यय ॥ कासांचकात्र ॥ कासांचक्रुः ॥ कासांचक्रुः ॥ कासांचक्रुः
 र्थ ॥ कासांचक्रुथ ॥ कासांचक्रु ॥ कासांचकात्र ॥ कासांचक्रु ॥ कासांच
 चक्रुवा ॥ कासांचक्रुमे ॥ कासांचक्रु ॥ कासांचक्रु ॥ कासांचक्रु ॥ कासांच
 चक्रुष ॥ कासांचक्रुथ ॥ कासांचक्रुध्व ॥ कासांचक्रु ॥ कासांचक्रुवह ॥

कासां च वृमद ॥ कासा मासा ॥ कासा मासु ॥ कासा मासू ॥ कासा मासि
था ॥ कासा मासू ॥ कासा मासथू ॥ कासा मास ॥ कासा मासा ॥ का
सा मासिव ॥ कासा कासिम ॥ कासा मासि ॥ कासा मासाश ॥ कासा
मासिने ॥ कासा मासिष ॥ कासा मासाथ ॥ कासा मासिध ॥ काः १५९
सा मासि ॥ कासा मासिवद ॥ कासा मासिमद ॥ कासां वरुव ॥ कासां व
रुश ॥ कासां वरुवू ॥ कासां वरुविथ ॥ कासां वरुवथू ॥ कासां वरुवा ॥ का

[illegible]

सामासिम॥ चकासांवरुवा॥ चकासांवरुवरु॥ चकासांवरुवृ॥ च
कासांवरुविथ॥ चकासांवरुवथू॥ चकासांवरुवा॥ चकासांवरुव॥
चकासांवरुविव॥ चकासांवरुविम॥ जागृनिडाकथ॥ अगृत्रासु
पुत्ययस्य दभविषनवागवतित्रिकत्वा न्नयित्वं न नयुवभाः
जागर्तचकात्र॥ जागर्तचकुतु॥ जागर्तचकु॥ जागर्तचकथ॥
जागर्तचकुथू॥ जागर्तचकु॥ जागर्तचकात्र॥ जागर्तचकात्र॥

१६२

जागर्तचकुवा॥ जागर्तचकुम॥ जागर्तमास॥ जागर्तमासु॥ जागर्त
मासु॥ जागर्तमासिथ॥ जागर्तमासु॥ जागर्तमासुथू॥ जागर्त
मास॥ जागर्तमास॥ जागर्तमासिव॥ जागर्तमासिम॥ जागर्तवरुव॥
जागर्तवरुवृ॥ जागर्तवरुवृ॥ जागर्तवरुविथ॥ जागर्तवरु
वथू॥ जागर्तवरुवा॥ जागर्तवरुवा॥ जागर्तवरुविव॥ जाग
र्तवरुविम॥ चधवृद्धी॥ लक्ष्मचर्क॥ लक्ष्मचकागा॥ लक्ष्मचकिज

॥ नृधं च कृषा ॥ नृधं च कात्या ॥ नृधं च रुद्ध ॥ नृधं च क ॥ नृधं च कृ व
 हा ॥ नृधं च कृ मरु ॥ नृधमासि ॥ नृधमासार्ग ॥ नृधमासि न ॥ नृध
 मासिष ॥ नृधमासात्थ ॥ नृधमासि (ध) ॥ नृधमासि ॥ नृधमासिव
 रु ॥ नृधमासिमरु ॥ नृधं वरु व ॥ नृधं वरु वार्ग ॥ नृधं वरु वि न
 ॥ नृधं वरु विष ॥ नृधं वरु वात्थ ॥ नृधं वरु वि (ध) ॥ नृधं वरु व
 ॥ नृधं वरु विवरु ॥ नृधं वरु विमरु ॥ विद रु न ॥ नृका न उ च न

१४३

नार्थ ॥ नृमि विद नृगु ल ॥ नृमि प न ॥ विद नृ (ल) न रु व ति ॥ नृ
 नृधं च रु नार्गु (ल) रु व रु व ॥ विदं च का न ॥ विदं च कुरु ॥ वि
 दं च कुरु ॥ विदं च कथ ॥ विदं च कथू ॥ विदं च क ॥ विदं च का
 न ॥ विदं च क न ॥ विदं च कृ व ॥ विदं च कृ म ॥ विदमास ॥ विद
 मास रु ॥ विदमासु ॥ विदमासि थ ॥ विदमासु ॥ विदमासु थ
 ॥ विदमास ॥ विदमास ॥ विदमासिव ॥ विदमासिम ॥ विदं वरु

वा॥विदांवरुवरु॥विदांवरुवू॥विदांवरुविथ॥विदांवरुवथू॥
 विदांवरुव॥विदांवरुव॥विदांवरुविव॥विदांवरुविम॥उष
 विदजागृथावामवकाय॥उषांचकात्र॥उवाष॥विदांचकाः
 त्र॥विषद॥जागेरांचकात्र॥जजागत्र॥ॐदृदगर्नांकनया
 ॥ॐकींचक॥ॐकींचकाश॥ॐकींचकित्र॥ॐकीमाश
 ॥ॐकीमासात॥ॐकीमासित्र॥ॐकावरुव॥ॐकावरुव

१६४

त॥ॐकींचवरुवित्र॥ॐत्यादि॥उहवितर्क॥उहांचक॥उहांचकाश॥
 उहांचकित्र॥उहांचकषा॥उहांचकाथ॥उहांचकृष्ट॥उहांचक॥
 उहांचकृद॥उहांचकृमद॥उहामाश॥उहीमासात॥उहामासित्र॥उ
 हामासिष॥उहामासाथ॥उहामासिष्ट॥उहामाश॥उहामासिवद॥
 उहामासिमद॥उहांवरुवित्र॥उहांवरुव॥उहांवरुवाश॥उहांवरु
 विष॥उहांवरुवाथ॥उहांवरुविध॥उहांवरुविवद॥उहांवरुवि

महा॥ श्रीदयशायी॥ श्रीहोचक्र॥ श्रीहोचक्राभा॥ श्रीहोचक्रिभा॥ श्रीहा
माभा॥ श्रीहामाभाभा॥ श्रीहामाभिभा॥ श्रीहावहव॥ श्रीहावहवाभा॥ श्री
होवहविभा॥ श्रीतिकासादय॥ ॥ गृधूनायत्ययान्त्यभाम्निनूय
भा॥ श्रीहोचक्राभा॥ श्रीकाभाभिनाभिमुमकायार्थि॥ श्रीकात्रउरुयप
दार्थि॥ श्रीकायामात्मन॥ श्रीकात्रिकायामर्थ्यभाम्निन॥ श्रीकात्रउरुयप
थावति॥ श्रीकात्रउरुयप॥ श्रीकात्रउरुयप॥ श्रीकात्रउरुयप॥ श्रीकात्रउरुयप॥

कितिकितिदितिचयना॥किप्रसृणयन्तिहिम॥सावद्विथ्या॥सावस्त्वस
 सन्निनीद्विथ्यरुवति॥कूलेयूत्रैतिचकात्र॥चिकिप्रसृणयन्ति
 हिम॥आर्विहस॥न्तिदीर्घ॥किलात्य॥स॥कृतस्येतिषत्त्वा॥उ
 लुम्बिकाभ्यायनप्रहृष्टाद्भगमनं॥चिकीर्षन्तिमिद्धी॥सधारु॥
 यदादियुह्यायान॥गदाधारुसंक्षारुवति॥कासादियुह्यायामक
 सहयप्रन्त्याम॥चिकीर्षचकात्र॥चिकीर्षचकुरु॥चिकीर्षचके

४॥ चिकीर्षामासु ॥ चिकीर्षामासु ४॥ चिकीर्षामासु ४॥ चिकीर्षावरुव ॥
 चिकीर्षावरुव ४॥ चिकीर्षावरुव ४॥ **नाम्नायन्त्रीचास्य ॥ नाम्नं**
 क्वायामर्थयप्रत्ययारुवतिभूकानस्थकान ४॥ **आमा ॥** पूतीयांच
 कान ४॥ पूतीयांचिकु ४॥ पूतीयांचिकु ४॥ पूतीयामासु ॥ पूतीयामासु
 ४॥ पूतीयामासु ४॥ पूतीयांवरुव ४॥ पूतीयांवरुव ४॥ पूती
 यांवरुव ४॥ **ॐ** त्यादि ॥ **तुऊयालनास्यवहात्रया ४॥** भूकान ३

१६६

चान्नार्थ ४॥ सप्रत्यय ४॥ तुऊसमपूतिहिता ॥ **साचद्विर्वा ॥** म
 र्गनांउवचया ॥ **ॐ** तिरुस्यव ४॥ स्वसंचयामसानां ॥ **ॐ** तिरुस्यच ४॥
 वाक ४॥ तिरुति ४॥ **किलात्स ४॥** कवसंथा ॥ **क ४॥** आमा ॥ वूउ
 कांचकान ॥ वूउकांचिकु ४॥ वूउकांचिकु ४॥ वूउकामासु ॥ वू
 उकामासु ४॥ वूउकामासु ४॥ वूउकांवरुव ॥ वूउकांवरुव ४॥
 ॥ वूउकांवरुव ४॥ **ॐ** त्यादि ॥ पचमपूतिहिता ॥ **ॐ** क्वायामासु

न०८५॥ साचेदित्वं॥ य०८५॥ अका०८५पूर्व० का०त्रा०रुवति०स्य०
 ॥च०८५कृ०त्रि०नि०च०य०क०का०त्र०॥ कि०ला०त्व०८५॥ क०ष०सं०य०ज०क०८५॥
 आ०म०॥ पि०य०का०मा०स०॥ पि०य०का०मा०स०तु०८५॥ पि०य०का०मा०स०८५॥ पि०य०कां
 व०रु०व०॥ पि०य०कां०व०रु०व०तु०८५॥ पि०य०कां०व०रु०व०८५॥ पि०य०कां०च०का०त्रा०॥ पि०
 य०कां०च०क०तु०८५॥ पि०य०कां०च०क०८५॥ व०र्लू०व०र्लू०न०॥ च०त्रा०द०त्रि०नि०८५॥
 च०त्रा०द०र्ग०न०॥ पि०य०तु०य०रु०व०ति०॥ स०ध०तु०॥ आ०मि०वि०द०र्ग०तु०न०॥ तु०न०८५

१४८

॥च०त्र०य०॥ का०सा०दि०य०तु०य०का०मि०नि०॥ व०र्लू०यां०व०रु०व०॥ व०र्लू०यां०व०रु०व०८५॥ व०
 र्लू०यां०व०रु०व०८५॥ व०र्लू०या०मा०स०॥ व०र्लू०या०मा०स०तु०८५॥ व०र्लू०या०मा०स०८५॥ व०र्लू०यां
 च०का०त्रा०॥ व०र्लू०यां०च०क०तु०८५॥ व०र्लू०यां०च०क०८५॥ व०ध०नि०चा०यां०॥ वि०रु०त्सां०च०
 के०॥ वि०रु०त्सां०च०का०त्रा०॥ वि०रु०त्सां०च०कि०त्रा०॥ वि०रु०त्सा०मा०स०॥ वि०रु०त्सा०मा०
 स०र्ग०॥ वि०रु०त्सा०मा०सि०त्रा०॥ वि०रु०त्सां०व०रु०व०॥ वि०रु०त्सां०व०रु०व०र्ग०॥ वि०रु०त्सां
 व०रु०वि०त्रा०॥ ली०क०रु०की०र्लू०वा०नि०व०तु०व०का०व्य०॥ र्ग०न०दि०त्वं०र्लू०त्वं०च०॥ ८५॥

हय॥ शिकात्रान्नवन्मर्थ॥ शीलपूतिहिर्न॥ दिव्यतिदित्वं ॥
 कृत्त॥ मवानांउवचपा॥ चकात्र॥ गुल॥ नन्नय॥ रिरिरिरि
 ॥ आदिउवानांमलान्नममर्हं॥ आमागमश्च॥ विरुयांचकाः
 ॥ विरुयांचकुरु॥ विरुयांचकुरु॥ विरुयामास॥ विरुयामासुरु
 ॥ विरुयामासु॥ विरुयांचरुव॥ विरुयांचरुव॥ विरुयांचरुव॥
 पद॥ विरुया॥ विरुया॥ विरुया॥ विरुया॥ विरुया॥ विरुया॥

विह्यथू॥विह्य॥विह्यय॥विह्य॥विहीव॥विहीम॥**दूदानी॥**रुह
वांचकात्र॥रुहवांचकुरु॥रुहवांचक॥रुहवामास॥रुहवामा
सतु॥रुहवामासू॥रुहवांवहव॥रुहवांवहवतु॥रुहवांवह
वू॥**रूत्यादि॥**अद्विगुरुहावकलितं चिन्तामि॥रुहाव॥रुदूवतु॥
रुदूवू॥**नानधार्चंरूतिनवकात्र॥**रुहविथ॥रुहाथ॥रुदूवथू॥
नूधमात्रितिउवा॥रुदूव॥रुहाव॥रुहव॥रुदूविव॥रुदूविम॥

[illegible]

म॥ श्री लक्ष्मी॥ द्विः श्रुति द्विः ॥ पूर्वस्य ह सादिः ॥ ४॥ कृदाश्रुति म
का १४॥ मयानां उवचयां नितुका १४॥ जिदुयां च का १४॥ जिदुयां
च का १४॥ जिदुयां च कुरु ४॥ जिदुयां च कु ४॥ जिदुया मासु ॥ जि
दुया मासु ४॥ जिदुया मासु ४॥ जिदुयां वहव ॥ जिदुयां वहव ४
४॥ जिदुयां वहव ४॥ स्याग पूर्वत्वानुधमा त्रिति ४॥ जिदुया ॥
जिदुय ४॥ जिदुय ४॥ जिदुयिथ ॥ जिदुय ॥ जिदुयथ ४॥ जिदु

या॥जिजाय॥जिजय॥जिजियिव॥जिजियिम॥**जियुत्यय॥पाः**
लनक॥॥पाल्यांवहव॥पाल्यांवहवतु॥पाल्यांवहव॥
पाल्यांवकात्र॥पाल्यांवकतु॥पाल्यांवकु॥पाल्यामा
स॥पाल्यामासुतु॥पाल्यामासु॥**विदमुवादावपिआमकु॥** ११०
न्युयागपत्रावकाय॥विदांकत्रातु॥विदांकत्रादा॥विदांक
त्राता॥विदांकवर्चु॥विदांकत्र॥विदांकत्रादा॥विदांकत्रा ॥

विदांकत्रा॥विदांकत्रवालि॥विदांकत्रवाव॥विदांकत्रवाम॥**रूखा**
दि॥॥जिजय॥स्यत्रादयार्कमि॥धना॥स्यत्ययपत्रादयार्क
मित्रादयारुवति॥आदमाननंदित्वकरी॥कुहाथु॥जिग
य॥जिगतु॥जिग्ध॥जिगयिथ॥जिगथ॥जिग्धथ॥जिग्ध॥जि
गय॥जिगय॥जिगीव॥जिगीम॥॥वेचित्यविरुविक्रयंश्रुप
कर्वंक्षयनं॥वेचित्यापन्नयानत्यकालयिषवादिर्वकाय॥सू

माहं किल विललाय ॥ लपय त्रिष्य ॥ विललाय ॥ नूत उ य
 धाया ॥ लपय चां किल चाम् ॥ विलपय ॥ विलपू ॥ विलपि
 था ॥ विललय ॥ विलपथ ॥ विलप ॥ विललाय ॥ विललय ॥
 विलपि ॥ विलपिम ॥ नूत वंग कलिं गधु सो नाह मग धे मूः
 चा विना या गुं द्वि आ ग क्तू पून ॥ संस्कार मर्दति ॥ नाहं कलिं ग
 उगम ॥ गमू गतो ॥ ६ कारो ६ दिक्कार्यथ ॥ पूर्वव लुवादि द्वि

१११

॥ कृदाश्रुतिरि उकार ॥ उगम ॥ उय धाया वृद्धि ॥ गमां स्वना ॥ ग
 मर्दन उ नू ख नू य हू ॥ लपय चाम् ॥ लपय चाम् ॥ लपय चाम् ॥ लपय चाम् ॥
 तिस्त्रेय ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥
 गम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥ उगम ॥
 नहिंसा गत्या ॥ नूकार उच्चा नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥
 नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥ नूकार्थ ॥

ब्रह्मकाव्यसमकारिकृतं ॥ मया नां अवचया वृत्तिः का २४ ॥ उपधया वृ
 द्विः ॥ उद्यानः ॥ मृगांगना के ऊल लापत्य लूपा लक्ष्मी मूर्खता ॥
 विलासहृद् ॥ उगगु यगालन नृगु नो उद्यान के संकिल वास
 दवः ॥ वरुं उवासा मृग वा दू दलु न हि न ल्ध दैत्य मयि विरुदवद
 ॥ गिनी सिचि कद दगान न मय उद्यान के संकिल वास दवः ॥ ह
 भाध ॥ सर्वगु दत्तं स्यात् ॥ गमां स्वः ॥ उद्युतः ॥ उद्युः ॥ उद्युथ

१०२

॥ उद्यनिथ ॥ उद्यंथ ॥ उद्युथ ॥ उद्यु ॥ उद्यान ॥ उद्यन ॥ उद्यिव ॥ उ
 धिम ॥ उनीयाद कृति ॥ आसपद नृपुरु तयः ॥ पूर्वच द्विर्वचनं
 ॥ गमां स्वः ॥ वृत्ति उपधया लापः ॥ क्षीयू हि ॥ श्रुति चित्तन
 एका २४ ॥ उस्मरु ॥ उरु उग ऊ नार्द नार ॥ उरुत ॥ उरुति
 ॥ उरुष ॥ उरुथ ॥ उरुध ॥ उरु ॥ उरुवेद ॥ उरुमद ॥
 खन खननी ॥ नृकात्र उद्यान लार्थ ॥ कूपं च खान पूर्वकृत ॥ दित्य

॥ सयानां अवचया ॥ उपधाया दीर्घ ॥ चखुनु ॥ चखू ॥ चखि
 था ॥ चखुथू ॥ चखु ॥ चखाना ॥ चखन ॥ चखिव ॥ चखिम ॥ चह
 नूदन ॥ ६ कात्रेदित्का यार्थ ॥ द्वित्वं ॥ कदाञ्चू ॥ सयानां चव
 या ॥ उपधाया वृद्धि ॥ घास्यमसं ऊघास ॥ गवीसूत्र ॥ उपधाया ॥
 लापकृतरखसे चयाजसानां मिति चककात्र ॥ यसाद ॥ ४ ॥ घ
 साद ॥ ४ ॥ सुकात्रस्यषकात्रादत्ता हवति किदियत्र ॥ ऊद ॥ ४ ॥

११३

ऊद ॥ ऊद्विथ ॥ ऊद्वसिथ ॥ ऊद्वसू ॥ ऊद्वथू ॥ ऊद्व ॥ ऊयास ॥ ऊयस
 ॥ ऊद्विव ॥ ऊद्विम ॥ १ दा ॥ दान ॥ पूर्ववद नूर्वध ॥ द्वित्वं ॥ ऊद्व ॥
 आगालको ॥ आकात्रा नाज्ञाता ॥ यत्रा लपुलो हवति तितिठ लोपा
 हवति ॥ तित्कत्र लं विनापि त्रूपसिद्ध ॥ तित्कत्र लं आतायूगिति
 यूग्या वृत्त्यर्थं लोप ॥ ददो दानं तदा दाता यथो धर्यं मूदो पून
 ॥ तत्कोपीरस्तथा ह्वानं धनं हित्वा वनं यथो ॥ आगानपि ॥ ददो ॥

यथोक्तम् ॥ यथो ॥ आत्मानयि ॥ अविद्यमाना अयुषस्तथा यत्तुमा ॥ न
प्रगल्भिन्ननयिकिति हिति च स्वयं यत्र आकाशस्य लाया रुवति ॥ ददो
॥ दवतु ॥ ददू ॥ ददिथ ॥ अ० ॥ ददथ ॥ ददाथ ॥ ददथू ॥ ददा
ददो ॥ ददिव ॥ ददिम ॥ यायानि ॥ यथो ॥ ययतु ॥ ययिथ ॥ ययथ ॥ यया
थ ॥ यवथू ॥ यय ॥ यथो ॥ ययिव ॥ ययिम ॥ आगतिनिवृत्ति ॥ आद ॥ अ
स्त ॥ निमिरुस्यारावनेमिरुक्तस्यायराव ॥ लवाद्यो दिवचनं ॥ न

११४

अथ सात्वपा॥ द्विर्वचनकृतयत्पूर्वतूपंतस्यागसादूर्हना॥ स्वपा॥ मिष्ट
नैनगसा॥ **कृत्स्न॥** एव अनेन यस्या हात्रे लक्ष्यं ससुततुनतुगुअः
ॐतिवचनाच्च० अनांचटतारुवनि॥ **आतागवु॥ तह्मे॥** आता न पि
ॐत्यकित्रलोप॥ तह्मे तु॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥
थू॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥
तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥ तह्मे॥

॥यथो॥यथिव॥यथिम॥ष्वालोच॥आद४षू४स्र४॥द्वित्यतिद्वित्वं॥पूर्व
स्यदसादि४अष४॥पूर्वस्यादिर्दस४गिष्यतञ्ज्याल्ययत॥सस्त्रो॥सस्त्रु
४॥सस्त्र४॥सस्त्रिथ॥सस्त्रिथ॥सस्त्राथ॥सस्त्रथू४॥सस्त्रा॥सस्त्रो॥सस्त्रिव
॥सस्त्रिम॥इ४मुतो॥द्वित्वं कृत्वा आद४षू४स्र४॥नगसात्त्वपा४॥ध
तानामिन४॥नित्वा दृडि४॥गुष्ठाव॥गुष्टूवगु४॥गुष्टूव॥गुष्टाथ॥गुष्टू
वथू४॥गुष्टूव॥गुष्ठाव॥गुष्टूव॥गुष्टूम॥संयागत्वा नूक्षता निति उवा॥

११५

कादित्वा नैद् ॥ वादि ॥ यजदवयूजा संगति क प्रल दाने षू ॥ श्रुका १४ स्वनि
त उरु यय दार्थ ४ ॥ यजल पुंति हित ॥ द्विर्च च नादि ॥ उपधा या वृद्धि ४ ॥
यया ऊं ति हित ॥ लवा दो पूर्वस्य ॥ लवा दो यत्र ऊ या दी नां ग्रहा दी नी
च धारु नां पूर्वस्य स स्वनस्य संयसा तर्लं रुवति य का तस्य ०० का १४ ॥ स्वा
क्र १४ ०० या ऊ ऊ ना द्द लं ॥ य जी य व रा लं स्युत ४ संयसा तर्लं किति ॥ यज
वच स्वय व रु व ४ क ४ वा ४ श्रु व य व द व सां य का त व का त प्रदा लं स्युत

४०० कारउकारमकारारुवनि॥ कितिपत्र॥ तचसंयुसात्रलं संरु कार
 वनि॥ सस्त्रस्यसंयुसात्रलं॥ ऊस्त्रस्यऊस्त्र॥ दीर्घस्यचदीर्घ॥ द्विति
 यसंयुसात्रलं॥ सवर्धुदीर्घ॥ णीऊरु॥ णीरु॥ णीजिथ॥ णीय
 कु॥ णीऊथू॥ णीऊ॥ ण्याऊ॥ ण्यऊ॥ णीजिवा॥ णीजिम॥ आस
 नयद॥ पि॥ णीऊ॥ णीजात॥ णीजिप्र॥ णीजिष॥ णीजाथ॥ णीजि
 ध॥ णीऊ॥ णीजिवह॥ णीजिमह॥ वचयनिरुषल॥ लवादीपूर्वस्य

११६

तिसंयुसात्रलं॥ उयधयावृद्धि॥ उवाच॥ संयुसात्रलद्वयं॥ सवर्धुदीर्घ
 ॥ उचरु॥ उचू॥ उविथ॥ उवकु॥ उचूथू॥ उचा॥ उवाच॥ उवचा॥ उ
 विम॥ व्यक्तावात्रलमित्यर्थ॥ व्यक्ताच्चत्रलमित्यर्थ॥ कृष्टव्यक्तायांवाचि
 ॥ कृष्टकाराका॥ ४०४ वचित्रनयि॥ कृष्टवचित्रादगतरवतिमूनयिविष
 या॥ आत्मनश्चि॥ उचा॥ उचारं॥ उचित्र॥ उविष॥ उचाथ॥ उविध॥ उच
 ॥ उचिवह॥ उचिमह॥ कृष्टंगय॥ कृष्टनूवधार्थ॥ आद॥ ४०५ स॥

या

दिश्या॥संयसात्रलंपूर्वस्य॥किंलास्यः॥सः॥उपध्यावृद्धिः॥सुखाया॥सु
 ष्यपुः॥सुष्यपुः॥सुष्यपिथः॥सुष्ययथः॥सुष्ययथुः॥सुष्यपः॥सुष्याय॥
 सुष्यय॥सुष्यपिव॥सुष्यपिम॥ ॥अनुसादीनुसंयसात्रलंद्वयं॥सुष्याय
 समुखं॥सुखं॥सुखं॥सुखापयिगता॥००॥ह्यादि॥अशूढवार्थः॥नृगसाम
 ॥असादीनामकात्रादिधनुसंयोगात्कात्रादिधनुनापूर्वस्यनृगजे
 भारुवतिनवादीयनसति॥ककात्रहाननियमार्थः॥उकात्रउवात्रल

र्थः॥अशूढ॥अशू॥अशू॥००॥ह्यादिहानवर्गः॥ककात्रात्मनघदार्थः॥
 उकात्रउदिह्यायार्थः॥पूर्ववृद्धिचनं॥अशूगय००॥तिह्निगं॥पूर्वस्यनृग
 गम॥अनृनृगनु००॥तिह्निगं॥अशूदीनांलवादीपूर्वस्यसर्वत्र
 पूर्वदीक्षावकव्यः॥विपूर्वः॥यानजविश्वरुगवान्॥यानज
 रं॥यानजिगं॥यानजिषं॥यानजमथे॥यानजिधे॥यानज
 ॥यानजिवहं॥यानजिमहं॥अशूवकिमुद्धलकानिगतिषू॥

॥ उका न उदि कार्थार्थः ॥ द्वित्वं ॥ नूक् ॥ नूगगमव्यवधानादा का
 नस्य न कृत्वत्वं ॥ आन अशक्तिनी के ऊ ल न म्नी का चित् ॥ आनं ऊ
 तु ॥ आनं ऊ ॥ आन अथि ॥ आन अथ ॥ आन अ ॥ आन अ ॥
 आन अिवा ॥ आन अिम ॥ अर्च पूजाया ॥ अका न उरु यय दार्थः ॥ पूर्व
 वत ॥ आन च ॥ आन च तु ॥ आन च ॥ आन चिथ ॥ आन चूथ ॥ आ
 न च ॥ आन च ॥ आन चिवा ॥ आन चिम ॥ वि च यन ॥ वि नार ल्वा

१५८

दो वा कित्वं व का व्यं ॥ वि का नस्य कि आदग ॥ द्वित्वं कृ श कि कि ॥ क
 हा अ ॥ नि त्वा दृष्टि ॥ नि त्र पूर्व ॥ नि त्रि स र्ग ॥ वि स र्ज नी य स्य द्य ॥
 का अ रि ॥ नि ति स स्य ग त्वं ॥ नि श्चि का य चि रं त्रा जा ॥ अ सं था ग त्वा
 य का न ॥ नि श्चि कृ तु ॥ नि श्चि कृ ॥ नि श्चि क यि थ ॥ नि श्चि क थ ॥
 नि श्चि क ॥ नि श्चि का य ॥ नि श्चि क य ॥ नि श्चि की वा ॥ नि श्चि की म ॥ प द
 ॥ वि चा य ॥ वि च तु ॥ वि च ॥ वि च यि थ ॥ वि चू थ ॥ वि च्या ॥ वि चा य ॥

निश्चिकया॥निश्चिकीवा॥निश्चिकीमा॥यक्ष॥विवाय॥विश्वयु॥
विश्व॥विश्वयिथा॥विश्वयू॥विश्व॥विवाय॥विश्वय॥ग्रहउपा
दान॥द्विष्टनिद्विष्ट॥पूर्वस्यदसादि॥मघ॥गगदलपू॥तिहि
न॥कृदायू॥लित्वादयधयावृद्धि॥ऊग्रह॥ग्रहंकृतिचरिद्वि
तीयसंयुसात्रली॥ऊग्रहयु॥ऊग्रहू॥सिद्धत्वात्पित्वात्रसंयुसात्र
नूपांतत्रचनश्चरि॥ऊग्रहिथ॥ऊग्रहयू॥ऊग्रह॥ऊग्रह॥ऊग्रह

੧੪੮

केशसंव्रलधाताः यत्रक्षायानवादि विमको म्स्यां संश्रुता मात्वं न हवति ॥ २

॥ ऊगृहिवा ॥ ऊगृहिम ॥ संध्वद्वगालासा ॥ ॐ गिसूययाफि ॥ नवययन ४
पनाकायां मंधासगां ॥ य ३ सर्वैत्रला ॥ द्विर्वचनादिपूर्ववत ॥ लवायो
पूर्वस्यगिसंयसात्रलं ॥ दीर्घत्वादीर्घसंयसात्रलं ॥ द्रष्टव्य ४ ॥ नित्वा दृ
ष्टि ४ ॥ धातात्रीनिन ४ ॥ ॐ गिवृद्धि ४ ॥ नेत्राय ॥ संपूर्व ॥ यकात्र ४ ॥ स्वत्रदी
नेयत्रलसंया ४ ॥ नसंयसात्रला ॥ संयसात्रलकृत्संयसात्रलनरु
वनि ॥ संविद्यायस्वज्ञानं सूक्त ४ ॥ यदां द्विनिचरिद्वितीयसंयसात्रलं

॥ संविद्यतु ॥ संविद्य ॥ संविद्ययिथा ॥ संविद्यथू ॥ संविद्या ॥ संविद्याया ॥ संवि
 द्यया ॥ संविदीव ॥ संविदीम ॥ द्वितीयसंयसात्रली ॥ सम्विद्या ॥ सम्विद्याना ॥ स
 म्विदीत्र ॥ सम्विदीषा ॥ संविद्याध ॥ संम्विदीध ॥ सम्विद्या ॥ सम्विदीवह ॥ स
 म्विदीमह ॥ वक्षतनु सनाना ॥ वक्ष्यवयलपिवा ॥ वक्ष्यभागात्रलीपि
 विषयवयुत्रादल्लरुवति ॥ द्विष्यतिद्वित्वं ॥ पूर्वस्थितिस्मयसात्रली ॥ त्र
 तउपयावृद्धि ॥ उवाय ॥ द्वितीयस्ययज्जवत्रालमिद्यादि ॥ उयतु ॥ उ

१८०

यू ॥ उवयिथा ॥ उयथू ॥ उया ॥ उवाय ॥ उवया ॥ उयिया ॥ उयिम ॥ ल्यमू
 र्त्वा ॥ दुःश्रितिवृद्धि ॥ जिष्मया ॥ जिष्मियतु ॥ जिष्मियू ॥ ज्ञा
 तालवृत्ति ॥ वागतिवन्धनया ॥ नवाल्मत्रगुलव ॥ ववो ॥ ववतु ॥
 ॥ ववू ॥ वविथा ॥ ववैथा ॥ ववाथा ॥ ववो ॥ वविव ॥ वविम ॥ व्यधताउ
 न ॥ मूकात्रउच्चित्रलार्थ ॥ द्विष्यतिद्वित्वं ॥ पूर्वस्थितिस्मयसात्रलीय
 कात्रस्या ॥ उपक्षयावृद्धि ॥ विद्याध ॥ द्वितीयस्ययज्जमिद्यादि ॥ विवि

धनुषा॥विविध॥विविध॥विविध॥तथा॥मरुत॥विवि
 डा॥विविध॥विविध॥विविध॥विविध॥विविध॥विविध॥
 युक्त॥प्राया॥द्वि॥ययुक्त॥आदिगद्यतुजिवमुगृह्यत॥
 यकाद॥संथागमत्यनस्यनदादन्तकित्वं॥तनैकित्वावाचनम्
 यसात्रलमित्यर्थ॥ययुक्तु॥ययुक्तु॥ययुक्ति॥ययुक्तु॥
 ययुक्तु॥ययुक्तु॥ययुक्तु॥ययुक्ति॥ययुक्ति॥ययुक्ति॥

१०९

नै॥
 तिनयप्राति॥३

तनकित्वावाचनं ययवाकित्वावा

॥राजाद॥यनस्यलवाद्योपिद्वर्जितकिरुवति॥नराज॥राजिआजिआसित्वा
 सीनवावकाव्यं॥नराजु॥नराजु॥नराजु॥नराजु॥नराजु॥
 नराजि॥नराजु॥नराजु॥नराजु॥नराजु॥नराजु॥
 पुन्यथालोमस्यमयुर्वैकवचनान्नगानियात्यन॥पूनीमैवस्त
 दलनीहिनेन्दनैमूषालननानिदनीमैराज्ञला॥विगृह्यचकुल
 मूचिद्विषावली॥मूक्तमैवास्तमैदन्तिर्गोदिव॥मूक्तिलवादि॥

॥ ॐ ॥ अगिभि॥ यात्॥ याक्ता॥ यास्य॥ यास॥ यास्तं॥ यास्त॥ या
सं॥ यास्त॥ यास्त॥ सीष्ट॥ सीयाष्ट॥ सीत्रेत्॥ सीषत्॥ सीयाष्टीम्॥
सीयधं॥ सीया॥ सीवहि॥ सीमहि॥ नृषीसंस्तुति॥ धनानागिस्त्रि
यादादयारुवनि॥ ह्यात्॥ ह्याक्ता॥ ह्यास्य॥ ह्या॥ ह्यास्तं॥
ह्यास्त॥ ह्यास्तं॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥
ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥
ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥ ह्यास्त॥

जी व्वा ४॥ जी व्वा स्तु ॥ जी व्वा स्तु ॥ जी व्वा स्तु ॥ जी व्वा स्तु ॥ जी व्वा स्तु ॥ न न
 न न द्वा जी व्वा त् रु वान् ॥ व च य त्रि ष ष ॥ द्वि त्वा त् स्य स त् न ॥ उ
 च्वा त् ॥ उ च्वा स्तु ॥ उ च्वा स्तु ॥ उ च्वा ॥ उ च्वा स्तु ॥ उ च्वा स्तु ॥ उ च्वा स्तु ॥
 उ च्वा स्तु ॥ उ च्वा स्तु ॥ य ऊ ध व पू ज्ञा स ग ति क त्र ल दानि मू ॥ ॐ क्वा त्
 ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥
 ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥ ॐ क्वा स्तु ॥

४ धितमि मकार्थ ४॥ दादना ॥ दादना का न सो का ना द ल्हा रुवति ॥
या दा दो य प्र य न सो य द ॥ द या त् ॥ द या स्ता ॥ द या स्तु ॥ द या ४ ॥ द या
स्तं ॥ द या स्ता ॥ द या स्ता ॥ द या स्ता ॥ द या स्ता ॥ या दा दा वि ति व च ना तः
ही द्वा दो न का ना न रुवति ॥ दा ही द्वा ॥ द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ४
॥ द्वा द्वा त् ॥ द्वा द्वा स्ता ॥ द्वा द्वा स्तु ॥ द्वा द्वा ४ ॥ द्वा द्वा स्तं ॥ द्वा द्वा स्ता ॥ द्वा
या स्ता ॥ द्वा द्वा स्ता ॥ द्वा द्वा स्ता ॥ द्वा ही द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा द्वा ४

१८३

[illegible]

॥ मा मान ॥ भयात् ॥ भयास्तं ॥ भयास्तु ॥ भया ॥ भयास्तं ॥ भयास्तु ॥ भया
स्तं ॥ भयास्तु ॥ भयास्तु ॥ ३॥ इ मान ॥ इकात्र भूत्सने पदार्थ ॥ मा सी
ष्ट्या ॥ मा सी या स्ती ॥ मा सी न्तु ॥ मा सी ष्ट्या ॥ मा सी या स्ती ॥ मा सी ध्वी ॥ मा
सी य ॥ मा सी वहि ॥ मा सी मेहि ॥ ३॥ हा क त्या ग ह यात् ॥ ह या स्ती ॥
ह या स्तु ॥ ह या स्तं ॥ ह या स्तु ॥ ह या स्तं ॥ ह या स्तु ॥ ह या स्तं ॥ ७॥ त न
क त्र ॥ ७॥ हं ध्व ॥ ७॥ मा त् ॥ ७॥ या त् ॥ ७॥ या स्ती ॥ ७॥ वा स्तु ॥ ७॥ या

दया॥२

[illegible]

त्रो॥ ता नमू॥ तसि॥ तासा॥ त्या॥ ता॥ ताहा॥ तास्यहा॥ तास्महा॥ ज
षां संक्लातु दृष्ट्या लिनीया नी॥ अरु विन्यर्थतादयो रुवनि॥ सि
सतासीत्येयामिद्॥ धना॥ पत्रेषांसि सतासीत्येयं स्थभयामिज
गमा रुवति॥ गुल॥ रुविता॥ रुवितात्रो॥ रुवितात्र॥ रुवितासि १८४
॥ रुवितास्तु॥ रुवितास्तु॥ रुवितास्मि॥ रुवितास्त्व॥ रुवितास्म॥
अरुविता नास्तु रात्रः कुमात्रम्॥ नेक स्वनादनूदाणात्॥ चक

स्वराक्षतार्जुया ॥ अन्नुदाहृत्यैवंपठितादिजगमानरुवति ॥
विष्टीलीलीयूक्षरुपाभदवगनव्यं ॥ रूपचषयाकं ॥ वा४कृ४ ॥
पक्ता ॥ यक्तात्री ॥ यक्तात्र४ ॥ यक्ताशि ॥ यक्तासाथ्य ॥ यक्ताध्व ॥ य
क्ताह ॥ यक्तास्वह ॥ यक्तास्मह ॥ पूदा ॥ दाने ॥ दाता ॥ पायाने ॥ पा
ता ॥ वि३चयने ॥ गुल४ ॥ चैता ॥ ली ॥ एयायने ॥ नेता ॥ दाने ॥ दा
ता ॥ पूकृ ॥ केत्र ॥ ल ॥ कर्ता ॥ कर्तात्री ॥ कर्तात्र४ ॥ आत्मनेषदपि

॥ कर्त्ता ॥ यायायला ॥ याता ॥ गन्तु गमो ॥ गन्ता ॥ नृषिता ॥ हनति
 सागत्या ॥ हता ॥ हंतात्री ॥ हन्तात्र ॥ ॐ ह्यादि ॥ ॐ ह्यादीरुवि
 ष्यति स्यप् ॥ धाता रुविष्यति कालस्यप्युत्थयारुवति ॥ तिवादिष्व
 भूदजसूयत्रेषू ॥ नृषां संज्ञालृट्पानिनीयानां ॥ ॐ दागमः ॥ १५८
 युल ॥ किलात्त्व ॥ ४ स ॥ रुविष्यति ॥ रु विष्यत ॥ रुविष्यति
 ॥ रुविष्यति ॥ रुविष्यथ ॥ रुविष्यथ ॥ वमात्रा ॥ रुविष्यामि ॥ रुवि

ध्याव॥रुविद्याम४॥ऊयदवपूजासंगतिकत्रलदानिषू॥यऊस्यति
पून्निहिभं॥कृगमराजादवत्वं॥षष्ठा४क४१॥धारा४षकात्रधकात्रया
४कर्वरुवरिसकात्रपत्र॥अनपिविषय॥कषसंथागद४॥यझ्रति
॥यझ्रत॥उहययदी॥यझ्रत॥असीनाजादवान॥नस्यादिविषय॥त
नमधूतिद्यून्त्याद्योनककात्र४॥हनृगम४स्येय४॥हनृधारा४म
कात्रनाङ्गमहनाश्वपत्र४स्यपून्जगमीरुवति॥गमिष्यति॥ग

मिष्यगः॥गमिष्यन्ति॥हनिष्यति॥हनिष्यतः॥हनिष्यन्ति॥हनि
 ष्यति॥हनिष्यतः॥हनिष्यन्ति॥हनिष्यसि॥हनिष्यथः॥हनिष्य
 थः॥हनिष्यामि॥हनिष्यावः॥हनिष्यामः॥नमूदम्॥उयसम्॥
 नस्यतः॥नस्यतः॥नस्यन्तः॥दस्यतः॥दस्यतः॥दस्यन्तः॥
 नलो॥कनिष्यति॥वसनिवाहः॥सक्तः॥इनपि॥सकात्रस्यतका
 नाहवतिसकात्रपत्रनूनपिविषयः॥वत्स्यति॥दहहसिकत्रलो

१८८

॥अकात्रउच्चात्रलार्थः॥दादर्थः॥आदिऊवानामिनिषकात्रः॥ख
 सचपाप्रसानामितिककात्रः॥किन्नात्वः॥कषरीयागकः॥ध
 कृति॥दहययूत्रलो॥पूर्वाकयुकात्रलो॥उयधर्यालार्थयुलः॥धरात्र
 यधयानामिनालधार्गुलोहवति॥धकृति॥घटाः॥कः॥धकृति
 ॥हिदित्रविदात्रलो॥खसचपाप्रसानामितिककात्रः॥हत्स्यति
 ॥हिदित्रद्वेषीकत्रलो॥हत्स्यति॥गुषगुष्टो॥अकात्रः॥यत्रस्येयदार्थ

४॥ षष्ठा ४८ ॥ शाश्वति ॥ शुद्धव्ययना ॥ स्वप्नचयममानामिति ४॥ ता
 त्पति ॥ विधुसिद्धो विधुगता विधुगामु मांगल्यच ॥ तथा लाभतु समानं नू
 र्यं स्यापि ॥ स्वप्नचयमिति ४॥ सत्पति ॥ सत्पति ॥ सत्पति ॥ शुषलमवला ॥
 ला विधुति ॥ शुद्धया लिगर्ह विभा चन ॥ साश्वता ॥ नववृद्धो ॥ न विधुति ॥ १८८
 गीह स्वप्न ॥ गीह ४८ सर्वतु गुल्ल रुवति ॥ त्यादो रु विधुति स्यप् ॥ सिसुता
 सी स्यपामिदं नयादगम्य ॥ गयिष्यते ॥ दाहकृत्याग ॥ शुद्धा रुदानी ॥ दा
 ॥ हस्यति ॥ १

स्यति ॥ दास्यता ॥ शुद्धरुतो ॥ शाश्वति ॥ शाश्वता ॥ शुद्धया लनास्यवदात्र
 यो ४॥ शुद्धस्यति ॥ रुति हिता ॥ च ४८ कृतिगत्वं ॥ स्वप्नचयममानामिति
 कत्वं ॥ शाश्वति ॥ शाश्वता ॥ सर्वतु उपधया लघा त्रिति गुल्ल ४॥ रुवति
 वत् ॥ स्यपु क्रियाति कभदिवा दो ॥ क्रियाया नूति कभकृत श्रिद्धे गु
 ल्मादनिष्ठो स्यादिव दिपत्र ४॥ स्यपु स्यथा रुवति ॥ नृस्य स्यथालुदि
 तिसंज्ञाया लीनियानां ॥ दिवादावट् यदिसू वृद्धि ४॥ सूना र्क्षं वारुविष्यत्

॥ तदासुरिह मरुविद्यत ॥ मरुविद्यतां ॥ मरुविद्यन् ॥ उज्जयात्मन
 ॥ मरुताञ्जुवानययागमिष्यत ॥ गम्भगम्भो ॥ उपचषयाक ॥ म्रय
 अरुवानययागिः ॥ पाकालिष्यत ॥ कलदीको ॥ मरुनिष्यत ॥ रुवान्
 यश्मञ्जुदित्यादि ॥ गद्यञ्जुको ॥ ऐकात्रद नूवञ्जथः ॥ म्रुतिः ॥ रु
 सङ्कायां ॥ रुगसिः ॥ क्षमार्कृतमार्गकालसिः ॥ पुत्यथारुवतिदिवादीप
 नतः ॥ नृषांसिङ्गलद ॥ म्रुकात्रः ॥ म्रुतिविमेषञ्जथः ॥ दिवादाव

१८०

ट ॥ म्रुसुत् ॥ म्रुतिहिम ॥ दादः ॥ पयत्रमेपदयप्रसतिदाधका
 म्रुलरुपिवतित्यः ॥ म्रुस्यप्रस्रिथिरवति ॥ सचलायालुञ्जकावः
 ॥ म्रुनारुदित्यु ॥ म्रुगुलवृद्धयश्च नयाप्रयुः ॥ म्रुदृष्टिः ॥ म्रु
 तां ॥ रुवः ॥ सिलापस्रवृञ्जकावः ॥ म्रुवन ॥ म्रुः ॥ म्रुतै ॥ म्रु
 रुता ॥ म्रुवै ॥ वृञ्ज ॥ म्रुव ॥ म्रुम ॥ म्रुदा ॥ म्रुदान ॥ म्रुदान् ॥ म्रुदाती
 ॥ म्रुद्विदः ॥ म्रुनाकात्राकाद्विद ॥ म्रुप्रस्रम्रुनउम्रुवति ॥ उम्रुलाप

४॥ अदू४॥ अदा४॥ अदानी॥ अदाता॥ अदी॥ अदाव॥ अदामा॥ अदाम
 धात्रलथाषलथा४॥ अक्षत्॥ अक्षती॥ अक्षुत्रियादि॥ अगतिनिवृत्ति
 ॥ अहत्॥ अहती॥ अह् ४॥ अतनूकत्रललक्ष्माषाषाइनककर्म
 लिद्यु। धेदुनविक्लित्यनदादथावकव्या४॥ अक्षकनालामा॥ अ १२९
 । अगत्। अगती। अगु४। अगसीत्। अगसी। अगसु४। अगसी४। अ
 गसी। अगसी। अगसी। अगसी॥ अगसी॥ अगसी॥ अगसी॥ अगसी॥

अक् ४॥ अक्कासित् ॥ धा ॥ अस्तत् ॥ अस्तानी ॥ अस्तु ४॥ अस्तासीत् ॥ घा ॥ अ
 घात् ॥ अघात्नी ॥ अघ्रु ४॥ अघ्रासीत् ॥ अक्षत् ॥ अक्षानी ॥ अषु ४॥ अक्षासी
 त् ॥ (धेनादक्षदलश्च वावकव्य ४॥ अदधत् ॥ अदधनी ॥ अदधन् ॥
 घेटञ्छायां ॥ माट ४॥ मागद्ययूञ्जमाने अललापाहवति ॥
 तसि ४॥ अगाम ४॥ सिस्तानी ह्ययामिट् ॥ ॐ अगमश्च ॥ किल
 त्व ४ ॥ अरि ४ ॥ माघटि ४ ॥ माघटिषानी ॥ माघटिषत् ॥ मा

घटिष्टा॥ मा घटिष्टार्थं॥ ध्वचसर्लापि॥ मा घटिर्ध्वं॥ मा घटिषि॥
 मा घटिस॥ सूहि॥ सू॥ मा घटिः॥ मा घटिषाती॥ मा घटिषत॥
 मा घटिष्टा॥ मा घटिष्टार्थं॥ ध्वचसर्लापि॥ मा घटिर्ध्वं॥ मा घटि
 षि॥ मा घटिषहि॥ मा घटिश्महि॥ त्रैमाग॥ साधर्मैमागमाग १२२
गर्वितमन्दिर्नै॥ क्वचित्स्माथागपि मृगलायानरुवति॥ मा निखा
द॥ युतिष्टा नै॥ मैगम॥ सास्वती॥ समा॥ यत्किंचसिधूनानुकमव

धिकाममादिर्नै॥ पूषादिशूनादि॥ का नानूवन्मदियर्हिमगयातोसुस
 र्हिहगतोभास्तिस्त्र्यगसूयत्रस्त्रेयर्द॥ तिपूतपाद॥ ॥ का न
 यस्त्रसलिरुस्मात्त्रिशा॥ का न कासध्वता॥ पूषादध्वदुपुत्ययारुव
 ति॥ क्षिप्रपवाद॥ ममूगतो॥ अगमन॥ पूषयूक्षे॥ अयूषत॥ आदि
 यदात॥ यूतयुतूचदीफो॥ यायूततो॥ ययूचत॥ अयूततो॥ अगम
 ॥ साध्वती॥ समा॥ ॥ त्यादो॥ स्मथागपि मृगलोयमिच्छन्ति॥ नुव

स्मरुत॥वर्तमानार्थया अयिस्मया गुरुनार्थनावकाया॥अ
 हस्महोत्रीत॥यऊतिस्मयुधिष्ठिर॥तिथ्याप्ययत्रमेयत्र
सिलिहिव॥लित्वाहृदि॥पूवृष्टकत्रलो॥अकात्रघत्तुतिहिर
॥सि॥सिभद्वात्यत्रयादिस्थात्रीजगभाहवति॥निनानिनादु
 पूर्वनिनात्॥निनाकाष्ठी॥निनाकाष्ठी॥निनाकाष्ठी॥निनाकाष्ठी
 ॥निनाकाष्ठी॥निनाकाष्ठी॥निनाकाष्ठी॥अकाष्ठीत्॥अकाष्ठी॥अ

१२३

काष्ठी॥हृष्टकत्रलो॥पनिउपसर्ग॥पर्यदाष्ठीत्॥पर्यदाष्ठी॥
पर्यदाष्ठी॥वदव्यक्तायावाचि॥हृष्टसि॥दिवादावत्॥अतउप
धयात्तुतिवृद्धि॥सिस्तासीस्यपामिट्॥सितितिद्वितीयवृद्धिदा
गम॥वृट्ठवृट्ठि॥वृट्ठउल्लस्यसुलपिरुवतिवृट्ठिपत्र॥दीर्घ
त्वी॥अवादीत्॥अवादिष्टी॥अवादिष्ट॥अवादी॥अवादिष्टी॥अ
वादि॥अवादिष्टी॥अवादिष्टी॥अवादिष्टी॥वऊततो॥अकात्रउच्चा

नमार्थः॥ यावाजिह्वी॥ यावाजिष्णू॥ पूर्ववत्साधनीयं॥ अन्नक
लस्यसजागृहसादिवर्कवृद्धिः॥ यदुपादानं॥ अग्रदीत्॥ अग्र
दिष्टी॥ अग्रदिष्णू॥ सदसर्षला॥ अस्दीत्॥ असदसउगम॥ अग
मीत्॥ अदमीत्॥ कुम्पादविकथ॥ अकुमीत्॥ अकुमिष्टी॥ अकुमिष्
॥ अयदयषतो॥ आयीत्॥ अदयीत्॥ अयगध॥ अत्रयीत्॥ अत्रयिष्टी
॥ अत्रयिष्णू॥ कलहिंसाया॥ अकलीत्॥ अक्षयालनं॥ अक्षसीत्॥ जागृ

निडाक्षय॥ अजागतीत्॥ अजागतिष्ठा॥ अजागतिषू॥ वमउदमन ॥
 अवमीत्॥ व्ययविलसमत्सर्ग॥ अवयीत्॥ अवययिष्ठा॥ अवययिषू॥
 दसदसन॥ अरुसीत्॥ अरुसिष्ठा॥ अरुसिषू॥ अरुसिष्ठा॥ अरुसि
 षू॥ अरुसिष्ठा॥ अरुसिष्ठा॥ अरुसिष्ठा॥ सर्वपूर्ववत्॥ ॐ ह्यादि॥ अ
 गितगिममिवगिहगि ॐ तिलिगिगगिगग्यर्थ॥ ॐ कात्रउच्चात्
 लार्थ॥ रुमसि॥ ॐ गगम॥ ॐ ट ॐ ति ॐ तयत्रस्यमन्त्रायारु

वति॥ वीतिपत्र॥ अलगीत॥ वृत्त्यादि॥ प्रकृष्टकत्रला॥ वृष्टवत्र
 ला॥ लायाऊखातुमस॥ ऊखादूतत्रस्यसलपिारवतिमसपत्र॥ अ
 वत्रिष्ट॥ अवृत्त॥ अकृत्त॥ अकृषात्ता॥ अकृषत॥ अताइकादनतः
 ॥ अकृथ॥ अकृषाथ॥ अकृध॥ अकृषि॥ अकृषुदि॥ अकृषुदि॥
 अगमसारावाचसिलाय॥ प्रदाष्टदान॥ अदासतवृत्तिह्मिती॥ दा
 धनि॥ लायाऊखातुमस॥ अदित॥ अदिषात्ता॥ अदिषत॥ अदिथ

१२५

॥ अदिषाथ॥ अदिध॥ अदिषि॥ अदिषुदि॥ अदिषुदि॥ प्रकृष्ट
 धात्रलायाअथ॥ अधित॥ अधिषात्ता॥ अधिषत॥ लागतिनि
 वृत्ति॥ युकासनवृत्ति॥ युकासवाअपुतिरूवाअनिर्लूयवाअ
 लावृत्त्यस्यआत्मआत्मनपदैरुवति॥ रुवानिष्ठनवृत्तिपुका
 ॥ अदतिष्ठवृत्तिपुतिरूया॥ अगुनिर्लूतादवदलुहिष्ठनवृत्ति
 निर्लूय॥ याह्मि॥ याह्मिषात्ता॥ याह्मिषत॥ वृद्धअध्वयन॥ दकात्र

आत्मनय दार्थः॥ ॐ दावागीसो॥ ॐ दावागी आद (ग) रुवति सो
 पत्र॥ अक्षगीसत नू ॐ तिहि ग॥ किला त्वः स ॐ तिघ त्वं॥ दूहि दू
 ॥ अक्षगी दू॥ अक्षगी वागी॥ अक्षगी षत॥ अक्षगी द्वा॥ अक्षगी
 वार्थ॥ अक्षगी ध्वं॥ अक्षगी षि॥ अक्षगी छदि॥ अक्षगी झदि॥ वा १८५
 ॐ रास्य ॐ सत नू ॐ तिहि ग॥ किला त्वः स॥ दूहि॥ दू॥ दिवा
 दावट्॥ त्व नादः॥ गुनेने॥ अधिपूर्वः॥ अ (षे दू) अ (षे वागी) अ

३

(षे वरा) अ (षे द्वा॥ अ (षे वार्थ॥ (ध च स) शोया व क व्य॥ अ (षे ध्वं॥ अ (षे षि
 । अ (षे छदि॥ अ (षे झदि॥ सिय स्य या दि के पूर्व वत् वृद्धिः॥ विसृत ॐ ति
 हि ग॥ ॐ लान्य कर्तु नि॥ धनास्तु नियत्र कर्तु वर्जित र्थे लुप स्य या रुव
 ति ॐ लुप्तं निशा गतना लाया व क व्य॥ अत्रावि॥ अत्राविषागी॥ अत्रावि
 षत॥ अय च वपाक॥ मसात्॥ मसादू स्य शोया रुवति मसयत्र॥ नाः क
 ॥ अप क॥ अप कागी॥ अप दू ग॥ अप दू ॥ अप काथं॥ अप क् ध्वं॥ अप

कि। अ० प० क० हि। अ० प० क० हि॥ अ० त्म० न० य० द० ज० तं॥ अ० पा० की० त्। अ० पा० की०
। अ० पा० की० ४॥ अ० पा० की० ४॥ अ० सा० त्॥ अ० पा० की०। अ० पा० की०॥ अ० पा० की०। अ० पा० की०
। अ० पा० की०॥ अ० व० य० वी० ऊ० ही० ताने॥ अ० वा० यी० त्॥ अ० वा० यी०। अ० सा० त्॥ अ० वा०
यू० ४॥ अ० वा० यी० ४॥ अ० वा० की०। अ० वा० की०॥ अ० वा० यी०। अ० वा० यी०॥ अ० वा० यी०॥ अ० वा० यी०॥ व १२१
ह० या० य० ल०॥ ह० र० ४॥ घ० टा० ४० क० ४० त० ४॥ अ० वा० की० त्॥ ह० र० ४॥ त० थ० अ० र्द्ध० ४॥ अ० र्द्ध०
४० ४॥ टि० टा० ला० या० दी० र्घ० अ०॥ ट० का० त्र० य० त्र० ध० का० त्र० य० ला० या० रु० व० ति० पू० र्व० ए०

[illegible]

डो॥समादितिकि॥सिसनासीस्ययामिति॥अगमकृतमसारावात्रभ
 लयि॥नेधि॥नेधिषाती॥नेधिषत॥धेवसलयि॥नर्वंगीदस
प्रा॥अगयि॥अगयिषाती॥अगयिषत॥अधिनावत॥॥ॐ॥नू
 धा॥ॐ॥तिषत॥ॐ॥तिनावा॥ॐ॥तिनाधातावदियुस्यथारुवतिदि १८७
 वादीयत॥सनयवीद॥ठकात्रागुलपुतिषधार्थ॥अनूधन॥अनू
धती॥अनूधन॥पक्ष॥अनिठानामिवत॥नामिवताअनिठधमा॥यत

स्मेपदसिपयययतवृद्धिरुवति॥स्वभचयामसानामिति॥अनोत्सी
ता॥ससाता॥तथाद्वमरुऊवा॥अनोद्धा॥अनोत्सू॥अनोत्सी॥अनो
द्धे॥अनोद्धे॥अनोत्सी॥अनोत्स्वा॥अनोत्सम॥॥ॐ॥त्यादि॥द्विदिनधधीवात्र
॥॥ॐ॥तिनावा॥अच्छिदत॥अच्छिदती॥अच्छिदन्॥अत्सीता॥ससाता॥
 अच्छेत्ता॥अच्छेत्सू॥अच्छेत्सी॥अच्छेत्ता॥अच्छेत्ता॥अच्छेत्सी॥अच्छेत्सू
 ॥अच्छेत्सू॥दिवूकी॥विजिगीषावावहात्रयतिमुतिह्यप्रमदभाद

कांतिगतिषु॥सिस्नासीस्ययामिद्र॥दिव।ॐसॐतिहिम॥उपध
 यालक्षानितिगुल४स४॥ॐ८ॐ१८॥ॐतिस्कात्रलाय४॥दीर्घत्वी॥अ
 दवीत्॥अदविह्री॥अदविषू४॥अदवी४॥अदविह्री॥अदविह्री॥अदवि
 षी॥अदविषू॥अदविषू॥षिवसवायी॥उकात्रउदित्कार्यार्थ४॥अनु
 षिदिववत्॥असवीत्॥असविह्री॥असविषू४॥नाकमनिर्यी॥उपध
 यागुल्लारुवत्यव॥दमित्रयदुल्ल॥ॐत्रितावतिअद्॥अदभत्त॥अ

१८८

दभत्ता॥अदभत्त॥ॐत्रनूयन्चॐत्रितावतिविमेषलार्थ४॥त्रात्रा
 सहभा॥दभादीनामसपत्रअत्रागारुवति॥यथमंगुली॥अतउप
 धायावृद्धि४॥अभाषनाजाद४ष४॥षटा४क४स॥किलात्य४स४॥
 कषसीयागद४॥ॐजागमॐजागम४॥अडाकीत्॥मसात्॥
 दूरि४दूर४॥अडाह्री॥अडादू४॥अडाकी४॥अडाह्री॥अडादू॥अडादू
 ।अडादू॥अडादू॥नवसृगस्यभन॥अस्यभत्त॥अस्यभत्ता॥अस्यभ

न॥ अस्या कीत्॥ अस्या ह्रीं॥ अस्या कृ॥ अस्या की॥ अस्या ह्रीं॥ अस्या ह्र
 ॥ अस्या दं॥ अस्या द्वा॥ अस्या क्वा॥ मृषमर्ष॥ ६० त्रिशावा॥ अमृष
 त्॥ अमृष ती॥ अमृष न्॥ अमा कीत्॥ अमा ह्रीं॥ अमा कृ॥ अमा की
 ॥ अमा ह्रीं॥ अमा ह्र॥ अमा दं॥ अमा द्वा॥ अमा क्वा॥ कृषविलखन॥
 अकृषत्॥ अकृष ती॥ अकृष न्॥ अका कीत्॥ अका ह्रीं॥ अका कृ॥
 अका की॥ अका ह्रीं॥ अका ह्र॥ अका दं॥ अका द्वा॥ अका क्वा॥ ६१

२००

स्य च त्वा त्रि नूपा नि सं रु व ति॥ ह्यपयी लभ दी फो॥ अह्यत्॥ अह्य
 ती॥ अह्यत्॥ अगा यीत्॥ अगा यीं॥ अगा य॥ अगा यी॥ अगा यीं॥ अ
 गा य॥ अगा यीं॥ अगा य॥ अगा य॥ अत यीत्॥ अत यीं॥ अत य॥ अ
 त यी॥ अत यीं॥ अत य॥ अत य॥ अत य॥ अत यीत्॥ अत यीं
 कीं॥ अत यीं॥ अत यी॥ अत यी॥ अत यी॥ अत यी॥ अत यी॥ अत यी
 मा ह्रीं॥ अमा कृ॥ अमा की॥ अमा ह्रीं॥ अमा ह्र॥ अमा दं॥ अमा द्वा॥ अमा

क्र॥ हिदित्रविदात्रला॥ सिध्या॥ उपधयागुलानरुवतिहिध्यात्र
 निठापत्रथा॥ दितिगुलनिधधसत्ययिचनत्सुगुविधननियमा
र्थ॥ सिद्धसत्याननियमायहवतीतिन्यायात्॥ अनिठा॥ सिध्या॥ पत्र
 यात्रपधयागुलानरुवतीतिउक्ता॥ अन्यस्यहवतीतिसूचिती॥ अहिरु
 । अहित्स्वगी॥ अहित्स्वत॥ मसात्॥ अहित्का॥ अहित्साथी॥ अहिद्वी॥ अहि
 ति॥ अहित्स्वदि॥ अहित्स्मदि॥ पक्ष॥ वादयत्यय॥ अहिदत्ता॥ अहिदती

२०१

। अहिदत्ता॥ अहेत्सीत्ता॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥
 अहेत्सी॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥ अहेत्सी॥
 सगासीत्ययामिट्॥ अवरिषि॥ अवरिषिगी॥ अवरिषिगी॥ अवरिषिगी॥
रकादत्ता॥ अवरिषि॥ अवरिषिगी॥ अवरिषिगी॥ अवरिषिगी॥ अवरिषिः
 षि॥ अवरिषिषदि॥ अवरिषिषदि॥ गमुहमुगगी॥ एकात्रंरुय
 स्पसलित्तात्ता॥ लित्तात्ता॥ लित्तात्ता॥ पृष्ठादय्यदपुत्यया

रुवतिदिवाद्योयत्रतः॥ हकारागुल्यतिष्वर्थः॥ स्रजयवादः॥ अ
गमरा। अगमतां। अगमन्॥ ह्यस्य ल॥ असृयत्। असृयती। अ
सृपने॥ यषयू॥ अपृषत्। अपृषती। अपृषन्॥ कलदीको॥ अक
लत्। अकलतां। अकलन्॥ वचयतिहाषले॥ वचयन्मागभाव
कायः॥ अवोचत्। अवोचतां। अवोचन्॥ दहययूत्रल॥ अकात्रउ
चात्रत्यर्थः॥ दर्शयिच्छित्वा॥ हगभाक्तात्सक्॥ हकारान्नाच्नुकारा

नात्स्यकात्रात्राम्ययधदविद्यमानटादिवादिपत्रत४सक्यस्य
 थारुवति॥दादर्थ४॥आदिऊवानामिण्यादिनाधकात्र४॥खसचया
 मसानांककात्र४॥किलात्स४स४॥दिवादावत॥कषसंया॥गद४॥
 अधूकत्॥अधूकनी॥अधूकन्॥ॐत्यादि॥लिहआत्वादना॥पूर्वव
 त्सक्यस्ययथा॥अलिहत्॥अलिहनी॥अलिहन्॥विभयदेम
 ने॥कृअषत्राजादिनाधत्वं॥घटा४कस॥किलात्स४स४॥अतिमत्वं॥

[illegible]

१ अथ हावकार्म (लाभताविहकार्यानि नूयन्ते ॥ तत्राहु विवर्तनीति
नियमादात्मन्यदानिप्रयुक्तम् ॥ हस्तलायां ॥ हस्तचक्रं इति हिता ॥ आ
स्थात्पूर्वदाविह्यात्वं ॥ ऊह्य ४ ॥ मयानां ऊवचया इति वकार ॥ गुर्वी वू
क ॥ अनूपूर्व ४ ॥ हस्तमनूवहृवदवदहन ॥ उपसर्गनक्षत्रार्थः
वेलादवागुनीयत विहानाहा न हानयति हा प्रहानवत् ॥ अनूवहृ
वात ॥ अनूवहृवित्र ॥ कादिनहितत्वात् ॥ अनूवहृविषा ॥ अनूवहृवा

(था॥अनूवरुविद्ध॥अनूवरुवे॥अनूवरुविवह॥अनूवरुविमह॥
 पक्ष॥अनूवरुवे॥अनूवरुवाग॥अनूवरुवित्र॥अनूवरुविष॥अनू
 वरुवा॥था॥अनूवरुविध्व॥अनूवरुवे॥अनूवरुविवह॥अनूवरु
 विमह॥**श्रयचषयाक॥लायचर्माकिल्वचा॥थिच॥थिवाग॥थिचित्र**
॥तनूविस्तृति॥तन॥तनाग॥तनित्र॥मनस्तन॥मन॥मनाग॥म
नित्र॥दादान॥आमानयीत्याकात्रलाय४॥दद॥ददाग॥ददित्र॥

[illegible]

कानोषागूनाहन्नुग्रहदृष्टावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि
 लिङ्गावकर्म (८५) सिसता कानोषागूनाहन्नुग्रहदृष्टावकर्म
 दय (८५) लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि
 मन्त्राविषीष्टरुवती लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि
 याक्ता। मन्त्राविषीष्टरुवती लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि

२०५

। मन्त्राविषीष्टरुवती लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि
 मन्त्राविषीष्टरुवती लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि
 मन्त्राविषीष्टरुवती लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि
 मन्त्राविषीष्टरुवती लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि
 मन्त्राविषीष्टरुवती लिङ्गावकर्म (८५) सिसता सीस्यपामि

ह्यादि॥ अन्तरुविषयता॥ ह भसि॥ ॐ लूतन्यक रूत्रि॥ धमासुनि
 यत्र क रूत्रिवर्क भः ३ (धरुविक म्मलिच ॐ लू पुख्यया रुवतिम
 नपवादः॥ धकात्रा वृद्धार्थः॥ लापः॥ ॐ लू सन्निध्या लवतना
 लापारुवति॥ अन्तरुविषयता॥ दिव्वचनादोमिदिप्रावक २०६
 व्यः॥ पूर्ववत्॥ अन्तरुविषयता॥ अन्तरुविषयता॥ ॐ ह्यादि॥
 नित्यारुवा अन्तरुवि॥ ॐ ह्यादि॥ श्रुक् हकत्रला॥ अकात्रि॥ धे

चसलापावक व्यः॥ अकात्रिद्व॥ अकात्रिषाता॥ अकात्रिषत॥ अरु
 मातादि अरुत्रला॥ अरुत्रि॥ अरुत्रिषाता॥ अरुत्रिषत॥ ह भसि ४
 । ॐ लवर्क भसि सतासी स्यामिद॥ श्रुचषपाक॥ अपात्रि॥ अय
 दाता॥ अयदत॥ अमा इकादनतः॥ ससाता॥ अयक्ता॥ रुक्या
 लनायचदात्रया॥ उपधायालधारुल॥ धमात्रयधायानामि
 नालधारुलारुवति॥ अरुकि॥ अरुक्ताता॥ अरुषनाकादः॥

[illegible]

। अरुणिषत॥ वचपतिरास(ला॥ अवाचि। ग्रहउपादाने॥ निहा
रा। उयक्षया नृतिवृद्धिः॥ अग्रहि। अग्रहिषातां। अग्रहिषग॥ नी
रेयायन॥ नित्रपूर्वः॥ नित्रल्लयि। द्विवचनादो नित्वाद्विष्टः॥ नित्र
ल्लयिषातां। नित्रल्लयिषग॥ हनहिमायां॥ हनाध्र। योगविराम
दूकनिमित्तारविद्यकात्रः॥ अशानि। अशानिषातां। अशानिष
त॥ पायान॥ आभायूक॥ आकाशात्तद्भायूगमभोरुवतिश्चि

तिलितितयत्र॥ अयायि। अयायिषातां। अयायिषत॥ अयायिषत॥ अयायिषत॥
 अस्तायि। अस्तायिषातां। अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥
 ४। निपूर्व४। अयायि। अयायिषातां। अयायिषत॥ अयायिषत॥ अयायिषत॥
 पञ्चनवधपूत्रितायिषायायिषावा॥ अयायिषत॥ अयायिषत॥ अयायिषत॥
 न॥ उत्पूर्व४॥ उदयादि। उदयत्सातां। उदयत्सत॥ अयायिषत॥
 न॥ अयायि। अयायिषातां। अयायिषत॥ अयायिषत॥ अयायिषत॥ अयायिषत॥

२०८

अस्तातां। अस्तात॥ अनिवर्धनार्त्तवृद्धि४॥ अनियादरुव॥ अस्तानि
 । अस्तायिषातां। अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥
 रुत्सत॥ अस्तादि॥ ॥ अस्तातांयस्यानक्त्यसि वादयाया अर्त्त॥
 अतिगयहसादयद्विष्टा॥ अस्तायिषातां। अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥
 अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥
 अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥
 अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥ अस्तायिषत॥

॥ वा रु य ण्ति हि न ॥ स धा गु ४ ॥ य द्वा दि य रु य ण ४ ॥ अ द्वा धा धा तु
 स ण्ति रु व ति ॥ धा तु त्वा रि वा द य ४ ॥ द क णा नू व न्ध त्वा दा स न
 प द ॥ अ ष क र्त्तु नि अ द ण् रु य का ला प अ ति भ य न रु व ती ति वा
 रु य ग ॥ वा रु य त ॥ वा रु य ता ॥ वा रु य त ॥ उ ऊ पा ल ना रु व द
 न्था ४ ॥ य द्वा दि य ॥ म पा ना उ व च य ४ ॥ य द्वा दि गु ४ ॥ उ ऊ र्त्त
 ॥ अ ष ॥ अ द ॥ वा उ ऊ र्त्त ॥ अ द्वा धा ण्ति ॥ वा तु ऊ र्त्त ॥ वि षो ॥ वा उ

२०२

ऊ र्त्त वा तु ऊ र्त्त या ता वा तु ऊ र्त्त न ॥ अ णि षि ॥ वा तु ऊ र्त्त ता ॥ वा तु
 ऊ र्त्त ता ॥ वा तु ऊ र्त्त ता ॥ ऊ र्त्त न ॥ अ वा तु ऊ र्त्त ता ॥ अ वा तु ऊ र्त्त ता ॥ अ
 वा तु ऊ र्त्त न ॥ ण्ति ॥ रु षा लं क णि ॥ वा रु षा ग ॥ वा रु षा ग वा
 रु षा न ॥ वा रु षा ग वा रु षा या ता ॥ वा रु षा न ॥ वा रु षा ता वा
 रु षा ता ॥ वा रु षा ता ॥ अ वा रु षा ग ॥ अ वा रु षा ता ॥ अ वा रु षा न ॥
 च का ना द्वा रु ऊ र्त्त च ॥ मू ह वा चि ॥ म मू ऊ र्त्त ॥ म मू ऊ र्त्त ॥ म

मूक न॥ वि॥ भो मूक न॥ भो मूक या तां॥ भो मूक न॥ अ
 मिषि॥ भो मूक तां॥ भो मूक तां॥ भो मूक न॥ अनय न॥ अद॥
 अमो मूक न॥ अमो मूक तां॥ अमो मूक न॥ अ॥ अदि॥ लिह आखादने॥
 यद्दि॥ अय कर्तु नि॥ अद॥ ललि कर्ता॥ ललि कर्ता॥ ललि कर्ता॥
 अललि कर्ता॥ कृ दानादनया ४॥ यद्पुत्यय ४॥ द्वित्वं च॥ कृ दाना
 त्रित्वं च॥ यदीति यु॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥
 अ॥

२१०

लाहा॥ संजा घाटी॥ संजा घटतु॥ समजा घट॥ समजा घट॥ समजा
 घट॥ समजा घट ४॥ रस कर्ता॥ यद्पुत्यय ४॥ वान्य नुयटा ल
 गनुवर्तुता॥ कादिवदपा लुक्॥ संवा रूवीति॥ संवा रूवीति॥ संवा रू
 न ४॥ नूधमात्रिति उवा॥ संवा रुवति॥ संवा रूयात्॥ संवा रूवीत्॥
 संवा रूत्॥ संवा रूताहा॥ समवा रूवीत्॥ समवा रूता॥ समवा रूता॥
 समवा रूता॥ समवा रुव ४॥ समवा रूवी ४॥ समवा रू ४॥ अ॥ अ॥ अ॥

लिखाङ्गुलसंवाहवति॥ ॥ इह इह कत्र (ला) मका गाना मृदू
 पञ्चानां च पूर्वस्य पदं लुकि सति त्रुक् त्रिक् त्रीन् आगमावका यः॥
 ममात्रिः स्य स्यापदः॥ त्रः॥ कृदाश्च॥ वा॥ के॥॥ यिति त्सीति
 ङीकात्रः॥ गुलः॥ चर्क त्रीति। च त्रिक् त्रीति। च त्रीक् त्रीति। च
 कर्हि। च त्रिक् कर्हि। च त्रीक् कर्हि। च कृत॥ च त्रिक् कृत॥ च त्रीक् कृत॥
 च त्रिक् नन अन्तस्माद्भवति॥ चर्कति। च त्रिक् कति। च त्रीक् कति। चर्क त्री

२२९

षि। च त्रिक् त्रिषि। च त्रीक् त्रीषि॥ ङीकात्राहव॥ चर्क षि। च त्रिक् क षि। च
 त्रीक् क षि। चर्क थ॥ च त्रिक् थ॥ च त्रीक् थ॥ चर्क था। च त्रिक् थ॥ च त्रीक्
 था। चर्क त्रीमि। च त्रिक् त्रीमि। च त्रीक् त्रीमि। चर्क मि। च त्रिक् मि। च त्रीक्
 मि॥ चर्क व॥ च त्रिक् व॥ च त्रीक् व॥ चर्क म॥ च त्रिक् म॥ च त्रीक्
 म॥ वि॥ चर्क यात्। च त्रिक् यात्। च त्रीक् यात्। चर्क याता। च
 त्रिक् याता। च त्रीक् याता। चर्क यू॥ च त्रिक् यू॥ च त्रीक् यू॥ चर्क

या॥ चत्रिकया॥ चत्रीकया॥ चर्कया॥ चत्रिकया॥ चत्रीकया॥
 । चर्कयाम॥ चत्रिकयाम॥ चत्रीकयाम॥ ॥ आभिषि॥ यद्विष्टा॥ यद्वल्लूक
 ॥ न॥ कृष्ण॥ ॥ पितृपूजवद्वाञ्छीका॥ चर्कत्रीगु॥ चत्रिकत्री
 । चत्रीकत्रीगु॥ चर्कगु॥ चत्रिकगु॥ चत्रीकगु॥ चर्कगात॥ चत्रिकगात॥
 । चत्रीकगात॥ चर्कगां॥ चत्रिकगां॥ चत्रीकगां॥ ॥ पूर्ववत्तवद्वा चचनेन
 ॥ चर्कगु॥ चत्रिकगु॥ चत्रीकगु॥ चर्कहि॥ चत्रिकहि॥ चत्रीकहि॥ चर्क

२२२

गात॥ चत्रिकगात॥ चत्रीकगात॥ चर्कगी॥ चत्रिकगी॥ चत्रीकगी॥ चर्क
 गा॥ चत्रिकगा॥ चत्रीकगा॥ चर्कगालि॥ चत्रिकगालि॥ चत्रीकगालि॥ च
 र्कगावा॥ चत्रिकगावा॥ चत्रीकगावा॥ चर्कगाम॥ चत्रिकगाम॥ चत्रीक
 गाम॥ ॥ कृष्ण॥ ॥ वाञ्छीपुष्टय॥ ॥ अचर्कत्रीगु॥ अचत्रिकत्रीगु॥ अच
 त्रीकत्रीगु॥ ॥ यद्व॥ ॥ दिष्टा॥ ॥ अचर्क॥ ॥ अचत्रिक॥ ॥ अचत्रीक॥
 । अचर्कगां॥ अचत्रिकगां॥ अचत्रीकगां॥ ॥ अचर्कगु॥ ॥

अचनिक नू॥ अचनीक नू॥ अचर्क नी॥ अचनिक नी॥ अचनी
क नी॥ अचर्क॥ अचनिक॥ अचनीक॥ अचर्क नी॥ अचनिक
नी॥ अचर्क नी॥ अचर्क नी॥ अचनिक नी॥ अचनी नी॥ अचर्क नी॥ अच
निक नी॥ अचनीक नी॥ अचनिक र्थी॥ अचनीक र्थी॥ अचर्क वा अ २२३
चनिक वा॥ अचनीक वा॥ अचर्क मा॥ अचनिक मा॥ अचनीक मा॥ वृ
तुवर्ह न॥ वृत्तिग्यं नितिहि न॥ अतिशय ह सादर्या द्दिष्टा॥

गियद्धप्रत्ययः॥ वृवृत्तिपञ्चतिस्त्रिभ॥ ३४॥ वृत्तिभूकात्रः॥
 । पूर्ववत्तूकत्रीगगमे॥ वेवर्हीति। वत्रिवर्हीति। वत्रीवर्ही
 ति॥ वृकोराहव॥ ववर्ही॥ उपधायाल्धार्गुणः॥ वत्रिवर्ही।
 वत्रीवर्ही॥ ववर्हृ॥ वत्रिवृहृ॥ वत्रीवृहृ॥ ववृत्ति। वत्रिवृ
 त्ति। वत्रीवृत्ति॥ ववर्हीषि। वत्रिवर्हीषि। वत्रीवर्हीषि॥ व
 वर्हि। वत्रिवर्हि। वत्रीवर्हि॥ ववृत्त्व॥ वत्रिवृत्त्व॥ वत्रीवृत्त्व॥

।वर्तुस्म॥वत्रिवृत्स्म॥वत्रीवृत्स्म॥विष्म॥वर्तुस्यात्।वत्रिवृत्स्यात्
 ।वत्रीवृत्स्यात्।वर्तुस्यात्।वत्रिवृत्स्यात्।वत्रीवृत्स्यात्।वर्तुस्य॥वत्रि
 वृत्स्य॥वत्रीवृत्स्य॥वर्तुस्या॥वत्रिवृत्स्या॥वत्रीवृत्स्या॥वर्तुस्यात्।
 वत्रिवृत्स्यात्।वत्रीवृत्स्यात्।वर्तुस्यात्।वत्रिवृत्स्यात्।वत्रीवृत्स्यात्।वर्तुः
 स्यात्।वत्रिवृत्स्यात्।वत्रीवृत्स्यात्।वर्तुस्यात्।वत्रिवृत्स्यात्।वत्रीवृत्स्यात्।वर्तु
 स्यात्।वत्रिवृत्स्यात्।वत्रीवृत्स्यात्॥**श्रमिषि॥**वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु

२२४

।वत्रीवर्तुनीनु।वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्रीवर्तुनीनु॥वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्री
 वर्तुनीनु।वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्रीवर्तुनीनु॥**द्व॥**वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।
 वत्रीवर्तुनीनु।वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्रीवर्तुनीनु॥**मसात्॥**मसादूत्तस्य
 रुधिर्वक्तव्य॥वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्रीवर्तुनीनु।वर्तुनीनु।व
 त्रिवर्तुनीनु।वत्रीवर्तुनीनु।वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्रीवर्तुनीनु।वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु
 नि।वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्रीवर्तुनीनु।वर्तुनीनु।वत्रिवर्तुनीनु।वत्रीव

लाम॥ अनयतन॥ अवर्चनीत्। अवत्रिवर्तीत्। अवत्रीवर्तीत्॥ दिष्टा
 दसात्। ॐ निदिप्रसिधा ल्लिपि॥ अवर्चत्। अवत्रिवत्। अवत्रीवत्।
 अवर्चुर्ल। अवत्रिवर्ल। अवत्रीवर्ल॥ अनउस॥ अवर्चर्गु॥ रुते
 द्विर्चचना दूषिपत्रयु ल्लवनि॥ अवत्रिवर्गु॥ अवत्रीवर्गु॥ अवर्च
 नी। अवत्रिवर्ती॥ अवत्रीवर्ती॥ अवर्चत्। अवत्रिवत्। अवत्रीवत्। अव
 र्चुर्ल। अवत्रिवर्ल। अवत्रीवर्ल। अवर्चुर्ल। अवत्रिवर्ल। अवत्रीवर्ल। अव

२२५

वत्रिवर्ल। अवत्रीवर्ल। अवर्चत्। अवत्रिवत्। अवत्रीवत्। अवर्चत्। अव
 वत्रिवत्। अवत्रीवत्। ॐ ह्यादि॥ ग्रहउयादान॥ यद्दुर्लुकि॥ द्वित्वं
 । पूर्वस्य हसादि॥ अष॥ कृदाश्च॥ आग ॐ निपूर्वस्या कात्र॥ पिति
 त्सी कात्र॥ आगृहीतिकचिरु लूपयियदित्कानिवत्त्वनयक्षगुहा
रु ॐ निरुत्त्वन थार्द्ध ॐ ध कात्रकृता। नस्य ह्रस्वनरु कात्र॥ रु ॐ नि
रु कात्रलाप॥ पूर्वस्य दीर्घ॥ अग्रदि॥ कचिरुसंप्रसारणीकृत्वात्

४॥यु८॥आगर्हि॥अग्र८॥अग्रदति॥सिधिरु॥आग्रक्षि॥अग्रध॥
 अग्र८॥अग्रक्षि॥अग्र८॥अग्र८॥कर्तुयद्॥कर्तुनूपमानादाचने
 ल्ययद्वयथारुवति॥अनयगंतिस्ति॥यि॥तिदीर्घ॥काक८
 अन॥वश्चाचनतीतिस्नायन॥यतिनायनमूर्ख॥अपूत्रस
 यगंतिस्ति॥यदिसलायावका८॥य॥तिदीर्घ॥अपूत्रा
 यनकू८॥अजसा८॥अपूत्रानिह्यसलाय८॥अ॥आ॥अ॥अ॥अ॥

२२६

आर्यनद्व८॥अश्वयनपंगु८॥ययस्रुविरुषया॥ययायन॥
 पयस्यनगु८॥ययस्यता॥ययस्यता॥अपयस्यत॥उयमानादाचा
 नर्थवि८॥ययथावका८॥व८॥व८॥व८॥व८॥व८॥व८॥व८॥व८॥
 तीतिचन्द्रतिमूर्ख॥कू८॥दति॥दति॥क८॥ला८॥ति॥का८॥॥आ८॥वा८॥उय
 माना८॥क८॥म८॥अ८॥उयमाना८॥ययथारुवति॥आ८॥वा८॥नर्थ८॥अ८॥का८॥नर्थ
 च८॥का८॥॥पू८॥नी८॥यति८॥गि८॥षा८॥मू८॥या८॥आ८॥य८॥॥पू८॥नी८॥यत८॥पू८॥नी८॥यति८॥

पूनीयन्। पूनीयन्। अयूनीयन्। प्रासादीयति। कृटीरिदू ४॥ **रुस**
लायां॥ ङ्क्यायामात्मनः ४॥ **धारात्रिक्वायामार्थआत्मनः ४** सयत्य
 थारुवति॥ **स्वसंवधिनीसाचदित्वं।** **कस्वङ्गित्कस्वत्वं॥** मयानीऊ
 वचयाङ्गितिवकात्र ४॥ **रुवितुमिच्छतिवृहषति।** **उवर्ध्नाकाच्च॥** ग
 नवृहवति॥ **जगमानरुवति॥** वृहषन्। वृहवन्। अ० वृहषय्
 ॥ वृ४॥ **उ० अ० अ० वृहषान् वृ४॥** **उवर्ध्नाकाद्वर्ध्नाकाच्चयदु**

२२१

दा० अ० सयत्र॥ **जगमानरुवति॥** **नानिदिभा॥** **ङ्कटवजिगसयत्यथ**
 यत्रेयुः **नरुवति॥** **सदीर्घ ४॥** **धारा० सयत्रदीर्घा०** **रुवति॥** **चि० च**
 यन्। **चरुमिच्छतिचिचीषति॥** **चिना० ४॥** **नादोवाकित्वं॥** **चि की**
षति॥ **ङ्गित्त्रयद्वयं॥** **चिकीषन्।** **चिचीषन्।** **चिचीषन्।** **चिकीषन्।**
अ० चिचीषन्। **अ० चिकीषन्॥** **कि० अ०॥** **सयत्रा० कथा० ऊर्गि० ४॥** **सदीर्घ ४**
॥ **किगीषति॥** **किगीषन्।** **किगीषन्।** **अ० किगीषन्॥** **ङ्कटवृधयने॥**

ॐ ह्रीं गम ॥ ॐ ह्रीं धामा ॥ गमाद लभरुवति सयत्र ॥ हनिगमा त्रयधया
 ॥ हनहिंसागत्याग नूगती अनया त्रयधया दीर्घा रुवति सयत्र ॥ अ
 धिजिर्गसति ॥ यमिश्र लो ॥ ययूषति ॥ यय विषति ॥ ययूषत ॥ ययूष
 गु ॥ अययूषत ॥ दू दान ॥ कू हा श्रू ॥ मयाना ऊ व चया ॥ ऊ दूषति
 ॥ रु दूषत ॥ रु दूषतु ॥ अरू दूषत ॥ नू गद् ॥ नू नूषति ॥ नू नूषत ॥ नू नूष
 गु ॥ अ नू नूषत ॥ श्रू य व यया क ॥ य ॥ ॐ श्रू श्रू य ॥ श्रू का न ॥ पूर्व ॐ

२२८

कानिरु वति सयत्र ॥ गु ल ॥ य कृ त्य (र्था ३ न्य गु सार ॥ सय ल्यया द
 न्य गु प्र कृ त्य (र्था धा त्व (र्था लो ल ॥ गु ल ॥ अय ध नं रु वति रनका
 ॥ नय ॥ या क रु मि च्छ नी गिया क स्य प्रा ध न्यं न त्वि च्छा या ॥ का
 ॥ स व न्ध य नि ॥ वा ॥ कृ ॥ कि ला त्व स ॥ स धा तु ॥ नि य प्र त्य ग ॥
 ॥ अ प्र क र्त्त रि ॥ अ द ॐ ल्य का न ला य ॥ का ॥ न य कृ मि च्छ नि
 यि य कृ ति ॥ यि य कृ त ॥ यि य कृ तु ॥ अ यि य कृ त ॥ या या न ॥ पा तु मि च्छ

नि॥सप्रत्ययः।द्वित्वं।ऊस्वः।यः।पिपासति।पिपासितुम्।पिपा
सतु।अपिपासत्॥अकर्मण्यु॥स्यजहानो॥सप्रत्ययद्वित्वं।पूर्वस्यह
सादिः।अबः।यः।चोः।कृः।नितिउकारस्यगकारः।रस्यख
भ्रूचयाप्तानामितिककारः॥किलात्स्यः।स्यः॥नित्यकृति।नित्य
कृतम्।नित्यकृतु।अनित्यकृतम्॥वचपत्रित्यषट्॥पूर्ववत्॥वि
वक्तु।विवक्ति।विवक्तु।अविवक्तु॥पृचीर्षपर्क॥३४॥

पूर्ववत्॥ पिष्टृक्षति॥ पिष्टृक्षत्॥ पिष्टृक्षु॥ अपिष्टृक्षत्॥ ञ्छ्यादि॥
 ग्रहउपादाना॥ ग्रहांकृतिच॥ चकारनस्यस्यस्यकृतिरुदित्वं
 सृविर्त्त॥ गनसंघस्यनर्त्त॥ यश्चाद्वित्वं॥ न॥ कृदाश्च॥ य॥
 दा॥ आदिउवा नामिति चकार॥ घटा॥ क॥ कषसंघा॥ गद
 ॥ जिष्टृक्षति॥ जिष्टृक्षत्॥ अजिष्टृक्षत्॥ अर्वंग्रहसंघन॥ ग्रहयु
 दा॥ स॥ ग्रहयुदाङ्गि॥ स॥ नि॥ अ॥ ग॥ न॥ रु॥ वि॥ ग॥ न॥

गमिनरुवति॥रुघुक्षति॥युक्कुक्षीप्यायी॥ग्रहांद्विगितिचनिसंपसा
 नर्त्त॥द्वित्वं॥त्र४॥य४स॥कुगषत्राजादीनामितिषत्वं॥ष४॥४कस
 ॥ग्रहिल्वपिपुक्कांसनि॥संघत्रसंघसात्रर्त्तरुवति॥अनीषांधरूना
 नरुवति॥पिपृक्षति॥पिपृक्षत्॥पिपृक्षतु॥अपिपृक्षत्॥हनर्दिता
 सख्या४॥स्यत्यय४॥द्वित्वं॥कृदाश्च४॥ॐतिपूवस्योतस्यसया
 नांऊवचपाॐतिऊकात्र४॥य४स॥हर्न४सालितु॥हर्नर्दति४स

२३०

कात्रालिरुवति॥लित्वादयधयावृद्धि४॥हनाध्या॥नश्चयदान्कमसा॥कि
 घांसति॥किघांसत्॥किघांसतु॥अकिघांसत्॥ॐत्यादि॥शू॥४कत्रः
 ॥॥मनॐत्र॥मकात्रस्यॐरुवतिद्विगितिचयत्र॥असार्वगिकार्य
 विधि४॥किकित्रसतिपुॐतिह्मि॥कृदाश्च४॥श्रीर्विदस॥दीर्घ४॥
 चिकिर्षति॥चिकीर्षत्॥चिकीर्षतु॥अचिकीर्षत्॥ॐत्यादि॥ह॥४दत्र
 ॥॥किदीर्षति॥किदीर्षत्॥किदीर्षतु॥अकिदीर्षत्॥रूपुवननत्र४

अ॥४॥तितीर्षति॥तितीर्षत्॥तितीर्षतु॥अतितीर्षत्॥शूक एकत्रला॥
वृ॥सन्ति॥तिस्मिन्॥द्वि॥अतिद्वित्वं॥अतः॥नू॥नादय॥४॥अचिद्दिप्त
दीर्घ॥यक् चतुर्थ॥॥तिथ्यक्तुल्यय॥४॥यत॥४॥यकात्रात्यूर्वाश्चि
कात्रस्तचलोपावतिन्नपिविषय॥रावक्तर्मलिव॥तिप्रका २३१
त्रस्याकात्रलाय॥४॥यक् चतुर्थ॥चिकीर्षतेदवदहन॥चिकीर्ष
त्॥चिकीर्षतां॥अचिकीर्षत॥॥त्यादि॥चतुष्टयं॥पूयचषयाक

॥यत्रताञ्जलिस्तिष्ठति॥अतिअथदसादयद्द्विष्टा॥आन४॥यद्विष्टतिपूर्व
स्यब्रुकास्माकात्राद(अ)रुवति॥वाअग्रलूगनूवरुर्गञ्जितियद्॥
सिस्ततासीस्ययामिद्॥पायचिता।पायतात्रो।पायचितात्र४॥पा
यचितासि॥ञ्ज्यादि॥दादाने॥दातिपूञ्जितिस्तिष्ठति॥ञ्ज्यायामा
त्मन४स४॥द्विर्त्वा॥ञ्जम्॥सनिमिमीमादात्रअलरुअकपतपदा
मिस्त्रनस्य॥दादीनास्त्रनस्यसिपनेञ्जसाद(अ)रुवति॥पूर्वस्यच

[illegible]

ह्रिभं॥ स्वस्त्यवा ममा नामिगिरुकात्रस्ययकात्र॥ ॐ ह्रिभं॥ ॐ ह्रादभ
॥ पूर्वस्यचलाय॥ ॥ ह्रात्रायाश्च॥ ॥ संथागमश्च॥ ॥ ॐ गिरुकात्रलाय
॥ लिप्सुभं॥ लिप्सुत॥ लिप्सुतां॥ अलिप्सुत॥ ॥ त्रुत्रातुश्च॥ ॥ पूर्ववत्॥ ॥ त्रि
प्सुभं॥ त्रिप्सुत॥ त्रिप्सुतां॥ अत्रिप्सुत॥ ॥ यत्कृ यतनं॥ ॥ यतांवत्॥ ॥ यता
धमास्तुकात्रस्यवा ॐ ह्रुवति॥ यगिरुमिच्छति॥ पिपतिषति॥ पिपति
षत॥ ॥ पिपतिषति॥ ॐ ह्रुवति॥ ॥ पित्सति॥ पित्सन्॥ पित्सतु॥ ॥

पितृसूत॥ पूर्ववदिह्यादि॥ अष्टुवाफो॥ सप्तस्य य४। स्रवादि४। यत्र ॐ
तियकात्रस्य द्वित्वं। आप्रातर्त्री॥ अप्रातर्द्वात्रा४। स्रवस्य ॐ कात्रा ८
ॐ रुवति पूर्वस्य त्रयकात्रस्य लाप४॥ ॐ यमि। ॐ यमू। ॐ यमू
। नुयमू॥ ॐ ह्यादि॥ यदं॥ ॐ कायमात्मन४। स४॥ साचद्वि॥ अ॥ सि
सताहीस्य यामिद॥ य४। अ॥ अगत्क॥ ॐ॥ अमिजिषति। अमिजु
मिचुति। अमिजिषत्। अमिजिषत्। अमिजिषत्॥ स्रवादि४। द्वि॥

द्वि॥ गुप॥ गपन॥ क॥ त्स॥ य॥ ४॥ गु॥ क्य॥ ४॥ गु॥ य॥ ति॥ उ॥ कि॥ त॥ गु॥ या॥
 दि॥ गु॥ या॥ दि॥ ह्य॥ ४॥ स्वा॥ र्थ॥ स॥ ष॥ ह्य॥ य॥ रु॥ व॥ ति॥ । त॥ स्मि॥ न्स॥ ति॥ धाः॥
 ता॥ द्वि॥ र्व॥ च॥ नं॥ ॥ क॥ हा॥ श्रू॥ ४॥ रु॥ गु॥ ष्प॥ ता॥ रु॥ गु॥ ष्प॥ ता॥ रु॥ गु॥ ष्प॥
 ता॥ । अ॥ रु॥ गु॥ ष्प॥ ता॥ । उ॥ रु॥ य॥ प॥ दी॥ ॥ कि॥ त॥ ग॥ ग॥ प॥ न॥ य॥ न॥ स॥ ग॥
 थ॥ व॥ ॥ क॥ हा॥ श्रू॥ ४॥ चि॥ कि॥ त्स॥ ति॥ । चि॥ कि॥ त्स॥ त्॥ । चि॥ कि॥ त्स॥ तु॥
 । अ॥ चि॥ कि॥ त्स॥ त्॥ ॥ ॐ॥ ह्या॥ दि॥ ॥ ति॥ उ॥ ति॥ ग॥ न॥ द॥ मा॥ या॥ च॥ ॥ उ॥ रु॥

यपदी॥कृगनाजादीनामिगिषत्वं॥षडा४क४भा॥कि ला
 ल्प४भा॥कषसंथागक४॥गिगिद्वर्ग॥गिगिद्वर्ग॥गिगिद्वर्ग
 ।अगिगिद्वर्ग॥गिगिद्वर्गि०त्यादि॥मानविचात्रलपूजायांच
 ॥मानसग०गिगिद्वर्ग॥द्वित्वं॥कस्र४य४भा॥मानादीनांपूर्वस्य४ २३४
 पत्रदीर्घावका४॥नश्रपदार्कजस्र॥मीमांसना॥मीमांसनी॥अ
 मीमांसना॥वधनिन्दाया॥वधप्रग०गिगिद्वर्ग॥द्वित्वं४भा॥आदि३

वानामिगिरुकात्र४॥खसचपाजस्रानामिगिरुकात्र४॥पूर्वस्यच
 दीर्घ४॥अत्यासविप्रखपवादानापसर्गवाधर्ग॥सामान्यथाविभा
 षावलवानासिअत्र॥वीरुत्सर्ग॥वीरुत्सर्ग॥वीरुत्सर्ग॥अवीरु
 त्सर्ग॥दानभनर्गजन॥पूर्ववर्ग॥दीर्घासर्ग॥दीर्घासर्ग॥दी
र्घासर्ग॥अदीर्घासर्ग॥उरुययदी॥भीभांसर्ग॥भीभांसर्ग॥भीभांसर्ग॥
अभीभांसर्ग॥उपूत्रकल॥आय४॥युपादित्य४स्वार्थआयपत्य

आहवति॥उचभायाहयात्रितियुल्ल॥लभायायति॥लभायायतालभा
 पायतु।अलभायायत॥उरुययदी॥नवंधूयसंताय॥धूयायति
 धूयायत॥धूयायतु।अधूयायत॥उरुययदी॥विक्रयति॥विक्राय
 ति।विक्रायत॥विक्रायतु।अविक्रायत॥पलयाहानमुभोयनच॥
 पलायति।पलायत॥पलायतु।अपलायत॥पलायतीति॥अपलाय
 पलायती॥नाम्नायन्तीवासा॥नाम्नन् क्रायामर्थययुह्यथाहवति

२३५

।गत्सन्निधाजसाकात्रन्तीकात्राहवति॥आत्मनःपूतुमिच्छति।पू
 तीयति।पूतीयत॥पूतीयतु।अपूतीयत॥धनमिच्छतिधनीय
 ति॥उदकस्यादनादज॥उदकमात्मनेच्छति।उदन्यति।का
 म्यमपीच्छति।कंचित्॥पूतुकास्यति॥कत्रलचय॥कं प्रादि
 त्य॥कत्रलार्थययुह्यथाहवति॥कं पूकत्राग्रितिकं पूयति॥उरुय
 यदी॥तप॥कत्रातीतिनयस्यति।मन॥कत्रातीतिमनस्यति॥उ

रुच्यपदार्थश्च ॥ वृषरुं वमैथूनमिच्छति । ॐ क्लार्थयप्रत्ययः
 सूगमगमिश्च ॥ वृषरुस्यति । दध्ना हाऊनमिच्छति । यप्रत्ययः
 । सूगमगमः । दधिस्यति । असूगमगमिश्च दधस्यति ॥ गद्वंकत्रा
 गीतिगद्यायनं । वेनैकत्रागीतिवेनायनं । कलहायनं । सूखा
 यनं । दूरायनं ॥ यदीर्घः ॥ ॐ ह्यादिङ्ग्यं ॥ शिषित्कत्रले ॥
 नाम्ना शिष्यप्रत्ययारुवतिकत्रले (र्थसचठित् ॥ शिष्यादित्तायः

[illegible]

प्रागीतिउदयति।उदयत्।उदयगुओदयत्॥पृथ्वादत्र॥पृथ्वा
 दङ्गति।अकारस्यत्र।रुवति।युथयति॥पृथूविस्त्रात्र॥दृष्टं कत्रा
 गीति।उदयति।कृष्णं कत्रागीतिकृष्णयति।मृडं कत्रागीतिमुज
 यति॥यूवालाया॥कनवा॥नूल्ययूवानेवाचक्ष॥कनं कत्रागी
 तिकनयति।पक्षनूल्ययति॥धना॥यत्र(ल॥यत्र(लपथाऊ
 यापात्रार्थश्चिपुस्यथारुवति।कुर्वन् कारयति य॥स॥यथाऊ

२३१

क॥कला॥श्रयचषपाक॥पचर्कंयत्रयति।नरस्मिन्नर्थेचश्चि
 पस्यय॥ठित्वात्।टित्वाय॥नृत्तउपधयाञ्ठितिवृद्धिसुधनुसंज्ञ
 यंतिवादय॥अपकर्तृत्रि॥गुलयादय॥पचरिकश्चिरुम
 न॥ययूकं।याचयति॥असूअनूजिह्वो॥श्चिपस्यय॥असि
 तियूञ्ठितिल्लिर्न॥अपकर्तृत्रि॥गुल॥अयादय॥अनूअस
 यति।अनूअसयत्।अनूअसयत्।अनूअसयत्॥ञ्ठ्यादि

॥ रुनदिंसागस्था ॥ रुनाद्यट् ॥ रुक्कृडां र्द्यदादल्मरुवति ।
 स्त्रियत् ॥ उपधाया दीर्घः ॥ घातयति । घातयत् । घातयतु । अघा
 तयत् ॥ षट् विसृज्य लगत्यवसादनम् ॥ सृज ॥ सृजत् ॥ सृजिष्यति ॥ सृ
 दादल्मरुवति वृद्धिः ॥ सातयति । सातयत् । सातयतु । अस्रातयत् ॥ अद् ॥
 आतनम् ॥ अद् ॥ आतयति । आतयत् । आतयतु । अआतयत् ॥ आमा
 स्त्रियत् ॥ अगताविहस्य धाता नाका नाकस्य च स्त्रियत् ॥ अगतागमा
 रु

२३८

वति ॥ अर्पयति । अर्पयत् । अर्पयतु । आर्पयत् ॥ अर्दा ॥ अर्दानम् ॥ दापय
 ति । दापयत् । दापयतु । अर्दापयत् ॥ अगतिनिवृत्तिः ॥ कृतिपुंतिहिः
 ना ॥ नाता स्त्रियत् ॥ कृतिपुंतिहिः ॥ धाता ॥ यत् ॥ लङ् ॥ प्रत्ययः ॥ अयादम् ॥
 कृापयति । कृापयत् । कृापयतु । अकृापयत् ॥ यापापलम् ॥ या
 पयति । अततो ॥ गुल्मिर्लस्य गतिरित्युल्लङ्घनम् ॥ अर्पयति । अर्प
 यत् । अर्पयतु । आर्पयत् ॥ अर्द्ध ॥ अर्धम् ॥ अर्द्धादम् ॥ अर्धकाव

॥ॐ॥दिकावक्ष्यपसर्गता नव्यरिचत्रत॥अधिपूर्व॥धनान्ता
मिन॥आदिस्यत्रस्याश्लितिवृद्धि॥सेन्राय॥यतन्निचकात्र
नाप॥अक्षपयति॥अक्षपयता॥अक्षपयते॥अक्षपयता॥पू
नागुलवकाय॥कीलकाय॥अधुत्यय॥ॐ॥दिकान्ता
अपयति॥ॐ॥स्यादि॥लीढविलाय॥वृद्धि॥यत॥उपधातु
स्ययकात्रस्यलोपाहवति॥यलाय॥विलाययति॥यापात॥

੨੩੮

॥ पादयुग्मक व्य४ ॥ पाययति । पाययत । पाययतु । अपाययत्
॥ आह्वयप्र ॥ आननूकन । असंश्चक्रा । आमा ॥ आययति । अ
ययत । आययतु । अआययत् ॥ प्रीष्ट्वृष्ट्वक व्य४ ॥ प्रीः
लयति । प्रीलयत । प्रीलयतु । अप्रीलयत् ॥ धूष्टकं यन ॥ धूनय
ति । धूनयत । धूनयतु । अधूनयत् ॥ पक्ष्यीष्टिति पञ्चतिष्ठित
॥ वृद्धि ४ ॥ ने आय । सभारु ४ ॥ अयक रुति ॥ युल योदलो ॥ या

ययति। नुर्वधवयति। जानातवाकस्य ४॥ क्वाग्रववाधन। क्वापय
 ति। क्वापयति। क्वालयति। क्वालयति। अमयति। अमयति। अिह
 यिषति॥ वरिहसदीर्घतीचवकाया॥ क्वाववाधन॥ क्वापयय ४
 । पूर्वक्वापिहतिहिति ॥ सधनु ४॥ क्वायामात्मन ४स ४॥ द्वित्वं २४०
 कस्य ४॥ पूर्वस्यहसादि ४अथ॥ य ४सा। सिसतासीस्ययामिद्र ॥
 अिहपिसंति जायतयु (लकृते ॥ ननुय ॥ किलाल्य ४स ४॥ अि

क्वापयिषतिहिद्वं॥ धनुत्वाहिवादय ४॥ पद॥ अिहपिसंतिहि
 तं॥ क्वामाद्विद्रुकास्यद्विलापय॥ अकाताकाद्विद्रुकास्यधाताका
 तस्य क्वात्रादल्लहवनि पूर्वद्रुयस्यचलाय ४॥ अत्रितिकिकात्र
 ला ४॥ सधनु ४॥ धनुत्वाहिवादय ४॥ क्वापयति॥ ॥ चूत्राद्वि ४॥ चू
 त्रादगल्लत्वात्थिप्रस्ययाहवति॥ चूत्रस्य॥ उपधयालधा
 त्रितिशुल ४॥ चात्रिहितिहि ॥ सधनु ४॥ अयकरुत्रि॥ शुल ४॥ न

[illegible]

ॐ तिष्ठति ॥ १४४ ॥ ॐ अगमविक्रान्ता कासादिप्रत्ययापनता ॥
लघि न रुवति ॥ भनति क्लृप्तिषति ॥ १४५ ॥ किति द्वितिवचन ॥
लघि न रुवति ॥ लघा दीर्घः ॥ अदिसति पूर्वस्त्वन्धना लघा दीर्घा
रुवति ॥ अच् चूचत् । अच् चूचती । अच् चूचन् । अच् चूचतः ॥ अच् चूच
तम् । अच् चूचतम् ॥ अच् चूचन् । अच् चूचाव । अच् चूचाम ॥ विद क्लृप्तम् ॥
अवी विदत् ॥ दुरुय्युज ॥ अद् दुरुत् ॥ ह्वमानलापो यनु जवन

रुवति॥ गनश्रुचकथन॥ श्रुतिलघोऽकस्वउपधया॥ श्रुतिसृतिपू
र्वसंवन्धिनाश्रुका नस्थेकारुवतिलघोऽपनउपधयाकस्वश्च
॥ श्रुपचषपाक॥ श्रुपुल्यय॥ श्रुतउपधयाऽन्तिवृद्धि॥ दिवा
दावत्॥ श्रुपाचिऽन्तिस्तिर्न॥ श्रुत्रद्विश्च॥ कस्व॥ श्रुपपाचिश्रु
ऽन्तिजान॥ श्रुत्रितिश्रिलाय॥ श्रुपीयचत्॥ श्रुपीय०त्॥ श्रुजीऊ
नत्॥ पदगती॥ प्रतियूर्व॥ प्रल्यपीपदत्॥ चटचष्टायां॥ श्रुतिद्वि

[illegible]

ठिकन (॥) सचठिना सुभरु ॥ द्विवादावत् ॥ स्वराद ॥ १४४ ॥ १४५ ॥
 रुद्विष्य ॥ स्वराद ॥ यत्र ॥ १४६ ॥ कात्रमात्रमायस्यद्विर्त्त ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ओ ॥ अदिपूर्वस्य ॥ १४७ ॥ अदि यत्र पूर्व रुकात्रस्य रुकात्रो रुवति ॥ ३३ ॥
 रुता ॥ अगतिनिवृत्ति ॥ १४८ ॥ अद ॥ १४९ ॥ अद ॥ १५० ॥ अद ॥ १५१ ॥
 पूके ॥ अदि ॥ १५२ ॥ अदि ॥ १५३ ॥ अदि ॥ १५४ ॥ अदि ॥ १५५ ॥
 ॥ १५६ ॥ अदि ॥ १५७ ॥ अदि ॥ १५८ ॥ अदि ॥ १५९ ॥ अदि ॥ १६० ॥

२४३

गिरकात्र ॥ अगतिम ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अतुलधादीर्घत्वं ॥ पा पा
 न ॥ पादयुक् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥
 म ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥
 अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥
 अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥
 अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥
 अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥ अद्यतिष्ठियत् ॥

यत॥ चूनायप्रतिप्रियस्यय॥ कृ कृपिभूतं नूतिहिर॥ अनि
 तिहिलाय॥ न॥ नूत्यकात्र॥ नूदिलधीऊखउपधयांका
 न॥ लर्थादीर्घ॥ कृहाश्रू॥ अ॥ वचीकृयता॥ वचीकृयता
 । वचीकृयता॥ वचीकृय॥ वचीकृयता॥ वचीकृयता॥ वचीकृयीय
 चीकृयाव॥ वचीकृयाम॥ ॥ अथदशविलम्बविधिनिर्णयः॥
 दशदशयत्राद्यादि॥ दशदशति॥ दशदशदिनादशरुवतिहिर

२४४

दोविषय॥ दशिनपुद्गल॥ अस्मपशदश॥ यशति॥ अविक्त्रलत्वारुव
 तिवद्वर्धनयी॥ पल्लवतायश्रुता॥ अयश्रुता॥ पापानि॥ पां नूत्यस्यपिवादश॥
 ॥ पिवति॥ पिवता॥ पिवता॥ अयिवता॥ द्यागन्ध्यादाने॥ अस्मकिद्यादश॥
 किद्यति॥ किद्यता॥ किद्यता॥ अकिद्यता॥ अगन्ध्यादाने॥ अस्मध
 मादश॥ अगन्ध्यादाने॥ लाहधमति॥ धमता॥ धमता॥ अधमता॥ अह
 मतिद्यादश॥ तिष्ठति॥ तिष्ठ॥ तिष्ठता॥ अतिष्ठता॥ दानदाने॥ दाननूत्य

स्य यच्चादय ॥ यच्चति । यच्चन् । यच्चतु । अयच्चन् ॥ स्त्रा ॥ ओ च ॥ ॐ स्य स्य
 मनादय ॥ मनति । मनन् । मनतु । अमनन् । अगता विह्य मच्चादय ॥
 मच्चति । मच्चन् । मच्चतु । अमच्चन् । अगता विह्य स्य मवादय ॥ धा व
 ति । धावन् । धावतु । अधावन् । अदृगात्तर् ॥ अस्य गीयादय ॥ गीयन् ।
 गीयता । गीयता । अगीयन् ॥ ॥ षट्ठु विस्रल गत्यवसादना । अस्य सी
 दादय ॥ सीदति । सीदन् । सीदतु । असीदन् ॥ गमाच्च ॥ गमादीनां च

[illegible]

[illegible]

नाऊयना। प्रत्यवतिष्ठता संयश्चन। संगच्छता संशृल्लता संविरुता संपृ
च्छता आपृच्छता आतनृता ॥ आढादनास्यविद्वन् ॥ आढपूर्वादा ४
आत्मनेपदं रुवति। ननु मुखप्रसात्र ॥ १॥ आदरु। कादद्विश्च
॥ १॥ आददादा ॥ मुखप्रसात्र ॥ ननु व्यापदाति मुखं वृक्ष ॥ की ॥ ३॥ नृसं प
प्रियश्च ॥ अनूकीर्णता यत्रिकीर्णता ॥ समवयास्यपविश्य ४ ॥ ४ ॥ संनि
ष्ठता ॥ अवतिष्ठता ॥ प्रविष्ठता ॥ उपविष्ठता ॥ विविष्ठता ॥ उद्विष्टता ॥ गय ४ ॥ ॥

पसंताप उरुयत ॥ वितयता ॥ आदायमहना ॥ यमनियमनाहन
 हिंसायां ॥ आयच्छता ॥ स्वाङ्गमादता ॥ उदञ्चनह्याग ॥ उच्चवर्गमलीप्त
 मसृगीयायूकाञ्च ॥ संवर्गनयनदवदरु ॥ अन्तरसंचन
 गिदवदरु ॥ वद्विविकीर्णति ॥ वद्वनिवीनियानितनवद्व
 वि ॥ व्यवपत्रिय ॥ कुी ॥ विकीलीता ॥ अत्रकीलीता ॥ यत्रिकीली
 ता ॥ अपउयलरु ॥ द्वायायविगयता ॥ कुमात्रीदवदरु ॥ अपति ॥ वि

२४१

पता ॥ अन्तरअपति ॥ द्वायायविगयता ॥ कुमात्रीदवदरु ॥ अपति ॥ वि
 सता ॥ शुश्रुषता ॥ ससर्षता ॥ दिद्वता ॥ कर्मवति ॥ दात्र ॥ अन्तरदिंसा
 दता ॥ विवदन्तादिन ॥ अद्वावतिरुवता ॥ कुमूयादविक्षपा ॥
 कुम ॥ सायसर्गस्यदीर्घताचवकवा ॥ संकामति ॥ उपकामति ॥ कुम
 ता ॥ व्यादयर्थयथा ॥ म ॥ वित्रमति ॥ यत्रित्रमति ॥ उपत्रमति ॥ वृ ॥
 । स्यसयावृत्तादिस्थाधगु ॥ स्यसया ॥ यत्रयावृत्तागमावः

गि॥ वृश्च॥ वरुवरुना॥ धृषवृद्धो॥ मृधक्काया॥ स्यंदयग्रवले
 । कृपूसा मत्थं॥ स्यादि॥ स्यस्यार्वा॥ गगमारुवति॥ स्यायूकं ॥
 विवरुषिगि॥ विवत्सगि॥ वरुषिगि॥ वत्सगि॥ वरुषिगि॥ वत्सगि॥ मृ
 वादमृम॥ मृवादर्ग॥ मृमागमारुवति॥ मृवादीविषय॥
 मृवृभाद॥ ल॥ रुदादि॥ मृमृ॥ विदुला॥ विंदति॥ सति॥ नमृ॥
 ॥ दिद्विगि॥ नमृमागमारुवति॥ रुनदि॥ मृमृ॥ त्वादित्वादपे॥

२४८

निन्दति॥ वदि॥ मृरिवादननु॥ स्या॥ वन्दतो॥ वन्दता॥ वन्दतां
 । मृवन्दता॥ मकि॥ मकाया॥ मकता॥ ममादीर्घ॥ ममादीनादी
 धारुवत्यवादीविषय॥ दृष॥ मृमृ॥ मृमृदीर्घगि॥ कचि॥
 ॥ ममृदमृउय॥ ममृ॥ दिवादय॥ ममृति॥ दामृति॥ मृमृचे
 लने॥ ममृति॥ ममृ॥ ममृति॥ दृषवे॥ मृमृ॥ मृमृति॥ मृमृ
 कात्रय॥ ममृता॥ मकाय॥ मृमृ॥ दिवादय॥ ममृ॥ मृमृति॥

[illegible]

दसाद॥ चतुर्लूतिवादिगलनांमल्लदकात्रवसाद॥ यययस्यजग
मारुवति॥ त्रदाद॥ यत्रस्य॥ त्रदादित्वादथात्तुक्॥ त्रदित्रुश्रुवि
माचन॥ उपाधया लयात्रिपिगुल॥ त्रदिति॥ त्रदिन॥ त्रदनि
। त्रदिषि॥ त्रदिध॥ त्रदिमि॥ त्रदिथ॥ त्रदिव॥ त्रदिम॥ त्रदिति
स्वयितिल्यैर्वैश्वसिति॥ यानिनिस्तथा॥ यदिति॥ त्रैर्वैविश्वथा॥ त्रदादि॥ य
वकागल॥ त्रस्यलना॥ त्रसिति॥ स्वयिति॥ स्वयिति॥ स्वयिदि॥ यानिति

॥यक्षतक्षदसन्था॥४॥ऊक्षिति।ऊक्षित॥ऊक्षादप्रक्तात्॥यक्षाद
प्रक्तादत्तुसूरुवति॥भूऊक्षित्।भूऊक्षिता।भूऊक्ष॥४॥ऊक्षति।चका
क्षि।चकासति।जागर्हि॥जागर्ह॥४॥जाग्रति॥दत्रिदादत्रिजलायश्च
दितिदसस्त्रयप्र॥दात्रिदादूर्ध्वगोत्रिजगभारुवति।आकात्रला
यश्चदितिदसयप्रस्त्रयप्रआकात्रलायच॥दत्रिदादूर्ध्वगो॥दत्रि
दाति।दत्रिद्वित॥४॥दत्रिदति।दत्रिदासि।दत्रिद्विथ॥४॥दत्रिद्विथ।द

त्रिडामि। दत्रिडिव४। दत्रिडिम४॥ असुत्रुनजिहो॥ असि॥ असत्रि
४॥ असि४। सासति। जिष्यात्। जिष्यातां। जिष्य४॥ अमुजिह्वादा। जिह्वा
असुत्रुन४॥ दिह्वाहसान्॥ ॐ तिदिपसिपुलाघ४। नन नूअ४
॥ नूजिह्वां। नूसास४॥ असेत्रि४॥ असेत्रुमूधाया आकारं स्य
कात्राहवगिह्वातिहसंयत्र॥ ॐ जीअ४ सचत्रुकाव्य४॥ ॐ उ
मुनी॥ स्वसचयामसान्नी॥ हूहिहू४॥ ॐ हू। ॐ जीत। ॐ उत

। णीतिषा णीजथा णीतिधे णीज। णीवृहा णीश्रहा ॥ णीम
नस्वर्या ॥ ऋगषवाजादः षत्वं ॥ णीष्ट। णीमते। णीमते। णीति
षा। णीमते। णीतिधे। णीम। णीमहा। णीमहा ॥ अत्रो ॥ उकात्र
सोकात्राहवतिपितिस्मिन्नुवादी ॥ यूतृलृमुत्य णीश्रु ॥ योति ॥
णीद्विषयगुल्लहवति ॥ यवीति। यूतृ। यूवन्ति। प्रीति। प्रावी
ति। प्रीति। नविति। स्त्रीति। सुवीति। मुतृ। मुवन्ति ॥ लायस्त्व

नूदा रुहनां॥ नूनूदा रुहनादीनां च॥ मस्य लाघा रुवति कि
तिठिति प्रमथय॥ रुनहिंसा गथा॥ रुक्ति। रुत॥ रुभाधु॥ गर्वा
स्वय॥ घृत्नि॥ नम॥ नमयत्यया त्यत्र स्य नूनू स्वात्र स्य लाघा रु
वति॥ हिंसि हिंसायां॥ वृक्षदन्तम्॥ नमसा त्रस्य रूतिन का त्रस्या
का त्रलाघ॥ ठिति यत्र॥ दिनस्ति॥ हिंसु॥ हिंसुक्ति॥ सक्ता इन्द्र
पि॥ रुंश आमर्दन॥ रुनक्ति। रुंका॥ रुंऊक्ति॥ अषित्रै उदय संज

[illegible][illegible]

[illegible]

हलदा। अहलदा। अहंदा। अहंदन। अहलता। अहलजा
हंदा। अहदा। अहलदा। अहंका। अहंका॥ लिह आस्तादने॥ हा
रु० गथाई०॥ हूहि० हू०॥ उयभाया लधागु०॥ लेटदि०
मिहिन॥ दिहालायादीर्घा॥ रुकात्रय० रुकात्रवति। पूर्व
स्यचदीर्घ०॥ लदि। लीट०॥ लिहनि। वटा० कसा॥ किलास० स
०॥ कषप्यागा०॥ लकि। लीट। लिटा। लक्कि। लिम्क०। लिङ्क०।

[illegible]

लीटो। अलिहन्॥ अले॥ अलीटो। अलीट॥ अलेहं। अलिका। अलि
का॥ अहदहलिलिहदिहं। अहियात्मनपदमलूकवाचसकवकवा॥
हसषानात्सकदादर्थस्वप्नचषामसाना। हार॥ अष॥ अकस॥ अ
लिकता। अषूकता। अलीट॥ अहदहवकायावाचि। अहगं॥ अतिहि
ता। अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥
अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥ अहाराया॥

स्य ऊका नाद आरुवति॥ अलङ्कीवी अलङ्गीगुलीपाकि। संय
सा नलो साज ४। रुङ्गिनि। मऊ। मऊति॥ विश्रद्ध पूर्व ४। व्याचक्षे।
व्याचक्षाणि। व्याचक्षणी। ग्रन्थं ल्यत्ता षष्ठा ४क ४। घस्य कत्व
॥ व्याचक्षे। व्याचक्षात्थे। व्याचक्षुः। व्यचक्षे। व्याचक्षद्। व्याचक्षान्
। व्याचक्षीत। व्याचक्षौ। व्याचक्षानी। व्याचक्षणी। व्याचक्ष्व। व्याचक्षा
नी। व्याचक्षत॥ चकास्त दीको॥ चकास्ति। चकास्तु ४। चकास्ति।

२५५

चकास्यात्। चकाम्॥ दिपिसस्यतः सिधिवदिस्थाहसात्॥ अचका
त्। अचकास्मां। अचकासू॥ अचकात्। अचका॥ अचकास्मै। अचका
म्। अचकास्मै। अचकास्व। अचकास्मा॥ ख्यायुक्थन॥ आख्याति। आ
ख्यायात्। आख्यायातां। आख्यायू॥ आख्यातु। आख्यात्॥ मृक्षषु
डो॥ गृऊर्वृद्धिः पितृवः॥ वृ० अघराजादः ष०॥ मार्हि। मृष्टे॥ मृऊनि
। मृक्षात्। मार्शू। मृष्टाद्वा। मृष्टौ। मृऊन्तु। अमार्ठ। अमार्ज। अमृष्टौ

। अमृजन् । निजिविजिविषानिजादि ॥ निजं गु ८४ ॥ निजादीनां
 पूर्वस्य गु ८५ रुवति ॥ अयित्किस्तति ॥ निजिप्रलोचपाचलया
 ४ ॥ आदृष्ट ४ सु ४ ॥ रुहात्यादि ॥ त्वादिर्वचनं ॥ निप्रपूर्व ४ यत्
 यस्यापित्वादयथाया गु ८४ ॥ वाक् ४ ॥ स्वसंचयामसानां नि (लू २५/६)
 नकि ॥ नि (लू निक् ४ ॥ द्वितितिश्रुन स्यात् ॥ नि (लू निजति ॥ नि (लू
 नदि ॥ नि (लू निक् ४ ॥ नि (लू निश्चात् ॥ निप्र (लू निक् ॥ अस्मन्नयद ३

पि ॥ अवननिक ॥ अवनननिजात् ॥ अवनननिजत् ॥ अवनननिजात् ॥
 अवनननिका ॥ अवनननिजाकां ॥ अवनननिजतां ॥ अवनननिजा ॥ अवन
 ननि ॥ ४ ॥ त्यादि ॥ विजिप्रपृथक्कत्र (ल ॥ विवकि विविका
 ४ विविजति विविश्चात् ॥ विवकु ॥ अवनवक् ॥ विष्ठवाफो ॥ विवष्टि
 । विविष्ट ४ विविष्टति ॥ विविष्टात् ॥ विवष्टू ॥ अवनवत् ॥ एया लनयू
 नलया ४ ॥ कादिदिश्च ॥ अया लक् ॥ अया नि ४ पूर्वस्य ॥ अया

४ पूर्वस्य ॐ कात्रा रुवति ॥ वा दू पूर्व ४ ॥ वापियर्लि ॥ वापियृत् ४ ॥
 वापियृत् ॥ पियर्षि ॥ पियृथ ४ ॥ पियृथ ॥ पियर्म्भि ॥ पियृत् ४ ॥ पियृम ४ ॥
 ॥ वापियृत् ॥ वापियर्त्तु ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥
 पृत्तात् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥ पियृत् ॥
 स्थावा ॥ अजगमी रुवति ॥ वापियृत् ॥ अयियृत् ॥ अयियृत् ॥
 अयिप ४ ॥ अयिपृत् ॥ अयिपृत् ४ ॥ अयिपृत् ४ ॥ अयिपृत् ४ ॥ अयिपृत् ४ ॥

२५१

३३

अयिपृत् ॥ अयिपृत् ॥ अयिपृत् ॥ अयिपृत् ॥ वापियृत् ॥ वापियृत् ॥
 द्वित्रिस्तनउत्त ॥ वापियृत् ४ ॥ ॐ स्थादि ॥ अजगमी ॥ अयिपृत् ४ ॥ पूर्व
 सवर्षि ॥ अजगमी ॥ ॐ कात्रा रुवति ॥ अजगमी ॥ अजगमी ॥
 कात्रा ॥ अजगमी ॥ ॐ यर्लि ॥ ॐ यृत् ४ ॥ ॐ यृत् ४ ॥ ॐ यृत् ४ ॥
 यर्षि ॥ ॐ यृत् ४ ॥ ॐ यृत् ४ ॥ ॐ यर्म्भि ॥ ॐ यृत् ४ ॥ ॐ यृत् ४ ॥ ॐ यृत् ४ ॥
 यात् ॥ ॐ यर्त्तु ॥ स्थादि ॥ अजगमी ॥ अजगमी ॥ अजगमी ॥

नेयुमीनेयत्र४॥ द्युसर्वजयित्वेत्त्वात्तुयुल४॥ सिधिय॥ नेय४॥
 नेयत्र४॥ ॐ ह्यादि॥ ॐ गमी॥ अदादित्वा दपोल्लुका॥ युल४॥ न
 ति॥ ॐ न४॥ यन्नि॥ ॐ यान्॥ ननु॥ ॐ नादा॥ ॐ गी॥ यन्नु॥ ॐ दि॥
 नेता॥ नेमी॥ अयन्ना॥ ॐ यन्ना॥ यक्कुर्षु॥ यत्राद४॥ दि॥ यामा॥ नाः
 मिने॥ ॐ निवृद्धि४॥ ॐ पाय॥ ॐ यन्नु४॥ ॐ य४॥ ॐ यिथ४॥ ॐ
 य॥ ॐ यथ४॥ ॐ य॥ ॐ याय॥ ॐ यय॥ ॐ यिवा॥ ॐ यिम॥ ॐ

२५८

कथितुं

मू॥ काया॥ ॐ याद॥ अकृते उपधाया युल४॥ ॐ यव॥ उपदाह
 उवाव॥ अन्नामयननक्तान्नानार्थत्वाच्च सर्वथा॥ अरिधनुमग
 क्त्वादलमाख्यातख्यायने४॥ ॐ ह्याख्यातपक्रिया॥ ॐ ॥
 ॥ ॐ ॥ अथ कृदन्तपक्रियानि प्रयत्ने॥ कृत्कर्तृत्रि॥ वञ्चमा
 ल४॥ युल४॥ या४॥ कृत्कर्तृका४॥ नचकर्तृत्रिरुवन्ति॥ चकात्राज्ञाव
 कर्मल४॥ त्रिपि॥ पूयचषपाकि॥ रुव॥ लो॥ अगारुव॥ लो॥ पूययोह

[illegible]

२५८

वसाधत्रिजगमीरुवति॥रुसह्यायां॥गुल्लवादलो॥रुवतीतिरु
विता॥नुधवृद्धो॥नुधभन्नेति॥नुधिता॥गूयूत्रक्षलो॥स्मत्रगिसूति
सूयत्युदनुवन्धनू॥उदितावा॥उदिताधनात्रिजगमीवारु
वति॥उदितावत्युवाभद्यानुब्धसहस्ररुषत्रिषत्रूषांधगू
नांतादि४यत्ययस्यवा॥लभयोयतीति॥लभयिता॥लभया॥विधू
भक्तुमाहूत्यवा॥आद४षू४स्त्र४ंग॥थर्द्ध४सिद्धा॥सिधिता॥षूयुसव

हेतयतीति ।

यः॥ लकारो वृद्धिः॥ युवा न नाको॥ आवा दः॥ रुव गिरा व
यति वा रा व कः॥ लृ॥ छन्दः॥ लृना गिरा वय गिरा व कः॥ पू
॥ यव नः॥ पूना गिरा वयति वा या व कः॥ लृ॥ ह्यादि॥ द्वि यय न ल
॥ नाम्पय धात्वे॥ नाम्पय धात्वाः॥ कय ल्यथा रुवति॥ ककारो
गुल्यय गिरि धात्वे॥ द्वि यतीति द्वि यः॥ रुदि त्रविदा त्रल॥ रुदि न
कीति रुदि॥ द्वि दि त्रद्विधी त्रल॥ द्वि न रूति द्वि दः॥ रुव वाध

नी॥ श्रुतिनयी ह्याकात्रलोपः॥ जानामश्चकः॥ सुष्टु जानामीति सुः
 ३॥ ऋषीकृगृह्यादश्चकः॥ अतः ३॥ प्रियः॥ गित्रः॥ यचिर्नदियद्वा
 दत्रयूलिनि॥ यचादन्त्रादश्चगृहादत्रयूलिनिः॥ स्थर्गेयस्यारु
 वनि॥ यथासंख्यन॥ लकात्रावृद्धयः॥ नृपस्ययः॥ यचवयवदयन
 नदरुषयुवत्रनत्रवाग्रहऊत्रमत्रक्षत्रसूददवप्तवप्तघकायभय
 नरुवृत्तस्यैजात्ररुत्रस्वययवः॥ ह्यादियवादयः॥ श्रुचषष्ठाकः॥

यचतीति यच ४॥ विद ह्मना विहीति विद ४॥ वद व्यक्तायां वाचि ॥ वद
 तीति वद ४॥ दिवू की जया ॥ दी व्यतीति दव ४॥ सिवृ सवाया ॥ सवती
 गितव ४॥ दू लदि स मृद्धो ॥ नदि वासिमादि दूषिहा धिव धि ल्मरिगो
 वीत्या दयान न्नादय ४॥ यूप यय ४॥ यूवा न नाकी ॥ वृति गो नूम्
 ॥ वृदि गो धातो नूमा गमि रुवति ॥ न दयतीति न द्य न ४॥ त्रुम्
 की जया ॥ त्रुम ग वृति त्रुम ल ४॥ वाम कुम सहर्ष ॥ वाम यतीति वा

२६२

उपताप ३

मन ४॥ कुमूपाद विक्रय ॥ कुम तीति कुम ल ४॥ नृद मर्द नृद न ॥
 ऊर्न नृद यतीति ऊर्न नृद न ४॥ मर्द यतीति मर्द न ४॥ मदि रुष ॥ म
 दयतीती मदन ४॥ दूष दूष ल ॥ दूष यतीति दूष ल ४॥ राध साधर्म
 सिद्धो ॥ राध यतीति राध न ४॥ साध यतीति साध न ४॥ गुरु ल्म रुने
 ॥ ल्म रुनेति ल्म रुन ४॥ त्रुचि त्रुच न ॥ त्रुच नति त्रुच न ४॥ तय र्म
 या ॥ तय तीति तय न ४॥ दभ म म उय भ म ॥ दा म्य तीति मैद न ४॥ भ

मयीतिशमन४॥अयजल्यराघ(६)॥अयनीतिअयन४॥अत्य
नीतिअत्यन४॥दर्शाहंकात्रा॥दर्ययतीतिदर्यन४॥वृषदे॥आ
र्युत्ता॥वृषभार्युत्तुत्यथारुवनि॥यूवाप्रनाको॥त्रीतिनावयनि
वानावल४॥ग्रहादलिनिपुत्यथारुवनि॥गृङ्गातीतिग्रही॥ब्रामा २५३
यूक्॥श्राकानार्द्धागार्युग्मागमीरुवरिष्ठितिलिचपत्रा॥विष्ठी
तिस्त्रायी॥अयजतीतियाजा॥वृषदेविपूर्व४॥चित्रावी॥यायाय(६)॥

यायी।चत्रगतिरुद्धलया॥विचत्रगीतिवीचात्री॥दृग्मदृग्म॥
॥दृग्मदृग्म॥४अपुल्ययाहवति।मकात्र॥४अिह्मायाध॥४अि
मिचतुर्व्वत॥४अितियल्ययपत्रचतुर्व्वगिवादिषूयल्लार्यमूर्कतह
वति॥४अत्यम्मदृग्म॥४अत्यम्मगीति४अत्यम्म॥४अट्टयानि॥४अ
यगीतिधय॥४अम्मादाग्निमंथागया॥४अमादृग्म॥४अद्वमगी
ति४अम॥४अयायानि॥४अत्यिव॥४अयागल्लपादानि॥४अत्यजिह्वा

दा॥ उक्ति युतीति उक्ति य॥ ह न हिंसा गत्या॥ गवांस्वत्रं ह्ययध
 लोप॥ ह नाधु॥ गंदका॥ गद्य॥ कृतद्य॥ मूवा दर्ममा॥ विदु ला
 रु॥ गं विन्दयतीति ला विन्द॥ अत्र विन्द॥ ह्यादि॥ कला द
 लू॥ कला ददाता लूययथारुवति॥ लकात्रा वृद्धार्थ॥ कल
 दीयो॥ कल नीति काल॥ नयसंताप॥ संयतीति ताप॥ यथिग
 तो॥ यथानीतिया नु॥ यथीतीति वा॥ अग्रवृद्ध नन नन नन मागम॥

२६४

व्यधता उभ॥ व्याध॥ रूढे कत्रला॥ कार्य इत्॥ धता॥ कर्मति
 प्रयुक्तमान अलूययथारुवति॥ धतान्नीमिनं रतिवृद्धि॥ कर्म क
 त्रातीति कर्म कात्र॥ ग्रंथं कत्रातीति ग्रंथ कात्र॥ गमु कात्र॥ रू
 दो रु दाने॥ आता उ॥ आकात्रा नादाता॥ कर्म लूययदगति उय
 यथारुवति॥ उत्वादि लाय॥ गंददातीति लाद॥ धनंददातीति ध
 नद॥ नाम्नि च॥ नाम क्षर्तु प्रयुक्तमान इयि उययथारुवति॥ कम

लंददातीतिकमस्तद॥ द्वास्यांयिवतीतिद्विय॥ उनीयादूर्हवे॥ द्वा
 स्यांऊभायनयनास्यांजायतेद्विऊ॥ गृह्णतिष्ठतीतिगृहृष्ट॥ कन
 ४॥ इम४॥ इगती॥ शुचद्वतीतिशूद॥ शुचशूद॥ शुचशू
 आद॥ रुवतिडय॥ गमूगती॥ उत्रस॥ सलायामूमा॥ उत्रस॥ २६५
 सकात्रस्यलायारुवति॥ वामूमागम॥ उत्रसागच्छतीतिउत्रग॥
 उत्र४॥ विहायसाविहच॥ विहायसमदस्यविहआद॥ रुवति

॥ चकात्रादामूमागम॥ विहायसिगच्छतीतिविहग॥ विहग॥ गान
 सुत्रेच॥ गत्रसावेगनगच्छतीतिगुयग॥ गुत्र४॥ रुऊग॥ रुऊ
 ग॥ प्रवग॥ प्रव४॥ चर्तनियाना॥ अटो॥ क्षतात्रीमि कार्यच
 सत्यकात्रठकात्रोयस्योरुवति॥ ठकात्रंजीवर्थ॥ अस्तिहवती
 तिअस्तिहव॥ अ॥ कवचंदवतीतिकवचद्व॥ कमात्र॥ रा
 नंदवतीतिहवद्व॥ धृ॥ धात्रला॥ धनू॥ धवतीतिधनूद्व॥ द्वा

प्रियः॥ च न गतिरुक्तं न लया॥ कूत्रूच न तीगि कूत्रूच न॥ टका
 न॥ वर्थः॥ कूत्रूच न॥ अयस्य यः सर्वधा तु साधनं॥ टका नय
 स्य म्मुच न द न व॥ अकं क न तीति अकं क न ती क न्या॥ य न॥ क
 न तीति य न स्त न ती विद्या॥ य न द न य तीति य न च न॥ य म न य
 म न॥ वाचं क॥ म न तीति वाचं य म॥ सर्वं स ह न॥ न सर्वं स ह
 ॥ द्विष न य तीति द्विषं न य॥ अ नुं न य तीति अ नुं न य॥ द विदा न

२६३

॥ रुगं द न य तीति रुगं द न॥ ल स्त न॥ दिवा क न॥ वि ल
 क न॥ य ल क न॥ लिपिं क न॥ न॥ खादि॥ न॥ स्वखि॥ धा न न तीमि
 कार्यं च स नि॥ न॥ स्वखि॥ न॥ य रं य ल य र व नि॥ स न वं क न तीति स न वं
 क न॥ वीदि॥ वृत्ति द न॥ अयु व्य फी॥ द व न प्रीति द वा पि॥
 स्त्रि न य द स्य॥ स्त्रि न य ल य प न पूर्व प द स्य नू मा ग मि र व ति॥ क मं क
 न तीति क मं क न॥ प्रियं व द न तीति प्रियं व द॥ अ स्मानं विरु ली

ति आत्मा दनमु कृद्विभूते ३४ खि ४॥ आत्मं रुत्रि ४॥ उद नं विरुही
 ति उद नं रुत्रि ४॥ कृद्विं रुत्रि ४॥ नु जं खग ॥ नु द्द कं पन ॥ ख्यादी
 नं खग प्रत्यया रुवति ॥ स्वकात्रा मूमा गमार्थ ४॥ अकात्र अरुव
 का र्थार्थ ४॥ नु द्द कं प (ला ॥ चूना दर्थ ४॥ जनं नयतीति जनम
 जय ४॥ जिजय ॥ धनं जयतीति धनं जय ४॥ मन ह्मना ॥ यति
 तमात्मा नं मनार्थ यति गं मन्य ४॥ दिवा दर्थ ४॥ नयन पलिनपि

२६१

यान्धस्त्वसुरगमद्यस्त्वनतस्त्वावेष्ट ३४ खूट् कत्र (ला ॥ खूट्
 कत्र (ला ॥ कत्र (लार्थ खूट् प्रत्यया रुवति ॥ स्वकात्रा मूमा गमार्थ
 ४॥ युवात्र नाकी ॥ अनन्त नग्न ४॥ कियर्त न्न नति नग्नं कत्र लं
 यूतं ॥ अस्त्व ४॥ क्व ४॥ कियर्त न्न नति स्त्व लं कत्र लं दधि ॥ रु
 जीवित्वा ॥ रुजा द्दार्ता ४॥ कर्तुं विवि लूप प्रत्यया रुवति ॥ व ४॥ वित्ता
 धा रुवति ॥ लकात्रा वृद्धार्थ ४॥ रुज्जे वायां ॥ अर्थ रुज्जे तीति अ

र्थराका॥कृष्णराका॥कृक्कृराक्॥वुऊगती॥पत्रिवाट॥वदया
 यला॥रात्रवाट॥हाट॥वावसान॥वादावीगसादोस्त्रा॥अ
 वल्लस्यत्रस्यवादावाकात्रस्योकात्रादल्लरुवति॥गसादोस्त्र
 नेयत्रा॥रात्रोद॥रात्रोद॥रात्रवा॥श्यामिदि॥अवयऊगीति
 अवयाट॥सहमर्षला॥सह॥सह॥सादि॥सादित्रयसतिहह॥
 सकात्रस्यकात्रादल्लरुवतित्रस्यदानकचा॥गुत्रासहर्गंति

२६८

गुत्रावाट॥गुत्रावाट॥गुत्रासादो॥गुत्रासाद॥मिनाधना॥म
 कात्राकस्यधनामकात्रस्यनकात्रारुवतित्रस्यदानकचा॥अमू
 दमूउयगना॥युक्कषल्लममतीतियुगना॥मन्नस्यसिद्धत्वा नू
 लायाननू॥वत्रितिविलाय॥अरुगतहावेकृत्वसिथालावि॥
 श्रीदीद्यंवासा॥श्रीयत्रअवल्लस्यंलीकात्रारुवति॥अस्वस्यचदी
 र्थ॥चकात्र॥श्रीदीर्घांतिविलायल्लार्थ॥वत्रितिविलाय॥

अमिथूनीमिथूनंकिचर॥ॐनिमिथूनीकनलयालिग्रहली॥
 शुक्ल४शुक्ल८रुयनंॐनिशुक्लीलाव४॥असहाय४॥सहायारुव
 निसहायीस्यात्॥अरुतु४रुतु४कृत४रुतु४॥ओसहायश्च
 ॥अमना४मना४रुवतीनिमनीलाव४॥अउन्मनी४उन्मना४रु
 वतीनिउन्मनीलाव४॥अचक्रचिद्वकाय४॥अदू४खंदू४खंदू४
 नीनिदू४खाकनाति॥आतामनिनू४कनिवनिय४॥आकागना

द्विगाम्यनिष्कनियुवनिष्कृत्यमेवस्ययारुवन्तिकरुमि॥ॐ का
 प्रउच्चाप्रत्यर्थ॥सूदददातीति सूदामा॥नायधयादीर्घ॥ना
 नानासायश्मधो॥राजन्गद्यवत्युक्रिया॥ह्रामी॥ह्रयाग्नदीर्घा
 काप्रत्यन्तीकात्रारुवन्तिकरिपत्रनकिपि॥सूदूयिवतीति सू
 यीवा॥रूपिददातीति रूपिदावा॥क्वचिदन्यथापि दृग्धर्म॥
 सूदूकत्रातीति सूकम्मा॥अनसानत्यगमन॥अनतीति आत्मा॥

[illegible]

॥सामं पिवतीति सामया ॥ दीर्घत्वाच्चनुक् । सर्वयश्चगीतिस्त्वं
 वृक् ॥ दिशमिति कत्वं ॥ शिश्नवायां ॥ सूर्यपूर्व ॥ युक्काददी
 र्घगाचवक्त्वा ॥ सूश्री ॥ युक्काददीयायां वाचि ॥ क्रिय ॥ कुशसना
 जाद ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ यकारात्पूर्वाब्जं काप्रस्यतल्लवतिद्धनपित्तविषयहावकम्भालचञ्जितिप्तकाप्रस्याकाप्रलायः ॥

[illegible]

कोयुल्यथोहवतः॥ उपमानेन च कार्यं च कां नाराक्षिप्या॥ अ
सर्वादिः॥ नमयुयुल्यथयुयुनमसर्वादिः॥ पूर्वस्यात्वेहवति
॥ अन्यान्वदृष्टमन्त्रेति अन्यादृष्टः॥ अन्यादृष्टः॥ अन्या
दृक्। उपल्यथ। अन्यादृष्टी॥ तद्वत्तदृष्टमन्त्रेति तादृष्टः॥
तादृष्टः॥ तादृक्। अरुमिहदृष्टमन्त्रेति मादृष्टः॥ मादृष्टः॥ मा
दृक्॥ दिष्टमिति कत्वी॥ यानूवन्धत्वादीप्तादृष्टी॥ अन्यादृष्टी

॥ किमिदम४ की॥ किम४ दृष्ट्यं दम४ दृष्ट्यं च की॥ की॥ दृष्ट्यं
वा दलो रुवत ४॥ के॥ वद४ धनं॥ नितिकी दृष्ट्यं ४॥ की दृष्ट्यं ४॥ की दृष्ट्यं
४॥ की दृष्ट्यं॥ की दृष्ट्यं॥ की दृष्ट्यं॥ की दृष्ट्यं॥ की दृष्ट्यं॥ की दृष्ट्यं॥ की दृष्ट्यं॥
षू दृष्ट्यं विधाना॥ एतिका दया दीर्घता च वक्तव्या॥ रुवानि वद४ धनं॥
वा दृष्ट्यं ४॥ रुवा दृष्ट्यं ४॥ रुवा दृष्ट्यं॥ सह दृष्ट्यं॥ सह दृष्ट्यं॥ सह दृष्ट्यं॥
४ सह दृष्ट्यं॥ निनित्रतीत॥ धनोत्रतीतकाली लचल निनिपुस्य

२१२

रुवति॥ की॥ की॥ की॥ की॥ की॥ की॥ की॥ की॥ की॥ की॥
निपुज ४॥ धनोत्रतीतकाली लचल कियुव निपुज ४॥ की॥
युत्यं च रुवति॥ वृष्टमवधीति वृष्टं हतवान्॥ की॥ वृष्टं हतवान्॥
ऊमीति यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥
ऊमीति यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥
द्वितीयं ४॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥
द्वितीयं ४॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥ वृष्टं यद्वा॥

॥ क क व ह ॥ धाता त्रींशका लं क क व ह य ह यो र व र ॥ राव
 कार्यथा ॥ क ॥ कृ त ॥ प ट ॥ क काया गु ल यतिष धार्थ ॥ क
 रुत्रिका वरु ॥ कटं कृ त वान् ॥ उ काया नृ सि धा नार्थ ॥ आग
 ता देव द रु ॥ आ ग रं लाप ह नृ दारु रु नी ॥ ॐ ति न लाप ॥ २१३
 आ ग रं ॥ देव द रु न ॥ रावे न यं स का द म ॥ ग ह्य र्थ क र्म
 क शिष गी दृ ह्मा स व स ऊ न नृ ह जी र्य ति ह्ये श्वा ॥ ग ह्य र्थ द क

र्म का च क र्म रु त्रिका ॥ ग ह्य र्थ द क र्म का च धाता ॥ क र्म रु त्रि
 का य ह्यथा रु व ति ॥ अ ट ग ती ॥ आ टी त् ॐ ति देव द रु ग्रामं नृ
 टि त ॥ अ ट नं प्रा प ॥ कृ त ॥ धाता ॥ कृ त्वा ह्य य ह्य व सा द ति
 ज ग मा रु व ति गी ट् ॥ ह्मि त ॥ अ मू द मू उ य ग मी ॥ ग मा च्छी र्थ ॥
 ग न ॥ दान ॥ क मू का नो ॥ का न ॥ गी दृ पू दृ धृ षि द्दि दि
 सि दि मि दा नि ष्ठा सि ट् ॥ नृ षा नि ह्यं गु ल ॥ का वा सि ट् ॥ सि ट् क

पुस्तकवाकिरुवति॥ कित्वा दानगुण॥ पुत्रातिर॥ पुत्रुतिर
 ॥ उदित॥ उदित॥ त्रुदित॥ त्रुदित॥ मृषित॥ मृषित॥
 यद्दामिति दीर्घ॥ ग्रहीत॥ गृहीत॥ नूदित॥ नूदित॥
 विदित॥ वृदित॥ वृष्टि॥ कित॥ उवर्णना दवर्णना च
 प्रियश्चक्षुः॥ यत्रस्य कित॥ पुस्तकस्य च सा दत्रिजगमान
 रुवति॥ वृत्त॥ रूत॥ श्रित॥ आदीदित॥ आदित॥ नूदित॥

२१४

दनरुवति॥ श्रीगोतकुवर्णमानयि॥ श्रीगोतकुवर्णमानयि
 श्रीरुवतिवर्णमानकालयि॥ दक्षस्य नोदश्च॥ दकात्रा दूरुत
 स्य कित॥ सप्तमस्य न त्वरुवति दकात्रस्य च न कात्र॥ श्रि मि
 दास्तद्वन॥ श्रि कात्रस्य के पुस्तकार्थ॥ आकात्रनिदृख्याय ना
 र्थ॥ मिद्वरुवति स्ति॥ ककात्रा गुणयुतिवर्णार्थ॥ रका
 त्रस्य न कात्र॥ दस्य च न कात्र॥ दस्य च न कात्र॥ मिन्नमन्न

तेलनवरुत ॥ शिष्टिदागुयुक्त ॥ पूर्वदतनकात्र ॥
 अर्ध ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ आयाप्तनयस्तिन्न ॥ शिष्टिदासं चूर्णन ॥
 द्वि ॥ ४ ॥ अदरुक्त ॥ ४ ॥ अदाउघ ॥ ४ ॥ किं ह्यनन्य ॥ अदाधना
 ऊर्ध्वा ॥ ४ ॥ अरुवतिकितियत्र ॥ अन्ववाचनरुवति ॥ ऊर्ध्वकपुत्यय ॥ ४ ॥
 ४ ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥
 ४ ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥ अर्ध ॥ ४ ॥

215

३॥ अकारस्य ङ् र् हवति ॥ अर्धित्सु ङ् रि दी र्घ ॥ विकीर्ण ॥
 दषू जषू वया हा नो ॥ जीर्ण ॥ मीर्ण ॥ वाग नी नं ॥ ला आदि न
 ४ ॥ ला दत्रादि न श्रधंभा स्ताना हवति ॥ लू ष्ठ दन ॥ लून ४
 ॥ क्रि दय ॥ क दी र्घा नि स्या यां वा ॥ किल ४ ॥ की ल ४ ॥ ल्ले भ्ले हर्ष
 दय ॥ सं ध्र दत्रा लमा ॥ लून ४ ॥ म्लान ४ ॥ अहा कल्याण ॥
 ल्हा मी रि ङ्गी कार ४ ॥ ही न ४ ॥ दी न ४ ॥ अया यि वृद्धो ॥ प्या य

४पी॥ याथाधना॥ ४यी याद अरु वति ॐ ह्यय माद अरु वति
 ।पीन ४। वृष्टयुसव॥ आदयू ४स्र ४॥ सून ४॥ दादलि॥ दा ॐ
 ह्यस्यदरु वति रका नादी कि ति पत्र॥ अदायि ॐ तिदरु ॥ अ
 दातू ॐ तिदरु वान्॥ दू ४ उय ताप॥ आदावि ॐ तिदून ४॥ स
 गला वा॥ स्रगादरुदरु सदा ॐ ह्यस्य तावा रु वति॥ रका ना
 दी कि ति पत्र॥ पुरु ४। रका ना रु वय क्क दा वृदलि ४॥ पुदरु ४

२१५

॥ दय अधन॥ अतलं अतदरु ॥ अयदवयू जायां॥ अजीयवना
 ला ॐ ति संयुसात्र ली॥ च्छगषगा जाद ४ष ४॥ ॐ ह्यम ॐ ह्यवान्॥ दू
 वयवी अ संगान॥ उयं वी अं॥ वरुयायला॥ संयुसात्र ली॥ हा ४४।
 ॐ ति रुत्तु र्ते॥ गथार्द्ध ४॥ सूत्वं॥ दिशालाया दी र्द्यश्च॥ यायउ
 छानू र्हापगु ४॥ क्षी ४ आ कान॥ संयुसात्र ली॥ दी र्द्यश्च॥ कयुय
 य ४॥ आदूत ४। वी ४ संवत्रला॥ संयुसात्र ली॥ संवीर ४॥ वदव

कायां वा वि॥ उदिता॥ वचयति रां ष (ल)॥ उक्तं॥ वसनि वास
 ॥ अन्न न उ वि री॥ कृध वृत्तु कायां॥ वसिद्ध (क्षत्रि टू॥ कृषित
 ॥ स्वयं स्वयं॥ सूफ ॥ घसाद ॥ य ॥ गेद यात्र (ल) गेद न क
 (ल)॥ गुल्ल आ वा नि पा ल्य र्क॥ गुल ॥ गुल ॥ जी ल जा यां॥ जी
 ल ॥ जी न ॥ श्या र्ग (क्षपा दान)॥ घा ल ॥ घा न ॥ विद विचा न
 (ल)॥ विविन्न ॥ विरु ॥ उन्दी क्त द न॥ उ न ॥ उ रु ॥ वा ग ति

२१

वं ध न या ॥ निर्वी ल॥ निर्वी र ॥ संयु र्य प ल्य ॥ क न ग र्ग ष (ल)
 सूट्॥ संस्क्रु त ॥ य नि स्क्रु त ॥ उ य स्क्रु त ॥ ला व दं ॥ संस्का न ॥
 अर्ल का न ॥ ऊ न क्त ॥ ऊ न ॥ य चा व ॥ य च उ रु न स्य कि न स्त
 का न स्य व का न र व ति॥ य क्त ॥ य क्त वा न॥ के द य॥ सं ध द न (ल)
 ॥ का य म ॥ का म ॥ शु ष (ल)॥ शु ष क्त ॥ शु ष नू रु न स्य कि
 न स्त का न स्य क का न र व ति॥ शु ष क्त ॥ स्त्रायी वृद्धी॥ स्त्राय ॥ स्त्री

४॥ सुखा धमा ४ सुखी ॥ सुखा द (अ) रुवति ॥ सुखी ४ ॥ कसु
 कानो लवेवत ॥ धमा कसु कानो पयथोरुवगा ३ तीत काल
 ॥ तो च लय नु ॥ निवदु वत ४ ॥ लवा दिव रु वा दिव च नै ।
 । ननु वृद्धादि ॥ यथ लय प न स्येय द न थ कसु ४ ॥ यथ आ
 सनेय द नु न थ कान ४ ॥ क कात्रा गु लयु रिष ध र्थ ४ ॥ हि दि
 न वि दान ल ॥ कसु य लय ४ ॥ उ कात्रा न्मि ध नार्थ ४ ॥ वि भा

२१८

नुम् ॥ संयाग न स्य लाय ४ ॥ रु सप ४ ॥ स लाय ४ ॥ विरि दान् ॥ विवेद
 ॥ नि विवि दान् ॥ रु क रु क न ल ॥ वृ धा रु ४ ॥ कसु य लय ४ ॥ दि
 ल्वी ४ ॥ ॥ सुय कात्र ४ ॥ कृ ला श्रु ४ ॥ वि भा नुम् ॥ रु सप ४ ॥ स लाय
 ४ ॥ संयाग न स्य लाय ४ ॥ च कृ वा न् ॥ च कात्रे र्थ ४ ॥ च का ल ४
 । कान पयथ ४ ॥ रु न हि सा ग ल्या ४ ॥ उ घा न ॥ वि द्रु ह न ग म दृ म
 वि भ नु र्म सां कसु य लय ४ ॥ वा ॥ वि वि दि वा न् ॥ वि वि दान्

॥ उच्चान् ॥ गमांस्त्रिंशतिगमादीनामप्यध्यायात्पठ्य ॥ उच्चान् ॥ उ
गच्चान् ॥ ददग्निवान् ॥ ददग्निवान् ॥ विविग्निवान् ॥ विविग्निवान् ॥
गह्मन्मोतिगवत्किं यथा ॥ किं यथापदगममान्मोह्यमोह्यह्यो
हवत् ॥ मोचनियमवत् ॥ शिपत्रमोपदात्मनोपदयार्हवत्
॥ यचमूह ॥ शिष्टिर्गो ॥ मूयकर्तुर्गो ॥ मूय ॥ मूयकात्र ॥ लो
प ॥ नामसंज्ञायां स्याद्विर्लुकि ॥ विगान्मू ॥ दध्मप ॥ मलो

य४॥यचनूअस्ति॥यचनूअस्ति॥य०स्ति॥लोगमन॥ग
 यनूगच्छति॥मूगमन०॥अकात्रस्यानयत्रमूगममोहवति॥य
 चनू०॥ति यचमान०॥य०ति य०नूयऊमानस्ति॥तनादत्र
 पू॥मनू०॥ति मन्वान०॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥
 नस्याकात्रस्या०॥कात्रादल्लहवति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥
 दीया०॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥अस्ति॥

ति००० का००० पिचपत्र॥ तुद००० थन॥ तुद००० तुदनी॥ तुद००० तुद
 नि००० किल००० तुदनी॥ तुद००० वरु०००॥ अ००० य००० त्रि०००॥ अ००० प००० य०००
 य००० य००० य००० सं००० वि००० अ००० का००० त्र००० य००० ग००० तु००० नि००० न००० मा००० ग००० मी००० रु०००
 ति००० रु००० व००० ती००० ति००० रु००० व००० नी०००॥ य००० च००० ती००० ति००० य००० च००० नी०००॥ य००० ००० ती००० ति००० य००० ००० नी०००॥ ह००० स००० ती०००
 ति००० ह००० स००० नी०००॥ दी००० य००० ती००० ति००० दी००० य००० नी०००॥ त्र००० मा००० दृ००० श्र०००॥ शि००० ष००० आ००० लि००० ग००० ल०००॥
 शि००० ष००० ती००० ति००० शि००० ष००० नी०००॥ दि००० त्र००० का००० नां००० य००० द्दी००० दी००० नां००० च००० अ००० तु००० न्न००० म००० पु००० ति००० ष००० ध००० व०००

२८०

का००० व००० ४॥ द००० दा००० ती००० ति००० द००० द००० तु०००॥ द००० द००० ती०००॥ द००० द००० नि०००॥ य००० द्दी००० ती००० ति००० य००० द्दी००० तु०००॥ य००० द्दी००० ती०००॥
 य००० द्दी००० नि०००॥ जा००० ग००० रू००० ती००० ति००० जा००० ग००० तु०००॥ जा००० ग००० ती०००॥ जा००० ग००० नि०००॥ द००० त्रि००० डा००० दृ००० ज्ञ००० ती०००॥ द०००
 त्रि००० डा००० द००० ला००० य००० व००० क००० व००० ४॥ द००० त्रि००० डा००० ती००० ति००० द००० त्रि००० दु००० तु०००॥ द००० त्रि००० दु००० ती०००॥ च००० का००० ली०००
 ति००० च००० स००० तु०००॥ च००० का००० स००० ती०००॥ अ००० न००० सा००० स००० तु०००॥ अ००० न००० सा००० स००० ती०००॥ वि००० द००० र्वा००० व००० स००० ४॥ वि००० द०००
 द्दी००० शि००० अ००० रु००० वि००० ष००० य००० वा००० व००० स००० य००० य००० रु००० व००० ति००० य००० ली००० ति००० वि००० द्वा००० न०००॥ य००० द्दी०००॥ वि००० द०००
 तु०००॥ अ००० तु००० रु००० व००० रु००० तु००० रु००० व००० रु००० द्दी००० पू००० क००० र्थ००० नि००० पा००० ल०००॥ अ००० तु००० रु००० व००० न००० रु००० दृ००० मि००० ४॥

तव हवद्विर्हगवद्यादहलि तै॥ श्री लह नू॥ धाता सु नृप स्यथार
 वति श्री लखरावर्थ॥ न का प्रयस्यरुद ह्यनार्थ॥ क प्रल श्री
 ल॥ कर्त्ता॥ ह प्रल श्री लहर्त्ता॥ न च न श्री लानता॥ ह प्रल श्री ला र
 र्त्ता॥ विच प्रल श्री ला विच प्रता॥ ॐ ह्यादि॥ मित्र नि सार नट॥ पु
 ल॥ ॐ सु सु कृ॥ धाता ॥ श्री लखरावर्थ ॐ सु सु कृ कृ ॐ ह्यनार्थ
 यारवनि॥ गुल॥ ॐ लं पूर्व॥ ॐ लं के प्रल श्री ल॥ ॐ लं के त्रिषू॥

२८९

॥ नित्रा कर्त्तु श्री लमस्य नित्रा क त्रिषू॥ आमन श्री ल॥ यामिषू॥ य
 स अदन॥ य सन श्री ल॥ य सिषू॥ यर वन श्री ल॥ यरु विषू॥ य
 ह मर्षला॥ सहिषू॥ ऊर्त्तु श्री लमस्य जिषू॥ रुवन श्री ल॥ ह सु॥
 ह्मा सु॥ विषू व्यायो॥ विषू॥ गृध्र नृहिको द्वायी॥ गृध्र॥ वा को क
 ल॥ धाता ॥ श्री लर्थ वा क उ उ क ल ॐ ह्यनार्थ यारवनि ल का
 गो वृद्धार्थ॥ च त्र नि न्दायी॥ व प्र ल श्री ला व ला क धी वा क यु स्य स भाषा

कात्रन्नीर्वर्ध॥ वनाकी॥ ऊख्यवकायांवाचि॥ ऊल्याक॥ हिदू
 याकुया॥ हिद्विर्तुंभीलमस्यहिद्विक्का॥ हिद्वि॥ हिद्विक्का॥ सा
 नाभंमुनया॥ सपुखयादादपूर्वाभंमुनविह्यस्माच्चभीलर्थ
 विनापिउपुखयारुवति॥ वचयनिराष॥ ॐ ह्यामात्मनः॥
 ॥ द्वित्वं॥ य॥ ॥ वा॥ क॥ ॥ वत्सं॥ स॥ ॥ उ॥ ॥ व॥ ॥ वि॥
 वि॥ व॥ ॥ पि॥ ॥ पा॥ ॥ द॥ ॥ द्वि॥ ॥ पूर्व॥ ॥ द॥ ॥ दि॥ ॥ ॥ अ॥ ॥ त॥ ॥

२८२

॥ ॥ वि॥ ॥ दी॥ ॥ क॥ ॥ चि॥ ॥ की॥ ॥ भं॥ ॥ मु॥
 भो॥ ॥ त्रा॥ ॥ भं॥ ॥ मु॥ ॥ घृ॥ ॥ स॥ ॥ द॥ ॥ जि॥ ॥ घृ॥ ॥ की॥ ॥ जि॥ ॥ घृ॥
 ॥ क॥ ॥ मू॥ ॥ का॥ ॥ उ॥ ॥ क॥ ॥ पु॥ ॥ ख॥ ॥ य॥ ॥ ल॥ ॥ का॥ ॥ वृ॥ ॥ ध॥ ॥ का॥ ॥ म॥ ॥ य॥ ॥ ती॥
 ति॥ का॥ मू॥ क॥ ॥ रू॥ स॥ ला॥ यां॥ ॥ रु॥ वि॥ रूं॥ भि॥ ल॥ म॥ स॥ ला॥ वृ॥ क॥ ॥ ल॥ म॥ पु॥ क॥
 ख॥ ग॥ द॥ ॥ न॥ मा॥ द॥ न॥ ॥ न॥ मा॥ द॥ द्वा॥ ता॥ ॥ भी॥ ल॥ र्थ॥ न॥ पु॥ ख॥ य॥ ॥ रु॥ व॥ ति॥ ॥ दी॥
 पि॥ क॥ पि॥ ॥ अ॥ सि॥ ॥ अ॥ स॥ मा॥ क॥ लं॥ हिं॥ सि॥ क॥ मि॥ सि॥ च॥ द॥ द॥ स॥ न॥ न॥ मा॥ न॥ ॥

[illegible]

॥विद्वन्॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥
 कात्राधिकार्यार्थं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥
 अमर्दनं॥ चक्रं॥ कर्मविधिनि॥ चक्रं॥ कर्मविधिनि॥ कर्मविधिनि॥
 नैरुवत॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥
 नमः॥ अतिशयदृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥
 दालुगुरुवति॥ पूर्वस्यदृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥ एसादृष्टं॥

नूकयुख्यथारुवतिगीलर्थ॥ययहकनूतिस्त्रिना॥आत॥या
 यहक॥नूधदन्म॥मउयानूतिनिनूमाग॥पूर्वस्य॥द
 ननगील॥दन्दनूक॥अयनगील॥अंअयूक॥वदनगी
 ल॥वावदूक॥आगत्रलगील॥आगनूक॥आद॥किदि
 श्रुते॥आकात्राकादकात्राकादाता॥गीलर्थरुतकालकि
 युख्यथारुवतिधनादश्रदिचन॥आगानयिहकांलाप॥
 ३।

२८४

नाम॥सामैयपियहददिगमश्रुतिनैकुतीयाअकान्चविनाअ
 दि॥यो॥नीकमहादिजा॥सामा॥सदालदय॥सर्वसिन्हा
 लेउल्लदय॥युख्ययहवनि॥नूक॥कत्रला॥लकात्रावृद्ध
 र्थ॥कत्रातिकात्र॥वागतिवन्धनथा॥वागतीतिवायू॥
 आतीयूक॥मि॥युद्धय॥मिनातिमायू॥स्वदस्वादआस्वा
 दनी॥स्वादू॥कमआकानेनादनच॥गुल॥कममनाजा

द० य० ॥ धू० रि० ॥ का० ग० ती० ति० का० ॥ तु० य० ल० य० ॥ अ० व० त्र० द०
 पा० ल० ने० ॥ मू० क० य० ल० य० ॥ क० का० त्र० कि० ॥ कार्या० र्थ० ॥ कि० त्वा० सं० य०
 सा० त्र० ल० ॥ अ० वे० ती० ति० अ० म० ॥ अ० ग० सा० ग० ल० य० ग० म० न० ॥ म० नि० ल० य० ल०
 य० ॥ ल० का० त्र० वृ० द्वा० र्थ० ॥ अ० ग० ती० ति० आ० त्मा० ॥ म० न० य० ध० य० मे० त्र० ॥ २८५
 म० नि० य० ल० य० य० ध० र० स० म० का० त्र० स० त्र० का० त्र० द० ल० र० व० ति० ॥ ह० रि०
 वृ० दि० वृ० दि० वृ० द्वा० ॥ वृ० ह० त्वा० वृ० ह० त्वा० द्वा० वृ० का० ॥ धृ० ॥ अ० त्र० ल० य० ध० ल० य०

॥ म० य० ल० य० ॥ ध० त्र० ल० त्र० ल० र्ध० र्मा० ॥ धृ० ॥ कं० य० ने० ॥ अ० द० त्र० लि० ॥
 अ० द० इ० ति० त्र० लि० य० ल० य० र० व० ति० ॥ धृ० ना० ती० ति० धृ० लि० ॥ अ० गि० त्र० गि० ल०
 ति० ग० ल० य० र्थ० ॥ अ० दि० त्र० अ० ति० नू० मा० ग० म० ॥ अ० दू० ती० ति० अ० दु० लि० ॥
 अ० द्या० दि० ॥ अ० सा० दि० ल० य० ॥ क० त्र० ल० य० ॥ अ० स० अ० नू० जि० शो० ॥ अ० र्मु० ॥ अ०
 मू० दि० सा० यो० ॥ अ० र्मु० ॥ अ० स० र्क्ष० य० ल० ॥ अ० र्मु० ॥ या० या० ने० ॥ या० र्गो० ॥ नी० ॥
 या० य० ल० ॥ ने० र्गो० ॥ दा० य० ल० व० ने० ॥ दा० र्गो० ॥ ग० मू० ग० ती० ॥ अ० दू० पूर्व० लि०

नियुक्तयः॥ लकारावृद्धार्थः॥ क्कार उच्चारणार्थः॥ आगं
 तुंभीलमस्य आगमी॥ हसकायी॥ रुवितुंभीलस्य हावी॥ क्
 त्यादि॥ णीभद्वर्षः॥ णीभद्वर्षात्तवर्षपुस्त्याहारवति॥ णी
 गनुष्यार्थः॥ क्कृत्ति णीश्वरः॥ हागतिनिवृत्तिः॥ ह्कारुंभीलम २८३
 स्थितिस्त्ववर्षः॥ नाहताहदीको॥ नाडाद्वर्षः॥ नाडा॥ यमिष्य
 नाथीतीतियूवानूषाणा॥ वचाद्वर्षः॥ वचाद्वर्षाभावात्पुस्त्य

यारुवतिवचः॥ अर्हमर्हयूजायी॥ अर्हः॥ मर्हः॥ गयः॥ सूका
 र्यस्याहावर्षोकार्यः॥ सीकार्यकलिमः॥ रिदलिमंकार्यं॥ यच
 तिर्मयानुं॥ यचलिमा आरुक्कः॥ युवह अगिस्थानि॥ यातीति
 थानि॥ वहतीति वक्तिः॥ अगतीति अग्निः॥ क्दिष्यत्रमेश्व
 र्थः॥ चदि आह्लादनः॥ क्दि चदि अकिन्दिस्थानः॥ क्दि न
 क्ति नूमागमः॥ क्न्दतीति क्न्दः॥ गक्कृत्ति अक्कः॥ नूद

तीति त्रुड ॥ पृष्यतीति पृष्यं ॥ रूलतीति रूलं ॥ मूलयतीति मू
 लं ॥ उनादयायत्रिमिता ॥ युथा गमनस्य युथा कया ॥ तुम
 दर्थयां रुविष्यति ॥ धातारुविष्यति कालं तुमप्युत्थारुवति ॥
 नदथायायुयूक्त्वा नायां ॥ रुजपालनाय वहात्रथा ॥ रुकुं
 वजति ॥ यतिरुमीक्ष ॥ दधरावे ॥ धातारुवेथे दधयुत्थारु
 वति ॥ चर्ज ॥ क (गो) धिति ॥ चञ्ज ॥ क कात्रगकात्रोरुवत ॥

२८१

धितियत्र ॥ पचतन्तिपाक ॥ रुकात्रावृद्धर्थ ॥ रुजर्गे
 तिर्याग ॥ रुञ्जतन्ति याग ॥ रुजहा नो ॥ रुज्ज्वा पुथा
 ग ॥ रुनून् रुञ्जतन्ति रुनूयाग ॥ रुजसेवायौ ॥ विरुज नं विरु
 ग ॥ रुलगतौ ॥ रुयलं रुय ॥ रुतायूक्त्वा ॥ रुद्रायामकरु नि
 च ॥ करु निचर्जितं कात्रकं रुवेकर्मलिचं दधयुत्थारुवति
 रुद्रायामविषय ॥ पुतिपुति कार्यमादि यतन्ति पुत्याहान ॥

॥ उद्यमं इस्मिन् वास ॥ दीयत ऋदाय ॥ विविक्त्या भूतिविका
 न ॥ पीयत ऋतिपाय ॥ साधना धनार्थं कृत्वा नाना स्वराणां
 नां च यद्भवकं च ॥ मृजुवृद्धिर्धिति च ॥ अयमृजुगन्धननतिनृ
 पामार्ग ॥ लिख्यत अस्मिन्निति लख ॥ अत्र तस्य स्मिन्निति नृ २८८
 वाज ॥ ऋतु शुभयन ॥ अधीत शुभय ॥ स्वराद ॥ स्वराणां
 नां प्रत्ययार्थवति लावाक्ष ॥ सूचीयत ऋतिस्त्वय ॥ नीयत ऋ

तिनय ॥ उन्नीयत ऋतिउन्नय ॥ सुवर्गं ऋतिसुव ॥ नृविद्व
 य ॥ त्रियत विविक्त्या भक्त्यादि त्रितिन ॥ यत्रिरुव ॥ मदी
 । मदादीनामयुक्त्या रवति लावाक्ष ॥ मदीहर्ष ॥ पुमायत ॥ न
 नति युमद ॥ अनया वति युमदा ॥ यत्नव्यवहारमुक्त्या ॥ ऋति
 यत्न ॥ अमृतं ऋतिअम ॥ यमउचयम ॥ यमृतं ऋतियम ॥ द
 मृतं ऋतिदम ॥ दीव्यत विश्वमननतिदव ॥ विष्णुवधन ॥ विल

बलसीयतन्निविषयः॥ मूलोद्यनः॥ मूलोकादि न्यपनिष्कृतं
 वारिधेयदन्तत्रयं पुन्यथारुवतिरावादी॥ यनादगम्य॥ क
 णिनंदविदधिद्यनः॥ यनिष्कृतं सन्धवद्यनः॥ वलूविषयः॥
 हन्याद्वर्णावर्णविषयः॥ हिसिद्धिं सायां॥ हिनस्तीति
 सिंहः॥ द्विगाथः॥ द्विगाथात्रयं पुन्यथारुवतिरावादी॥ द्रव
 पृथक्पनः॥ वयनं॥ ननतिवपथः॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपनं

२८८

यनं॥ ननतिद्रवपथः॥ द्रवपृथक्पनः॥ नन्दथः॥ दवथः॥ स
 यथः॥ द्रव्यादि॥ द्विगमि मकृतेकृते॥ द्विगाथात्रयं पु
 न्यथारुवतिगनधत्तत्थनकृतेर्थवाच्यमतिविश्यायानिर्वृ
 तः॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपृथक्पनः॥
 ॥ संहतलननिर्वृत्तं संहतमिदं॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपृथक्पनः॥
 निर्वृत्तः॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपृथक्पनः॥ द्रवपृथक्पनः॥

वरं। हावा दो॥ घरीयुयत्त॥ घननेयत्त॥ यच्च॥ आ॥ यच्च॥ द॥
 गकात्रादला रुवति नपत्र हावा दो॥ पृच्छातं त्रिषु ॥ विच्छा
 तं त्रि विषु ॥ विच्छागो॥ अयुयुला हाव॥ सो॥ अरि॥ अ॥
 ०० अरं इनेनति यत्त॥ दु॥ गो॥ दु॥ वतीति डा॥ ओ॥ ॥ टीत्वा दीप्
 डा॥ ली॥ कियरं क॥ ली॥ ॥ टीत्वा ल्क॥ ली॥ ॥ गाल्धी यतं त्रि॥ नाउ धा
 नी॥ स्वपनं स्वप्न॥ आ॥ न॥ पी॥ ला॥ का॥ त्र॥ ला॥ य॥ ॥ कियत्यय॥ विधी

२२०

यतं त्रि विधि॥ संधीयतं त्रि संधि॥ आ॥ धी॥ यतं त्रि आ॥ धि
 ॥ अ॥ ल॥ नि॥ धी॥ यतं त्रि अ॥ ल॥ नि॥ धि॥ ॥ ल॥ व॥ य॥ द॥ ॥ धा॥ ता॥ ल॥ व॥ य॥ त॥ य॥ ल्य
 या॥ रु॥ व॥ ति॥ ॥ यु॥ वा॥ त्र॥ ना॥ को॥ ॥ कियतं त्रि क॥ त्र॥ ली॥ ॥ दी॥ यतं त्रि
 द॥ त्र॥ ली॥ ॥ दू॥ यतं त्रि द॥ व॥ न॥ ॥ ह॥ यतं त्रि ह॥ व॥ ली॥ ॥ दी॥ यतं त्रि
 दानं॥ दू॥ यतं त्रि दू॥ व॥ ली॥ ॥ आ॥ दि॥ ग॥ द्वा॥ त॥ ॥ ह्मा॥ न॥ ॥ मा॥ न॥ ॥ पा॥ न॥ ॥ सा
 धना॥ धा॥ त्र॥ या॥ ॥ सा॥ ध॥ न॥ आ॥ धा॥ त्र॥ वा॥ ल्य॥ य॥ द॥ पु॥ ल्य॥ या॥ रु॥ व॥ ति॥ ॥ य॥ च॥

ग३भननियचन३गि३॥यचन३स्यापचनीह्लाती॥चकात्रादा
 कात्रचति॥संयदीयन३समेसंयदाने॥भमीदीर्घ३॥दूषवेचि
 रु॥दूषली॥उद३ह्लाद३सलाय३॥उह्लाने॥संरुन्नवनाध
 ने॥उह्लयन३तिउह्लरुने॥३ष३३सूषस्वत्यु॥३षदादि
 षुपयू३माने३स्वत्यु३त्यनीयुत्ययीरुवतारावादी॥लका
 नपुत्ययरुदह्लापनार्थ३॥३षरुव३॥सूरुव३॥३षत्क३३३

२२९

सूक३३॥लरुलारु॥दुर्लरु३३दू३खनयू३न॥दूर्यधन३॥
 सूथाधन३॥यूधसंहात्रा॥३षदूयन३ति३षरुवने३षरु
 व३॥नवानीथो॥धनासुवानीथोपुत्ययीरुवत३॥रावादीरु
 विष्टातिका३॥रुविवेष्टा३तिरुवितव्यं॥कृ३३ति३३३॥
 आस्यन३तिआसनीयं॥क३त्रिष्टा३ति३रुव्यं॥क३त्रिष्टा३
 ३ति३क३नीयं॥दा३व्यं॥दा३नीयं॥पा३व्यं॥पा३नीयं॥ह्ला३व्यं॥ह्ला

नीयं॥ त्रमयतीति त्रमनीयं॥ स्त्रुतु कर्तुं यपि नूनीययुय
 ॥ स्त्रुतिकचित्॥ स्त्रुतागृही॥ ग्रहादीनामिष्टादीर्धरुवति॥ गृक
 तस्त्रुतिगृहीवयं॥ वृष्टसंवत्र॥ वलिद्यतस्त्रुतिवतीतयं॥ स्त्रु
 ताय॥ स्त्रुताकादातार्ययुयथाहवति॥ कर्तुंथाग्नंकर्यं॥ ऊर्तु
 याग्नंकर्यं॥ नूत्युक्तयंमन॥ चर्तुंथाग्नंकर्य॥ नर्तुंथाग्नंन
 यं॥ कृत्युक्तयोज्ज्वलार्थनिपात्यत॥ कर्तुंमर्कंकर्यं॥ ऊर्तुंथा

२२२

ग्नंकर्यं॥ नूत्युक्तयंकर्यंमन॥ पूजकार्त्त॥ पवर्गज्जडाता॥
 मकादयययुयथाहवति॥ ऊर्तुंथाग्नंकर्यं॥ पूलरुषयाको
 ॥ लक्ष्म्युयग्नंलक्ष्म्यं॥ मकुथाग्नंमर्कं॥ सहच॥ सहमर्ष॥
 सार्द्रंमर्कंसर्कं॥ ऊर्तुमेधुन॥ ऊर्तुंमर्कंकर्यं॥ त्रुचित्राचन
 दीर्घा॥ त्राचयर्तुंमर्कंत्रुच्यं॥ स्त्रीचारा॥ त्राकाताकादातार्य
 युयथाहयथाहवत्याकात्रस्येकात्र॥ दार्तुंथाग्नंकर्यं॥ स्त्रुतुंथा

गर्भं यं ॥ यानुं या गर्भं यं ॥ मरुसा नातृ च ॥ म व लू नाड सा
 ना च भगो घ्य लू पु र्वा र व ति रा वा दो ॥ ल का ना वृ द्धार्थ ॥
 कार्गुं या गर्भं कार्यं ॥ वृ ३ आ व त ल स र को च ॥ वा न य नुं या गर्भं
 वा र्थ ॥ व कं या गर्भं वा र्थ ॥ वा ध यि नुं या गर्भं वा धा ॥ रु वि नुं या गर्भं
 र्थ ॥ ह स ह स न ॥ ह सि नुं या गर्भं ह स र्थ ॥ धि त्वा त्क का त्रा इ पि प कं
 या गर्भं पा र्क ॥ य नु नं रा व क र्म ल वि दि ता स वा द य स र्क र्क वि

२२३

श्वे त व क वा ॥ ना ना म स र्क र्म ॥ द म पु द्ग ल ॥ द र्म ना र्क ड रू वा
 ॥ द र्म नी य ॥ ड रू या गर्भं द म ॥ पू म का त ॥ स्मृ श्वे वि ना र्थ ॥ स
 श्व द्ग ना ल मा ॥ स्वा श्व या श्व र व ॥ शु य व ल ॥ ल म र व ॥ श व
 नी य ॥ म न सा र्क म न व ॥ श्वे वि ना र्थ ॥ श्व ना र्क श्व र व ॥
 ॥ स पु र्वा या ना द यि ॥ लू द्वा या मा स न ॥ स ॥ स श्व द्ग ना ल मा ॥ श्व
 श्व लू ति हि न ॥ ड रू ॥ पू र्व स र्क र्म ॥ ल च ॥ य ॥ म पाना

ऊवचपा॥ गत॥ सुधातुनिति धातुसंज्ञायी॥ तव्युहय॥ नि
 पूर्व॥ नितरां धातुमेष्वनिदिध्वासितव्य॥ क्तातुमिष्टि॥ विक्ति
 क्तासितव्य॥ कृताञ्ति॥ तव्यानीयक्यपद्यालस्यराय॥
 नृनरव्यादय॥ अत्रावश्वर्के॥ उवर्णनादावेश्वर्केर्थाद्यलपु
 ल्यथाहवति॥ अक्षोभार्थपुल्यय॥ स्वत्रवत॥ अत्रावश्वर्काविर्गुयाश्च
 अत्रावश्वर्काव्य॥ नमुतो॥ अत्रावश्वर्काव्य॥ लू॥ कुदने॥ अत्रावश्वर्का

२८४

व्य॥ लू॥ कुदने॥ अत्रावश्वर्काव्य॥ लवममयथाग्नावश्वर्का
 व्य॥ लू॥ पदवश्वम॥ कृत्वा॥ कृत्वा॥ पंचसमाख्याता॥ क्यपद्या
 लोहावकर्म॥ तव्यानीयोस्वरायश्चर्कलिम॥ कर्मक
 रुत्रि॥ लू॥ पदवश्वम॥ कृत्वा॥ क्यपद्यालोहावकर्म॥ तव्यानी
 योस्वरायश्चर्कलिम॥ कर्मकरुत्रि॥ लू॥ मर्तकाममनसात्रपि
 समावाहिततथास्मिंस्यपचियूद्य॥ तव्यानीयो कृत्वा

संस्तुया विनीयानां॥ नृवर्गं लाव्या इव श्वला वा ॥ शकुं काम
शाकु काम ॥ अगुं मना॥ अगु मना ॥ संहितं॥ संहितं॥ स
तं॥ सतं॥ मांसस्य चर्चनं॥ मांसचर्चनं॥ मांसचर्चनं॥ मांसस्य
याक ॥ मांसयाक ॥ मांसयाक ॥ अदूयक एकप॥ अदूयक
दाता ॥ अदूयक एकप॥ अदूयक एकप॥ अदूयक एकप॥ अदूयक
गुंथाग्निकृत्यं॥ निगतां कृत्यं निगतां कृत्यं निगतां कृत्यं॥ अदूयक एकप॥

[illegible]

कात्रस्यतकात्राहवगिकितियत्र॥हृन्मनंरुतिवुक्कहृत्वा॥
 रूचमंरुतिरूचा॥सम्यक्सम्यक्मंरुतिसम्यक्॥श्रुजग
 तोद्वयनचाकि॥धनकिपुत्यथाहवगिमियांहाव॥श्रुक
 हृचकात्रक॥अनूरुति॥विमिहृरुति॥विहृति॥हृवने
 हृति॥अधनंशुद्धि॥यदिविहृत्रा॥रुतिमानूम॥यचनं
 पंकि॥वरुयाय॥संयुसात्रलं॥रिडाहापादीर्घश्र॥उ

२८६

रि॥मंविहृति॥त्वाथादिनंरुतिनकात्र॥गमनंरुति॥अह
 कृत्वा॥हृति॥रूचमंरुति॥धनकिपुत्यथानंशुद्धि॥वत्रप
 त्ययस्यकिपुत्यस्यैरूचनरुतिशीर्षागुल्यनरुतिकी
 पत्र॥संयचनंसंशीति॥दियतंरुतिकीति॥जागृतिद्राक
 था॥जागृत्वंजागृति॥करुतिकीर्षसंज्ञायां॥करुत्यर्थध
 ना॥किपुत्यथाहवगिसंज्ञायां॥श्रुहृकत्र॥प्रपूर्व॥य

कृतूतं गतिपु कृतिः॥ धृष्टका न लपा स लयाः॥ विपूर्वः॥ विष्णु
 न लविधृतिः॥ गतिपु कृतिः॥ धृष्टका न लपा स लयाः॥ विपूर्वः॥ विष्णु
 वरः॥ यचिः॥ यचतिः॥ यजिः॥ यजतिः॥ यिविः॥ यिवतिः॥ य
 विः॥ यविः॥ यमिः॥ यमतिः॥ यिदिः॥ यमिदः॥ यिना धाता हि
 दादयमि यामदुपत्यथारुवति॥ यचा॥ यका न प्रत्ययात्यश्च
 हर्वगु न्ना वतमि यामित्याप्॥ मृशुषः॥ मृशुषः॥ मृशुषः॥ मृशुषः॥

२२८

दा॥ उत्रयगु दानुवन्धन हिना पुत्यथावक वः॥ रुष्वथा हा
 नो॥ उत्रा॥ गुत्रा हसात्॥ गुत्रमना धाता हसात्ता दपत्यथारुवति
 ॥ उत्रयगु दानुवन्धन हिना पुत्यथावक वः॥ रुष्वथा हा
 नो॥ उत्रा॥ गुत्रा हसात्॥ गुत्रमना धाता हसात्ता दपत्यथारुवति
 ॥ उत्रयगु दानुवन्धन हिना पुत्यथावक वः॥ रुष्वथा हा
 नो॥ उत्रा॥ गुत्रा हसात्॥ गुत्रमना धाता हसात्ता दपत्यथारुवति
 ॥ उत्रयगु दानुवन्धन हिना पुत्यथावक वः॥ रुष्वथा हा
 नो॥ उत्रा॥ गुत्रा हसात्॥ गुत्रमना धाता हसात्ता दपत्यथारुवति
 ॥ उत्रयगु दानुवन्धन हिना पुत्यथावक वः॥ रुष्वथा हा
 नो॥ उत्रा॥ गुत्रा हसात्॥ गुत्रमना धाता हसात्ता दपत्यथारुवति

॥ उक्तावउति ॥ गुणी क्तासिउ तूदादि इधक् षक्लिगुधमृउ
 मृदवदवसय हां ॥ क्तासिउ ॥ ॐ टासदवरुमान ४ मृट ॥ व
 रित्वा ॥ विदित्वा ॥ वेदित्वा ॥ अलंखत्वा ४ प्रतिषाधक्ता ॥ अ
 लंउक्ता खलूउक्ता ॥ उदिग ४ क्तावेट ॥ उदिता धाता ४ क्ता
 वेट रुवति ॥ ॐ षू ॐ क्तायां ॥ ॐ क्ता ॥ उषित्वा ॥ उक्ता उषित्वा
 ॥ ६ क्ता ॥ दषित्वा ॥ समासेकपू ॥ समाससति पूर्वकात्तयपूष

२२८

त्यथारुवतिरुक्तरुक्कधनोययूअमान ॥ क्तात्कपू ॥ पित्वा
 रुक् ॥ संहत्येकत्राति ॥ यत्तम्यगच्छति ॥ लम्पुक्कलेगद ॥
 अनेष्टपूर्व ॐ त्यका ॥ मा ॐ त्यका नाद ४ ॥ क्तात्कपिष्ट
 रुक् ४ ॥ अक्तात्पत्रिलम्पुक्क ॥ तत्कालपिष्ट ४ ॥ नगैमीमीत्य
 रुसति ॥ मीलमीलन ॥ मूखव्यादायस्यपिति ॥ योन ४ पून्यनम्
 दिष्ट ॥ समानकहर्कषूपयूअमान ४ पूर्वकालीन ४ पून्य

[illegible]

१५५